हिमाचल की प्रगति एवं संस्कृति का दर्पण

गिरिराज

साप्ताहिक

ISSN 2454-9738

डाक पंजीकरण संख्या
एच.पी./42/एस.एम.एल. 2018-2020
साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

इस अंक में
कृषि एवं बागबानी-5, धर्म-संस्कृति -6-7, कहानी-8, महिला/बाल/स्वास्थ्य-9, पहाड़ी-10

वर्ष 43 अंक 30 शिमला, 28 अप्रैल, 2021 हर बुधवार को प्रकाशित मूल्य : एक प्रति 5.00 रुपये वार्षिक 250 रुपये आजीवन 2500 रुपये website:himachalpr.gov.in/giriraj.asp

प्रदेश में सभी वयस्कों को पहली मई से निःशुल्क टीका

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर की अध्यक्षता में गत दिनों शिमला में प्रदेश मंत्रिमण्डल की बैठक आयोजित की गई, जिसमें प्रदेश में कोविड-19 की स्थिति की समीक्षा की गई। बैठक में निर्णय लिया गया कि प्रदेश सरकार के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी टीकाकरण के लिए आगे आएंगे और जहां तक संभव हो, सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में कोविड का टीका लगाएंगे। राज्य सरकार 18 से 44 वर्ष की आयु वर्ग के लोगों को सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में निःशुल्क टीकाकरण की सुविधा प्रदान करेगी। मंत्रिमण्डल ने उन दैनिक/कंटींजेंट कार्यकर्ताओं की सेवाएं नियमित करने का निर्णय लिया जिन्होंने 31 मार्च, 2021 को अपने निरन्तर सेवाकाल के पांच वर्ष पूर्ण कर लिए हैं अथवा 30 सितम्बर, 2021 को पूरा करने जा रहे हैं। इन्हें विभिन्न विभागों में रिक्त पड़े पदों पर नियमित किया जाएगा।

प्रदेश मंत्रिमण्डल के निर्णय

- तीन वर्ष का अनुबंध व आठ साल का सेवाकाल पूर्ण करने वाले दैनिक भोगी होंगे नियमित
- मंडी धर्मपुर स्थित बरोटी में खुलेगा राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान
- विभिन्न विभागों में भरे जाएंगे 47 पद

बैठक में विभिन्न विभागों में कार्यरत उन अनुबंध कर्मचारियों के सेवाकाल को नियमित करने का निर्णय लिया गया, जिन्होंने 31 मार्च, 2021 को तीन वर्ष का सेवाकाल पूरा किया है अथवा जिनका सेवाकाल 30 सितम्बर, 2021 को पूरा होने जा रहा है।

मंत्रिमण्डल ने उन अंशकालिक कार्यकर्ताओं की सेवाओं को विभिन्न विभागों में दैनिकभोगी के रूप में परिवर्तित करने का भी निर्णय लिया, जिन्होंने 31 मार्च, 2021 को 8 वर्ष का निरन्तर सेवाकाल पूरा कर लिया है अथवा 30 सितम्बर, 2021 को पूरा करने जा रहे हैं।

मंत्रिमण्डल ने मण्डी जिला के बालीचौकी में राज्य सेरी उद्यमिता विकास नवाचार केन्द्र में तकनीकी और मिनिस्ट्रीयल स्टाफ के 19 पद भरने का निर्णय लिया, ताकि हाल ही में खोले गए इस केन्द्र का कार्य सुचारू रूप से चल सके। बैठक में ग्रामीण विकास विभाग में सीधी भर्ती के माध्यम से खण्ड विकास अधिकारी के दो पद भरने को स्वीकृति प्रदान की गई। मंत्रिमण्डल ने विभिन्न श्रेणी के 26 पद सृजित करने के साथ मण्डी जिले की धर्मपुर तहसील के अन्तर्गत बरोटी में राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान खोलने को संस्तुति प्रदान की गई। मुख्यमंत्री और मंत्रिमण्डल के अन्य सदस्यों ने बैठक के दौरान मुख्यमंत्री कोविड फंड के लिए अपने एक माह के वेतन का अंशदान किया। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने मुख्य सचिव अनिल खाची को चेक भेंट किए।

होम आइसोलेशन रोगियों को मिलेगी न्यूट्रीशन किट

प्रदेश सरकार ने राज्य में बढ़ते कोविड मामलों के दृष्टिगत कई अहम निर्णय लिए हैं। होम आइसोलेशन में रह रहे कोविड-19 रोगियों को बेहतर उपचार सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से खण्ड स्तर पर मोबाइल टीमें गठित करने का निर्णय लिया गया है। इसके अलावा गंभीर रूप से बीमार लोगों को बड़े अस्पतालों में स्थानान्तरित करने के लिए एक वाहन विशेष रूप से उपलब्ध करवाया जाएगा।

होम आइसोलेशन में रह रहे कोविड-19 रोगियों की सुविधा के लिए खंड स्तर पर गठित होंगी मोबाइल टीमें

प्रत्येक मेडिकल कॉलेज में कोविड-19 मामलों की निगरानी के लिए वरिष्ठ चिकित्सक की अगुवाई में एक समर्पित टीम तैनात की जाएगी।

बैठक में यह भी निर्णय लिया गया है कि कोविड-19 महामारी के दौरान अपनी सेवाएं दे रहे आउटसोर्स कर्मचारियों को प्रति शिफ्ट 200 रुपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाएगी। यह भी निर्णय लिया गया है कि होम आइसोलेशन में रह रहे लोगों को बेहतर उपचार की सुविधा प्रदान करने के साथ-साथ सरकार उन्हें न्यूट्रीशन किट भी प्रदान करेगी ताकि कोविड मरीजों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाई जा सके।

प्रदेश मंत्रिमंडल की बैठक में जहां अस्पतालों में दवाइयों, ऑक्सीजन व दूसरी जरूरी चीजों की उपलब्धता सुनिश्चित करवाने बारे चर्चा की गई। वहीं अपने घरों में एकांतवास में रह रहे मरीजों की सुविधा के लिए भी घरद्वार पर सुविधाएं मुहैया करवाने का निर्णय लिया गया है। सामाजिक दूरी के साथ-साथ तय नियमों का पालन करने की भी सरकार ने सभी प्रदेशवासियों से अपील की है।

दवाइयों व ऑक्सीजनयुक्त बिस्तरों की पर्याप्त उपलब्धता : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों शिमला में आयोजित एक उच्च स्तरीय बैठक में प्रदेश में कोविड-19 की वर्तमान स्थिति की समीक्षा की और विभिन्न प्रबन्धों का जायजा लिया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान में प्रदेश में पर्याप्त मात्रा में दवाइयां, ऑक्सीजनयुक्त बिस्तरों की क्षमता, मास्क, सेनेटाइजर इत्यादि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग को अस्पतालों में ऑक्सीजनयुक्त बिस्तरों की क्षमता बढ़ाने के निर्देश भी दिए।

जय राम ठाकुर ने कहा कि प्रदेश में अब तक आरटी-पीसीआर, रेपिड एंटीजन टेस्ट, ट्रू-नाट और सीवी नाट से 1360794 लोगों की जांच की जा चुकी है। प्रदेश में कोविड-19 की जांच की दर 194399 प्रति दस लाख है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में अब तक कोविड-19 वैक्सीन की 11,87,275 डोज प्रदान की जा चुकी हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि वह स्वयं प्रदेश के विभिन्न जिलों का दौरा कर अधिकारियों के साथ स्थिति की समीक्षा के अलावा पंचायती राज संस्थाओं, शहरी निकायों व विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों से संवाद कर जमीनी स्तर पर कोविड महामारी बचाव के लिए जन जागरूकता लाने के प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस बीमारी को नियंत्रित करने के लिए जन (शेष पृष्ठ 11 पर)

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर शिमला में कोविड-19 की समीक्षा को लेकर उच्च स्तरीय बैठक की अध्यक्षता करते हुए

एकांतवास मरीजों की सुविधा के लिए जन प्रतिनिधि करें सहयोग

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने शहरी स्थानीय निकायों के चयनित प्रतिनिधियों से सम्बन्धित क्षेत्रों में कोविड-19 के कारण होम आइसोलेशन में रखे गए मरीजों के परिवारों के साथ निरन्तर सम्पर्क में रहने का आग्रह किया है ताकि उन्हें किसी भी परेशानी का सामना न करना पड़े और उचित परामर्श के साथ-साथ उपचार की सुविधा भी मिल सके। वह गत दिनों शिमला से वर्चुअल माध्यम से शहरी स्थानीय निकायों के सदस्यों को प्रदेश में कोविड-19 की स्थिति को लेकर समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस महामारी के प्रसार को फैलने से रोकने और संकट में फंसे लोगों की सहायता करने में लोगों में जो उत्साह पिछले वर्ष देखा गया था वह इस बार कम देखने का मिल रहा है। उन्होंने शहरी निकायों के चयनित प्रतिनिधियों से संकट के समय में जरूरतमंदों की सहायता करने के लिए आगे आने को कहा। उन्होंने कहा कि यह सुनिश्चित (शेष पृष्ठ 11 पर)

कोरोना के खिलाफ सरकार ने अपनाई त्वरित और निर्णायक रणनीति

● रीना नेगी

देश में कोरोना वायरस महामारी की दूसरी लहर को रोकने के लिए प्रदेश सरकार ने त्वरित और निर्णायक रणनीति अपनाई है ताकि लोगों के जीवन की रक्षा के साथ आर्थिक विकास में भी कोई बाधा न आए। कोरोना को हराने के लिए प्रदेश में टीकाकरण मुहिम को तेज कर दिया गया है। अब प्रदेश में 18 से 44 वर्ष आयु वर्ग के सभी लोगों को सरकारी अस्पतालों में निःशुल्क कोविड टीका लगाया जाएगा। जिसके लिए पहली मई से टीकाकरण अभियान चलाया जा रहा है। बेलगाम होती कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए सभी लोगों से सार्वजनिक स्थलों पर सामाजिक दूरी का पालन करने के लिए यथासंभव भीड़-भाड़ से बचने के निर्देश दिए गए हैं। और लोगों से अपील की गई है कि इस संक्रमण से बचाव के लिए हमें मास्क का उपयोग करना होगा। इस नियम का कड़ाई से उपयोग ही इसके लिए प्रदेश सरकार के अधिकारी समय-समय पर वाहनों इत्यादि का निरीक्षण कर रहे हैं। क्योंकि कोरोना से बचना है तो सावधानी ही एक कारगर उपाय है। राज्य सरकार इस महामारी से निपटने के लिए गंभीर है। इसी कारण स्कूल शिक्षा बोर्ड व हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय की स्नातक स्तर की परीक्षाओं को स्थगित किया गया और एक मई तक सभी शिक्षण संस्थानों को बंद करने का निर्णय लिया गया है। प्रदेश में सभी सरकारी कार्यालयों में शनिवार को घर से ही कार्य करने का आदेश दिया गया है। केवल आवश्यक वस्तुओं और दवाइयों की दुकानों के अलावा बाजार बंद रहेंगे।

कोरोना का यह दूसरा दौर पहले से भी ज्यादा घातक सिद्ध हो रहा है। इसे हम तभी हरा (शेष पृष्ठ 11 पर)

कोविड सैंपल जांच बढ़ाने के निर्देश

होम क्वारंटीन में रखे गए कोविड रोगियों के उचित उपचार को सुनिश्चित करने के लिए एक समर्पित टीम स्थापित कर प्रभावी तंत्र विकसित किया जाना चाहिए ताकि लोगों को स्वेच्छा से कोविड टीकाकरण के लिए आगे आने के लिए प्रेरित करने के अलावा उनके स्वास्थ्य मापदंडों की निगरानी की जा सके। मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों हमीरपुर के बचत भवन में जिले में कोविड-19 और सूखे जैसी स्थिति की समीक्षा, के लिए आयोजित बैठक की अध्यक्षता करते हुए यह बात कही। उन्होंने इस अवसर पर जिले में मुख्यमंत्री की घोषणाओं के कार्यान्वयन में प्रगति की समीक्षा भी की। मुख्यमंत्री ने कहा कि विशेष रूप से छात्रावास के छात्रों, कर्मचारियों, सार्वजनिक परिवहन में लगे व्यक्तियों, बाजारों, कैटरर्स, रसोइयों आदि के कोविड परीक्षण में तेजी लाने के प्रयास किए जाने चाहिए। स्थानीय आशा कार्यकर्ताओं को होम आइसोलेशन में रखे गए मरीजों को दिन में दो बार नियमित रूप से सम्पर्क करना चाहिए और चिकित्सकों को भी नियमित (शेष पृष्ठ 11 पर)

सार्वजनिक वितरण प्रणाली से सुनिश्चित हुई खाद्य सुरक्षा

हरित क्रांति से पूर्व, भारत खाद्यान्नों के अभाव से गुजर रहा था। लोगों को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने के लिए सार्वजनिक वितरण प्रणाली विकसित की गई ताकि वांछित वर्ग को सस्ती दरों पर खाद्य सामग्री उपलब्ध करवाई जा सके। वितरण की यह प्रणाली वर्ष 1951 से चली आ रही है। देश की खाद्य आर्थिकी के प्रबन्धन में सार्वजनिक वितरण प्रणाली सरकार की नीति का महत्त्वपूर्ण भाग है।

हिमाचल प्रदेश सार्वजनिक वितरण प्रणाली लागू करके समाज के गरीब व कमजोर वर्गों को खाद्य सुरक्षा उपलब्ध करवाने वाले अग्रणी राज्यों में है। वर्ष 1997 में इसका नाम बदलकर लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली रखा गया। राज्य के और अधिक व्यक्तियों को लाभान्वित करने के लिए इस योजना को संशोधित भी किया गया। योजना के तहत सभी राशन कार्ड धारकों को सरकार के वित्तीय संसाधनों से उपदान पर चीनी, दालें, तेल व नमक प्रदान किया जा रहा है। गत तीन वर्षों में, राज्य सरकार द्वारा योजना के तहत 574.81 करोड़ रुपये व्यय किए गए।

वर्ष 2013 में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम लागू किया गया जो खाद्य आन्दोलन की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल थी। यह अधिनियम हिमाचल में भी लागू किया गया है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अंतर्गत प्रदेश सरकार अंत्योदय अन्न योजना के परिवारों को 35 किलोग्राम खाद्यान्न, जिसमें 20 कि.ग्रा. गेहूं का आटा और 15 कि.ग्रा. चावल तथा प्राथमिकता प्राप्त परिवारों को 3 किलोग्राम गेहूं का आटा और 2 किलोग्राम चावल प्रदान कर रही है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अतिरिक्त गरीबी रेखा से ऊपर के लाभार्थियों को प्रति परिवार 11-13 किलोग्राम गेहूं का आटा और 5-7 किलोग्राम चावल प्रदान किए जा रहे हैं। राज्य के लक्षित लोगों को गुणवत्तायुक्त खाद्यान्न प्रदान करने से उनकी पोषण स्थिति में समग्र सुधार हुआ है।

सरकार सार्वजनिक वितरण प्रणाली में दक्षता और पारदर्शिता लाने के लिए 'ऐण्ड टू ऐण्ड कम्प्यूटराइजेशन' क्रियान्वित कर रही है। इस योजना के अंतर्गत राशनकार्डों का डिजिटाइजेशन किया गया है और अब तक 19.08 लाख राशनकार्डों को डिजिटाइज किया जा चुका है।

● ममता नेगी

प्रदेश सरकार कुपोषण से प्रभावी तरीके से निपटने और खाद्य पदार्थों के पोषक तत्त्वों को बढ़ाने के उद्देश्य से सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत उपभोक्ताओं को आयरन, फोलिक एसिड और विटामिन बी-12 से युक्त गेहूं का आटा, विटामिन-ए व डी से युक्त गुणवत्तायुक्त तेल, आयोडीन और आयरन से युक्त नमक प्रदान कर रही है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली में पारदर्शिता और दक्षता सुनिश्चित करने के लिए तकनीक के उपयोग के साथ डिजिटाइजेशन और स्वचालन पर विशेष बल दिया जा रहा है। विभाग सार्वजनिक वितरण प्रणाली में दक्षता और पारदर्शिता में सुधार के लिए 'ऐण्ड टू ऐण्ड कम्प्यूटराइजेशन' क्रियान्वित कर रहा है। इस योजना के अंतर्गत राशनकार्डों का डिजिटाइजेशन किया गया है और अब तक 19.08 लाख राशनकार्डों को डिजिटाइज्ड किया जा चुका है। प्रदेश की उचित मूल्यों की दुकानों में स्वचालन के लिए एंड्राइड आधारित पीओएस डिवाइस भी लगाए गए हैं।

उचित निगरानी और सही वितरण प्रक्रिया सुनिश्चित करने के लिए विभाग द्वारा आधार सीडिंग अभियान भी शुरू किया गया है। जिसके अन्तर्गत अब तक लगभग 99 प्रतिशत राशनकार्डों को आधार नंबर से जोड़ा जा चुका है।

तकनीकी प्रगति की दिशा में एक कदम आगे बढ़ाते हुए राज्य सरकार के हिमाचल प्रदेश राज्य नागरिक आपूर्ति निगम द्वारा विकसित किए गए खाद्यान्नों के ऑनलाइन आवंटन और आपूर्ति श्रृंखला स्वचालन मोडयूल को क्रियान्वित किया जा रहा है। लोगों को सुविधापूर्वक ई-कार्ड प्रदान करने के लिए एंड्रायड आधारित ई-पीडीएस एचपी मोबाइल ऐप को लांच किया गया है।

असंगठित क्षेत्र के मजदूरों का संबल बना श्रमिक कल्याण बोर्ड

हिमाचल प्रदेश में भवन एवं सन्निर्माण कामगार कल्याण बोर्ड का गठन वर्ष 2009 में किया गया था। बोर्ड की स्थापना असंगठित क्षेत्र के मजदूरों के कल्याण के लिए की गई है। इसके अंतर्गत मजदूरों को 16 प्रकार के लाभ प्रदान किए जाते हैं, जिनमें प्राकृतिक मौत पर 2.20 लाख की सहायता राशि, दुर्घटना से मौत पर 4.20 लाख का बीमा शामिल है।

कुल्लू जिला के आनी उपमण्डल के नित्थर की जमना देवी और चेवड़ी गांव की प्रोमिला शर्मा दोनों की माली हालत अच्छी नहीं थी। बामुश्किल दो वक्त का खाना जुटाने की जुगत में सारा दिन मेहनत करनी पड़ती थी। इनके घरों से कोई भी सरकारी नौकरी में नहीं है और न ही इतनी जमीन है जहां परिवारों का सहज गुजर-बसर हो सके।

जमना देवी और प्रोमिला शर्मा को गांव में एक शिविर के दौरान श्रमिक कल्याण बोर्ड की योजनाओं को जानने का मौका मिला। उनके जीवन में एक आशा की किरण जगी। दोनों ने श्रमिक कल्याण बोर्ड में अपने आप को पंजीकृत करवाने की ठान ली। इसके लिए उन्होंने मनरेगा में लगातार साल भर काम किया और अपने आप को बोर्ड के साथ जोड़ने में कामयाबी हासिल की। फिर क्या था, बोर्ड की अनेक प्रकार की वित्तीय सहायता ने उनके दरवाजे पर दस्तक देनी शुरू कर दी।

श्रमिक कल्याण बोर्ड के साथ पंजीकरण होने पर सबसे पहले बोर्ड के माध्यम से उनके बच्चों को पढ़ाई के लिए छात्रवृत्ति की स्वीकृति प्राप्त हुई। प्रोमिला की दो बेटियां हैं। सारिका 8वीं में और नूतन 9वीं कक्षा में पढ़ रही हैं। सारिका को 7000 रुपये जबकि नूतन को 10 हजार रुपये सालाना छात्रवृत्ति मिलनी शुरू हो चुकी है। प्रोमिला को अब दूसरों की तरह अपनी बेटियों को अच्छी शिक्षा प्रदान करने का सपना साकार होता नजर आ रहा है।

जमना के दो बेटे हैं। अंकुश 10वीं में तथा प्रशांत 11वीं कक्षा में पढ़ रहा है। प्रत्येक को 6 हजार रुपये की छात्रवृत्ति बोर्ड द्वारा प्रदान की जा रही है। जमना को भी अब बच्चों की पढ़ाई की अधिक चिंता से निजात है।

बोर्ड द्वारा दोनों महिलाओं को हर साल इंडक्शन, सोलर लैम्प, साइकिल, वाटर फिल्टर, डिनर सैट इत्यादि में से एक-एक वस्तु प्रदान की जा रही है। दोनों महिलाओं ने मनरेगा में भी काम करना जारी रखा है जिससे घर की आर्थिकी को संबल मिल रहा है। बच्चों के लिए छात्रवृत्ति भी जारी रहेगी। इन महिलाओं का कहना है कि गांवों में बहुत सी उनकी तरह अन्य महिलाएं भी हैं जो आर्थिक तौर पर काफी कमजोर हैं। वे ऐसी महिलाओं को संदेश भी देना चाहती हैं कि मनरेगा में साल में 90 दिन पूरे करके अपना पंजीकरण श्रमिक कल्याण बोर्ड के पास करवाएं। ऐसा करने से उनके जीवन में आशा की एक नई किरण पैदा होगी और उनका भविष्य भी सुरक्षित हो जाएगा। वे समझ चुकी हैं कि 60 साल की आयु के उपरांत उन्हें बोर्ड पेंशन भी प्रदान करेगा। इसकी औपचारिकताएं भी इन महिलाओं ने पूरी करवा ली हैं।

✍ प्रेम ठाकुर

हिमाचल प्रदेश में भवन एवं सन्निर्माण कामगार कल्याण बोर्ड का गठन वर्ष 2009 में किया गया था। बोर्ड की स्थापना असंगठित क्षेत्र के मजदूरों के कल्याण के लिए की गई है। भवन एवं अन्य सन्निर्माण कामगार अधिनियम के अनुसार भवन या अन्य सन्निर्माण कार्य से तात्पर्य भवनों, मार्गों, सड़कों, रेलवे, ट्रामवे, हवाई अड्डा, सिंचाई, जल निकास, तटबंध, नौ परिवहन, बाढ़ नियंत्रण कार्य, वर्षा जल निकास कार्य, विद्युत के उत्पादन, पारेषण एवं वितरण, जल संबंधी कार्य, तेल तथा गैस स्थापना संबंधित कार्य, विद्युत लाइनों, बेतार रेडियो, टेलीफोन, तार तथा ओवरसीज संचार माध्यमों, बांधों, नहरों, जलाशयों, सुरंगों, पुल-पुलियों, पाइप लाइनों, टावर, शीतलन टावर, पारेषण टावरों को निर्माण कार्यों में सम्मिलित किया गया है।

असंगठित क्षेत्र के मजदूरों के लिए 16 प्रकार के लाभ प्रदान किए जाते हैं। प्राकृतिक मौत पर 2.20 लाख की सहायता राशि, दुर्घटना से मौत पर 4.20 लाख का बीमा। मेडिकल लाभों में ओपीडी में 50 हजार तक का मुफ्त इलाज, इण्डोर में एक लाख तक का इलाज जबकि गंभीर बीमारी की स्थिति में 5 लाख तक के मुफ्त इलाज की सुविधा है। पहली से पीएचडी तक छात्रवृत्ति 5000 से 35000 तक प्रदान की जाती है। दो बच्चों की शादी के लिए 51 हजार प्रत्येक बच्चे को वित्तीय सहायता दी जा रही है। मातृत्व व पितृत्व अवकाश के साथ पुरुष को 6 हजार व महिला को 25000 प्लस 6 माह की दिहाड़ी का भी है प्रावधान।

आर्थिक मजबूती का आधार बनी स्ट्रॉबेरी की खेती

स्ट्रॉबेरी एक गुणकारी फल है जिसके स्वास्थ्यवर्धक गुणों के कारण लोगों में स्ट्रॉबेरी की मांग लगातार बढ़ रही है। स्ट्रॉबेरी खाने से हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और यह हमारे शरीर में कोलेस्ट्रल और रक्तचाप को भी कम करती है। स्ट्रॉबेरी का सेवन हमें कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों से बचाता है और हमारी त्वचा को भी बेहतर बनाता है। यही कारण है कि सिरमौर जिला में स्ट्रॉबेरी उत्पादन के क्षेत्र में लगातार वृद्धि हो रही है। सिरमौर में स्ट्रॉबेरी के लिए उपयुक्त जलवायु व मिट्टी उपलब्ध होने के कारण जिला के लोग सरकार द्वारा प्रदान की जा रही उन्नत तकनीक व आर्थिक सहायता के कारण स्ट्रॉबेरी उत्पादन से अच्छी आय प्राप्त कर अपनी आर्थिकी को मजबूत कर रहे हैं।

ऐसे ही किसान विकास खण्ड पांवटा साहिब के गांव पुरुवाला निवासी भीम सिंह हैं जो लगभग पिछले 30 वर्षों से अपने खेतों में स्ट्रॉबेरी की खेती कर रहे थे। लेकिन अब उद्यान विभाग द्वारा प्रदान की जा रही आर्थिक सहायता व उन्नत तकनीक से भीम सिंह अपनी 20 बीघा भूमि में स्ट्रॉबेरी का बेहतरीन उत्पादन कर रहे हैं और अच्छी आय अर्जित कर रहे हैं।

✍ सिम्पल सकलानी

भीम सिंह ने बताया कि उद्यान विभाग द्वारा उन्हें स्ट्रॉबेरी उत्पादन के लिये एकीकृत बागबानी विकास मिशन के तहत 3 लाख 50 हजार रुपये का अनुदान दिया गया तथा अब वह अपनी 20 बीघा भूमि से प्रतिदिन 2 क्विंटल अच्छी किस्म की स्ट्रॉबेरी का उत्पादन ले रहे हैं जिसका मूल्य उन्हें 140 रुपये प्रति किलोग्राम मिल रहा है। भीम सिंह अपने परिवार के अतिरिक्त 10 अन्य लोगों को रोजगार प्रदान कर रहे हैं। इस वर्ष उन्होंने 1 लाख 40 हजार स्ट्रॉबेरी के पौधे रोपित किये हैं तथा उन्हें एक बीघा से लगभग 3 टन स्ट्रॉबेरी मिल जाती है।

उपनिदेशक उद्यान विभाग ने बताया कि सरकार द्वारा एकीकृत बागबानी विकास मिशन के तहत स्ट्रॉबेरी की खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को 62500 रुपये प्रति हेक्टेयर की दर से अनुदान प्रदान किया जा रहा है। अभी तक 50 हेक्टेयर भूमि पर 300 किसानों द्वारा स्ट्रॉबेरी की खेती की जा रही है जिस पर 50 लाख रुपये का अनुदान दिया जा चूका है।

बागबानों की उम्मीदों को मिला सुरक्षा आवरण

ओला अवरोधक जाली यानि एंटी हेल नेट बागबानों के लिए एक उम्मीद का नाम है। सेब की फसल को ओलावृष्टि की मार से बचाने के लिए प्रदेश के बागबान इस नेट को सेब के बगीचे पर बिछाते हैं। बागबानों के सामने जो बड़ी चुनौती होती है वो ये कि ये उनकी जेब पर भारी पड़ती है... ..लेकिन वर्तमान सरकार ने संवेदनशीलता दिखाई है और इस पर बागबानों को 80 फीसदी उपदान दे रही है। मतलब कुल लागत का 80 फीसदी पैसा सरकार बागबानों को उपदान के रूप में देती है। एंटी हेल नेट स्टेट प्लान स्कीम के तहत लाभ हर पात्र बागबान को मिले, इसे भी सरकार सुनिश्चित कर रही है। यही कारण है कि सेब बहुल क्षेत्रों में उपमंडल स्तर पर बागबानों को इस योजना का लाभ मिल रहा है।

गत तीन सालों में आनी उपमंडल के बागबानों को भी इसका लाभ मिला है। वर्ष 2018-19, 2019-20 और 2020-21 में बागबानी विभाग ने उपमंडल में एंटी हेल नेट के लिए बागबानों को 12.22 करोड़ का उपदान किया है। वर्ष 2018-19 में बागबानी विभाग आनी ने 1.75 करोड़ रुपये 207 बागबानों को उपदान के तौर पर वितरित किए। इसी तरह वर्ष 2019-20 में 5.52 करोड़ रुपये 672 बागबानों को और वर्ष 2020-21 में 4.95 करोड़ रुपये 597 पात्र बागबानों को बतौर उपदान सरकार ने सहयोग किया। इस तरह तीन सालों में कुल 1476 बागबानों को एंटी हेल नेट के लिए सरकार द्वारा 12.22 करोड़ रुपये का उपदान प्रदान किया गया है। बागबानी विभाग आनी के विषय विशेषज्ञ उद्यान डॉ. के.एल. कटोच का कहना है कि प्रदेश सरकार के दिशा निर्देशों के तहत समय-समय पर बागबानों को उपदान राशि जारी की जा रही है। आगामी समय में भी विभाग इसके लिए प्रयासरत है ताकि पात्र और जरूरतमंद बागबानों को इसका लाभ मिले।

गत तीन सालों में आनी उपमंडल के बागबानों को भी इसका लाभ मिला है। इस अवधि के दौरान कुल 1476 बागबानों को एंटी हेल नेट के लिए सरकार द्वारा 12.22 करोड़ रुपये का उपदान प्रदान किया गया है।

आनी उपमंडल के 1476 बागबानों को उपदान मिलने के बाद ओलावृष्टि से फसल बचने की उम्मीद बढ़ी है। आनी वैली ग्रोवर एसोसिएशन के सदस्यों एवं च्वाई के बागबान महेंद्र वर्मा और रणजीत अमरबाग के राकेश ठाकुर, जाबन के वीरेंद्र परमार को इस योजना के तहत उपदान मिला है। उनका कहना है कि ये योजना बागबानों की फस0ल को बचाने के लिए कारगर योजना है। उन्होंने इस योजना के तहत अनुदान जारी करने के लिए प्रदेश सरकार का आभार जताया है और बागबानों से इस योजना का लाभ उठाने की अपील की है।

प्रदेश में बागबानों को ओलावृष्टि के कहर से बचाया जा सके, इसके लिए सरकार ने एंटी हेल नेट स्टेट प्लान स्कीम योजना शुरु की है। इसके तहत बागबानों को जाली बिछाने के लिए प्रदेश सरकार की ओर से 80 फीसदी उपदान दिया जा रहा है। वर्तमान में सरकार ने इस मामले पर दो कदम आगे बढ़ते हुए जाली बिछाने के लिए प्रयुक्त होने वाले बांस के डंडों और स्टील के स्ट्रक्चर पर भी 50 फीसदी उपदान देने का फैसला किया है।

प्रदेश के बागबान नजदीकी बागबानी प्रसार केंद्र में संपर्क कर सकते हैं। बगीचे पर जाली बिछाने के बाद भूमि रिकॉर्ड, स्वयं सत्यापित बांड, आधार कार्ड, बैंक अकाउंट नम्बर, फोटो आदि औपचारिकताओं के साथ बागबानी विभाग को आवेदन किया जा सकता है। उपमंडल में बागबानी विभाग के मुख्य कार्यालय में भी सीधे तौर पर बागबान योजना का लाभ लेने की जानकारी ले सकते हैं।

आज सेब का करीब 4 हजार करोड़ रुपये का कारोबार प्रदेश में हर साल हो रहा है। हिमाचली सेब को विश्वस्तर पर पहचान मिली है तो इसके पीछे प्रदेश के बागबानों की अथक मेहनत और सरकार का सहयोग है। इस मेहनत और सरकार के सहयोग की बानगी हमें एंटी हेल नेट के रूप में देखने को मिल रही है।

✍ तरजीव कुमार

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर जिला बिलासपुर के बचत भवन में कोविड-19 और सूखे जैसी स्थिति से निपटने के लिए आयोजित समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए

कोविड के खिलाफ लड़ाई में अधिक प्रतिबद्धता और सजगता की आवश्यकता : मुख्यमंत्री

चिकित्सकों, पैरामेडिकल स्टाफ और अन्य स्वास्थ्य कर्मियों को कोविड स्वास्थ्य संस्थानों और होम आइसोलेशन में रह रहे कोविड-19 मरीजों के बेहतर उपचार के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन कर और संवेदनशीलता के साथ कार्य करना होगा। यह बात मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों जिला बिलासपुर के बचत भवन में कोविड-19 और सूखे जैसी स्थिति की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए कही। मुख्यमंत्री ने कहा कि अधिकतर चिकित्सक और अन्य पैरामेडिकल स्टाफ कोविड-19 रोगियों का इलाज प्रतिबद्धता और समर्पण के साथ कर रहे है लेकिन फिर भी बेहतर परिणाम सुनिश्चित करने के लिए और अधिक प्रतिबद्धता के साथ कार्य करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि होम आइसोलेशन प्रणाली को मजबूत करना समय की मांग है क्योंकि कोविड-19 के सक्रिय मामलों में से लगभग 95 प्रतिशत होम आइसोलेशन में हैं। उन्होंने कहा कि होम आइसोलेशन के मरीजों से सम्बन्धित आंकड़े एकत्र किए जाने चाहिए और उन्हें आवश्यक दवाओं के साथ पल्स ऑक्सीमीटर, हैंड सैनिटाइजर उपलब्ध करवाए जाने चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय प्रधानों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए ताकि होम आइसोलेशन के कोविड-19 मरीजों के परिजनों के साथ समन्वय स्थापित किया जा सके। उन्होंने कहा कि लोगों को प्रेरित करने के अलावा होम आइसोलेशन में रह रहे मरीजों के स्वास्थ्य मापदण्डों की नियमित निगरानी के लिए प्रभावी प्रणाली विकसित की जानी चाहिए।

श्री जय राम ठाकुर ने व्यापार मण्डल के सदस्यों से राज्य सरकार को इस महामारी से लड़ने के लिए अपना पूर्ण सहयोग देने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन को कोविड-19 मामलों की अधिकता वाले राज्यों से धार्मिक समारोहों से घर वापस आने वाले स्थानीय लोगों के समूहों पर कड़ी निगरानी रखनी चाहिए। पंचायती राज संस्थाओं के चुने हुए प्रतिनिधि ऐसे राज्यों से वापस आने वाले लोगों की पहचान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। उन्होंने कहा कि इस संक्रमण के प्रसार की गति बहुत तेज है और यह और भी अधिक घातक है। आशा कार्यकर्ताओं को अन्य गम्भीर बीमारियों से ग्रसित कोविड-19 मरीजों का रिकॉर्ड तैयार करना चाहिए ताकि कोविड-19 मरीजों का बेहतर उपचार किया जा सके।

मुख्यमंत्री ने कहा कि होम आइसोलेशन प्रणाली को मजबूत करने के लिए पंचायती राज संस्थाओं और शहरी स्थानीय निकायों के निर्वाचित प्रतिनिधियों, स्वयं सहायता समूहों, महिला मण्डलों, युवक मण्डलों इत्यादि की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए एक विशेष अभियान शुरू किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रदेश द्वारा कोविड-19 के प्रबन्धन के प्रभावी प्रयासों के कारण हिमाचल प्रदेश की अन्य राज्यों की तुलना में बेहतर स्थिति है परन्तु फिर भी इस महामारी पर अंकुश लगाने के लिए और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है।

मुख्यमंत्री ने बिलासपुर में कोविड और सूखे की स्थिति की समीक्षा की

जिला बिलासपुर में सूखे जैसी स्थिति की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए मुख्यमंत्री ने योजनाबद्ध तरीके से जलापूर्ति की आवश्यकता को महसूस किया। उन्होंने कहा कि उन क्षेत्रों में हैंडपम्प लगाए जा सकते हैं जहां पानी के भारी संकट का सामना किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जलापूर्ति योजनाओं के विस्तार के अतिरिक्त जल योजनाओं को जोड़ने के लिए भी कदम उठाए जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि जल शक्ति विभाग के अधिकारियों को पानी की आपूर्ति का उचित वितरण सुनिश्चित करना चाहिए और पानी के रिसाव की भी जाँच करनी चाहिए।

विधायक सुभाष ठाकुर और जीत राम कटवाल ने इस अवसर पर जिले में कोरोना महामारी को फैलने से रोकने के लिए अपने बहुमूल्य सुझाव दिए। उन्होंने कोविड-19 के अधिक मामलों वाले राज्यों से आने वाले लोगों पर निगरानी रखने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि पानी की बेहतर आपूर्ति के लिए जल शक्ति विभाग और हिमाचल प्रदेश राज्य विद्युत बोर्ड के बीच उचित समन्वय सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

नालागढ़ में मेकशिफ्ट अस्पताल किसी भी स्थिति से निपटने को तैयार : जय राम ठाकुर

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों सोलन जिले के बद्दी में बद्दी-बरोटीवाला-नालागढ़ इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के साथ एक बैठक की अध्यक्षता करते हुए उद्योगपतियों से कोविड-19 के विरुद्ध लड़ाई में राज्य सरकार के प्रयासों को पूरा सहयोग प्रदान करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि इसके लिए राज्य सरकार के अधिकारियों और उद्योगों के प्रतिनिधियों का एक कार्यकारी समूह भी गठित किया जा सकता है। श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि राज्य सरकार 7 व 8 नवंबर, 2019 को धर्मशाला में आयोजित ग्लोबल इन्वेस्टर्स मीट के दौरान हुए समझौता ज्ञापनों के लिए दूसरी ग्राउंड ब्रेकिंग समारोह आयोजित करने की योजना बना रही है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की उद्यमियों के अनुकूल नीतियों के कारण व्यापार में सुगमता रैंकिंग में राज्य को सातवां स्थान मिला है जो पूर्व के 16वें रैंक से एक बड़ी छलांग है। बद्दी- बरोटीवाला-नालागढ़ क्षेत्र के व्यापक विकास के लिए विस्तृत मास्टर प्लान और अधोसंरचना विकास अध्ययन तैयार करने और क्षेत्र में नई टाउनशिप विकसित करने की संभावना तलाशने के प्रयास किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि कोविड मामलों में वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए औद्योगिक लॉकडाउन समाधान नहीं है क्योंकि इससे राज्य की अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में यह उद्योगपतियों की भी जिम्मेदारी है कि उनके श्रमिक राज्य सरकार के दिशा-निर्देशों का सख्ती से पालन करें। नालागढ़ में मेकशिफ्ट अस्पताल किसी भी स्थिति से निपटने के लिए तैयार है जिसे इस औद्योगिक क्षेत्र को बेहतर कोविड देखभाल सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से बनाया गया है। उन्होंने कहा कि इस अस्पताल में लगभग 66 बिस्तरों की क्षमता है। इस महामारी से प्रभावी ढंग से लड़ने के लिए राज्य सरकार और उद्योगपतियों के बीच उचित तालमेल स्थापित करना होगा।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि उद्योगों को अपने कार्यबल और संक्रमित व्यक्तियों और उनके संपर्क में आए लोगों को आइसोलेशन में रखने की प्रक्रिया पर कड़ी नजर रखनी चाहिए। सख्त कार्य प्रोटोकॉल को अपनाया जाना चाहिए और बड़े उद्योगों को व्यक्तिगत आइसोलेशन केंद्र जबकि छोटी इकाइयों को कॉमन आइसोलेशन केंद्र तैयार करने चाहिए।

उन्होंने कहा कि कोरोना की पहली लहर के दौरान पिछले साल बीबीएन क्षेत्र के उद्योगपतियों ने प्रमुख भूमिका निभाई। चाहे जीवन रक्षक दवाएं तैयार करना या हैंड सैनिटाइजर और मास्क तैयार करना हो अथवा सीएम कोविड फंड और पीएम केअर्स में उदारतापूर्वक अंशदान हो, उद्योगपतियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। कोविड-19 मामलों में तेज उछाल के कारण यह समय की आवश्यकता है कि उद्योगपति इस चुनौती का सामना करने के लिए राज्य सरकार को पूरा समर्थन प्रदान करें।

इस अवसर पर मेघ राज गर्ग ने स्टील इंडस्ट्रीज एसोसिएशन की ओर से सीएम कोविड फंड के लिए 11 लाख रुपये देने की घोषणा की।

बद्दी-बरोटीवाला-नालागढ़ इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय खुराना ने कोविड मामलों में तेज वृद्धि के मुद्दों पर सक्रिय रूप से विभिन्न पहलों और उद्योगपतियों तक पहुंचने के लिए मुख्यमंत्री का धन्यवाद किया।

उन्होंने पिंजौर-नालागढ़ फोर लेन राष्ट्रीय उच्च मार्ग के लंबे समय से लंबित मुद्दे को हल करने के लिए 15 करोड़ रुपये अतिरिक्त लागत वहन करने और चंडीगढ़-बद्दी रेल लिंक के लिए भूमि अधिग्रहण के काम में तेजी लाने के लिए भी मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया। उन्होंने महामारी पर नियंत्रण के लिए उद्योग जगत द्वारा की गई कुछ पहलों की विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने मुख्यमंत्री से पर्याप्त कार्यबल के साथ बद्दी में एक आपदा प्रबंधन सेल बनाने का भी आग्रह किया।

एसोसिएशन के महासचिव वाई.एस. गुलेरिया ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

जारी रहेगी मुख्यमंत्री शहरी आजीविका गारंटी योजना

कोरोना महामारी के दृष्टिगत प्रदेश सरकार ने सभी शहरी क्षेत्रों में मुख्यमंत्री शहरी आजीविका गारंटी योजना को वित्तीय वर्ष 2021-22 में भी जारी रखने का निर्णय लिया है। शहरी विकास विभाग के एक प्रवक्ता ने गत दिनों शिमला में बताया कि इस योजना के अन्तर्गत शहरी क्षेत्रों में आजीविका की सुरक्षा के लिए प्रत्येक इच्छुक परिवार को वर्ष में 120 दिन का रोजगार देने का प्रावधान है। योजना के अन्तर्गत रोजगार प्राप्त करने के लिए किसी भी शहरी क्षेत्र में रहने वाले परिवार के वयस्क सदस्य को संबंधित शहरी निकाय में स्वयं को पंजीकृत करवाना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि इस योजना के अन्तर्गत कार्य करने के लिए ऊपरी आयु सीमा 65 वर्ष रखी गई है। पात्र लाभार्थियों को बेहतर आजीविका मुहैया करवाने के लिए उनका कौशल प्रशिक्षण भी करवाया जाएगा तथा प्रशिक्षित लाभार्थियों को दीनदयाल अन्तोदय योजना-राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन के अन्तर्गत बैंकों से सस्ती दर पर ऋण भी उपलब्ध करवाया जाएगा। जो भी शहरी निकायों में रह रहे इच्छुक व्यक्ति इस योजना का लाभ उठाना चाहते हैं, वे संबंधित शहरी निकाय से आवश्यक प्रपत्र प्राप्त करके, स्वयं को संबंधित शहरी निकाय में पंजीकृत करवा सकते हैं। पंजीकरण के बाद संबंधित शहरी निकाय द्वारा पंजीकृत व्यक्ति का निःशुल्क जॉब कार्ड बनाया जाएगा। प्रवक्ता ने कहा कि योजना के अन्तर्गत पात्र लाभार्थी को 15 दिन के भीतर रोजगार उपलब्ध करवाया जाएगा। यदि किसी भी पात्र लाभार्थी को उक्त अवधि के भीतर रोजगार नही दिया जाता है तो वह उपरोक्त योजना के अन्तर्गत 100 रुपये प्रतिदिन की दर से बेरोजगारी भत्ता प्राप्त करने का भी हकदार होगा। इस योजना के अन्तर्गत पात्र लाभार्थी को सरकार द्वारा अधिसूचित न्यूनतम मजदूरी अथवा 300 रुपये प्रतिदिन, जो भी अधिक हो, दिया जाएगा। मजदूरी का भुगतान 15 दिन का रोजगार समाप्त करने के बाद सात दिन की अवधि के भीतर सीधा लाभार्थी के बैंक खाते में किया जाएगा।

योजना के तहत प्रत्येक पात्र परिवार को 120 दिन का रोजगार

पत्रकार भी कोरोना योद्धा : राज्यपाल

नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट, हिमाचल चैप्टर के एक प्रतिनिधिमंडल ने प्रदेश अध्यक्ष रणेश राणा के नेतृत्व में गत दिनों शिमला में राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय से भेंट की। उन्होंने राज्यपाल के साथ विशेष रूप से कोविड के दौरान पत्रकारों के समक्ष आ रहीं विभिन्न समस्याओं और चुनौतियों पर चर्चा की और संघ द्वारा पत्रकारों के कल्याण के लिए की जा रही पहल से अवगत करवाया।

राज्यपाल ने कहा कि कोरोना महामारी के इस दौर में पत्रकारों ने भी कोरोना योद्धाओं के रूप में विभिन्न जागरूकता अभियानों में सक्रिय रूप से भाग लिया है। उन्होंने पत्रकारों से आग्रह किया है कि वे मास्क पहनने, उचित दूरी और स्वच्छता से संबंधित सन्देश जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से फैलाएं। उन्होंने कहा कि विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक जागरूकता पैदा की जानी चाहिए। प्रतिनिधिमंडल ने राज्यपाल को एक मांग पत्र भी प्रस्तुत किया और उनसे सरकार द्वारा पत्रकारों को सुविधाएं प्रदान करने में हस्तक्षेप करने का आग्रह किया।

टीबी पर्यवेक्षकों को मिले 35 नए दोपहिया वाहन

राज्य में क्षय रोग (टीबी) कार्यक्रम के और बेहतर कार्यान्वयन और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं की सेवाओं को अधिक प्रभावी बनाने के लिए टीबी पर्यवेक्षकों को 35 नए दोपहिया वाहन प्रदान किए गए हैं। इन नए वाहनों को राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन हिमाचल प्रदेश के मिशन निदेशक डॉ. निपुण जिंदल ने गत दिनों हरी झंडी दिखा कर रवाना किया।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम के तहत 89 दोपहिया वाहन पहले ही दिए जा चुके हैं तथा अब 35 नए वाहन खरीदे गए हैं। इनमें महिला पर्यवेक्षकों को पांच स्कूटी जबकि पुरुष पर्यवेक्षकों को 30 मोटरसाइकिल उपलब्ध करवाए गए हैं। इन वाहनों से पर्यवेक्षकों को घर-द्वार तक सेवाएं देने और रोगियों की जांच व उपचार के लिए प्रयोगशाला से संपर्क करने में आसानी होगी। डा. निपुण जिंदल ने कहा कि हिमाचल प्रदेश टीबी नियंत्रण कार्यक्रम के कार्यान्वयन में पूरे राष्ट्र में अग्रणी रहा है। इस कार्यक्रम को और अधिक सबलता प्रदान करने व इस अग्रणिता को बनाए रखने के विभागीय प्रयास निरंतर जारी हैं। टीबी नियंत्रण के लिए निवारक एवं उपचारात्मक सुविधाएं प्रदेशवासियों को सुगमता से उपलब्ध करवाई जा रही हैं। इसके साथ ही जांच उपचार व स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं की पहुंच टीबी रोगियों तक त्वरित एवं सुगमता से पहुंचाने के लिए टीबी पर्यवेक्षकों को दोपहिया वाहन प्रदान कर कार्यक्रम को सुदृढ़ किया है।

ईएमआरएस परीक्षा स्थगित, एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय भी रहेंगे बंद

कोविड-19 की वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए और सभी शैक्षणिक संस्थानों के बंद होने के कारण प्रदेश सरकार ने 2 मई को निर्धारित संयुक्त एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय परीक्षा (ईएमआरएस) 2021 को स्थगित करने का निर्णय लिया है।

प्रदेश सरकार के एक प्रवक्ता ने गत दिनों शिमला में जानकारी दी कि प्रदेश सरकार ने एक मई तक सभी एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों और छात्रावासों को भी बंद रखने का निर्णय लिया है।

गिरिराज
हिमाचल की प्रगति और संस्कृति का दर्पण

सत्य से बड़ा तो ईश्वर भी नहीं है। - अज्ञात

कोरोना की दूसरी लहर से रहें सतर्क

पिछले वर्ष जब कोविड-19 महामारी शुरू हुई थी तो हम लोग सजग भी थे और सतर्क भी। मास्क और सामाजिक दूरी के साथ कोविड-19 के अनुकूल तमाम व्यवहार अपनी आदतों में शुमार कर चुके थे। लेकिन जैसे-जैसे महामारी का प्रकोप कम होता गया वैसे-वैसे हम सबने मान लिया कि अब इस बीमारी का अन्त आ चुका है। यही सोचकर सब लोग बेफिक्र हो गये और कोविड नियमों के पालन में चूक हो गई। कोविड-19 की पहली लहर में संक्रमण वाला मूल वायरस था जबकि दूसरी लहर में यह स्वरूप बिल्कुल बदल चुका है। जहां पहली लहर में किसी संक्रमित से उसके सम्पर्क में आने वाले 30 से 40 प्रतिशत लोग पॉजिटिव हो सकते थे वहीं दूसरी लहर में यह देखा गया है कि किसी भी संक्रमित से संपर्क में आने वाले 80 से 90 प्रतिशत लोग पॉजिटिव हो रहे हैं। कोरोना की दूसरी लहर से देवभूमि हिमाचल भी अछूती नहीं है। यहां पर भी कुछ दिनों से इसका विकराल रूप दिखने लगा है। प्रदेश सरकार कोरोना की इस दूसरी लहर के प्रकोप को लेकर चिन्तित भी है और संवेदनशील भी। मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने स्वयं प्रदेश के विभिन्न जिलों का दौरा कर अधिकारियों के साथ बैठक कर स्थिति का जायजा ले रहे हैं। इसके अलावा पंचायती राज संस्थाओं, शहरी निकायों व विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों से भी संवाद कर उन्हें जमीनी स्तर पर कोविड महामारी बचाव के लिए जनता को जागरूक करने का आह्वान किया है। क्योंकि इस बीमारी को नियंत्रित करने के लिए जन प्रतिनिधियों की सहभागिता बढ़ाना बहुत जरूरी है ताकि जन जागरूकता से इस वायरस की चैन को तोड़ा जा सके। सरकार नहीं चाहती कि प्रदेश में लॉकडाउन जैसी स्थिति पैदा हो। प्रदेश में कोरोना के मामलों में बढ़ोतरी होना चिंता का विषय है। परन्तु प्रदेश में दवाइयां, ऑक्सीजन युक्त बिस्तरों की क्षमता, मास्क, सेनेटाइजर इत्यादि पर्याप्त मात्रा में सरकार उपलब्ध करवा रही है। सरकार ने स्वास्थ्य विभाग को अस्पतालों में ऑक्सीजनयुक्त बिस्तरों की क्षमता बढ़ाने के निर्देश दिए हैं। इसके अतिरिक्त प्रदेश के विभिन्न जिलों में जल्द से जल्द सात ऑक्सीजन प्लांट स्थापित किए जाएंगे। साथ ही प्रदेश में कोरोना संक्रमित मरीजों के लिए बेड की क्षमता को दोगुना किया जा रहा है। धर्मशाला, मंडी, हमीरपुर, नाहन और चंबा में ऑक्सीजन प्लांट स्थापित किए जा रहे हैं ताकि सभी अस्पतालों और मेडिकल कॉलेजों में 24 घंटे ऑक्सीजन की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। प्रदेशभर में सुविधाओं को अपग्रेड किया जा रहा है। हिमाचल व गोवा देश में ऐसे दो राज्य हैं जहां पर कोरोना वैक्सीन निरर्थक नहीं गई है। हिमाचल वैक्सीनेशन में देशभर में 7वें स्थान पर है। प्रदेश के सभी 12 जिलों में लगभग 12 लाख के करीब लोगों को वैक्सीन लग चुकी है। और आगे भी वैक्सीनेशन का क्रम जारी है। प्रदेश में अब तक आरटी-पीसीआर रेपिड एंटीजन टेस्ट, टू-नाट और सीवी नाट से प्रदेश के लगभग 14 लाख लोगों की जांच की जा चुकी है। राज्य में कोविड-19 की जांच की दर 194399 प्रति दस लाख है। प्रदेश में कोरोना के बढ़ते मामलों के मद्देनजर सरकार ने स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालय सहित सभी शिक्षण संस्थानों को अब एक मई तक बंद कर दिया है। हालांकि मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल और नर्सिंग संस्थान खुले रहेंगे। देश में यद्यपि टीकाकरण तेजी से हो रहा है। केन्द्र सरकार ने 18 वर्ष से ऊपर के सभी नागरिकों को वैक्सीनेशन का जो निर्णय लिया है वह सराहनीय है। शायद थोड़े वक्त बाद टीकाकरण के नतीजे भी सामने आने लगे परन्तु तब तक हम सभी को एहतियात बरतनी होगी ताकि देश में बढ़ रहे कोरोना के मामलों को विराम दिया जा सके। टीका लगवाने के साथ-साथ हम सभी को कोविड अनुकूल व्यवहार करते रहना होगा और सरकार व प्रशासन की ओर से कोरोना के बचाव के लिए समय-समय पर जारी दिशानिर्देशों का कड़ाई से पालन करना होगा।

मजदूरों को उनका हक मिलना चाहिए

मजदूर दिवस का सीधा-सा अर्थ मतलब मजदूर भाईयों का दिन। हमारा दिन, हम सबका दिन। समूचे विश्व में यह दिन बड़े उल्लास से मनाए जाने की परंपरा है और इस दिवस को मनाए जाने की रीत एक मई सन् 1886 से आरंभ हुई। हमारे भारत में पहली बार एक मई 1923 को चेन्नई में यह दिवस मई दिवस यानि मजदूर दिवस के रूप में मनाया गया। भारत के साथ ही करीब 80 देशों में मजदूर दिवस का आयोजन किया जाता है। जबकि कनाडा और अमरीका सहित कुछ देश इस दिन को सितंबर मास के पहले सोमवार को मनाते हैं। गांधी जी की कही बात कि 'किसी भी देश, किसी राष्ट्र की तरक्की उस देश के कामगारों और किसानों पर निर्भर करती है' और यही बात शतप्रतिशत सोने सा खरा उतरती है, इसमें कोई दो राय नहीं।

धर्मगुरु गुरुनानक देव जी ने भी मजदूरों-किसानों और कामगारों के हक में अपनी आवाज बुलंद की थी। आज विश्व भर में बेहद खूबसूरत भव्य इमारतें मंदिर, मस्जिदें, शिवालय, गुरुद्वारे, अजंता एलोरा, हैदराबाद का चारमिनार, गुजरात गांधीनगर का अक्षरधाम, कुतुबमिनार, इंडिया गेट, जामा मस्जिद, गेटवे ऑफ इंडिया (मुंबई) आगरा का ताज, जी हां ताजमहल यह सब हमारे मजदूर भाईयों, हमारे कामगारों, हमारे शिल्पकारों के हाथों की ही कला के बेहतरीन तोहफे हैं। हमने अक्सर यूसुफ खान यानि ट्रेजेडी किंग जनाब दिलीप कुमार साहब की पुरानी फिल्म लीडर का यह गीत सुना ही है कि - इक शहनशाह ने बनवा के हसीं ताजमहल, सारी दुनिया को मुहब्बत की निशानी दी है। लेकिन हकीकत यह भी है कि इस मुहब्बत की निशानी को बनाने के पीछे लगभग 20 हजार मजदूरों ने 37 शिल्पकारों की रहनुमाई में इस हैरत भरे काम को अंजाम दिया था और यह मकबरा 22 सालों की अथक मेहनत के बाद पूरा हुआ था सन् 1630 में।

बड़ी हास्यास्पद और हैरान करती बात है कि जब एक भव्य इमारत मजदूर द्वारा तैयार खड़ी कर दी जाती है तो उसी इमारत के उदघाटन समारोह के वक्त वही मजदूर उसे एकटक निहारता अपनी बेबसी पर रोता नजर आता है, जिसकी नींव से लेकर उसकी छत तक के निर्माण में उसका खून पसीने का अंश छिपा रहता है।

आज की दुनिया के सात अजूबों में शुमार इस मकबरे को बनाने के लिये यदि मजदूरों, कामगारों और शिल्पकारों का सहयोग न मिलता तो यह सभी भव्य इमारतें देखने को नहीं मिलतीं। यह सभी हमारे मजदूरों की ही देन है जो आज हम इन आलीशान इमारतों, मकबरों, किलों और संस्थानों को देख पा रहे हैं। हर युग, हर समय में मजदूरों ने हर क्षेत्र में कार्य करके हमें हैरत में डाला है। पुरातन युगों से ही हमारे शास्त्र दर्शन के अनुसार भले ही दैवी शक्तियां रहीं हैं लेकिन मजदूरों का सहयोग कहीं भी और कभी भी कुछ कम नहीं रहा है।

राजेन्द्र पालमपुरी

शिल्पकारों की शिल्पकला इनकी कल्पना शक्ति का कोई सानी नहीं। फिल्मी दुनिया के भी अनेकों चलचित्र निर्देशकों ने भी मजदूरों के शोषण इनकी व्यथा, इनकी पीड़ाओं का समय -समय पर चित्रण करके हमें सिखाने और समझाने की अनेकों नाकाम कोशिशें की हैं, जिन्हें बेहद सराहा तो गया ही बल्कि कई फिल्मों को तो इन्हीं विषयों के चलते पुरस्कारों से भी नवाजा गया है जिसमें फिल्म लीडर और पैगाम भी शामिल रहीं थीं।

फिल्मों में निर्देशकों ने मजदूरों के हरेक पक्ष को बेहतरीन और प्रभावपूर्ण तरीके से दिखा कर हम सबको जागरूक और सावधान किया था।

आमतौर पर देखा जाए तो मजदूर हमेशा से ही शोषित होता रहा है। स्पष्ट कहना चाहूंगा कि जमाना या वक्त कोई भी रहा हो मजदूर को मेहनत से मिलने वाला पारिश्रमिक देते हुए हम सबको बहुत कष्ट महसूस होता है। लेकिन फिर भी स्वतंत्र भारत में मजदूरों के हितों को ध्यान में रखते हुए - श्रम कल्याण विभाग की स्थापना बरसों से की गई है और यह विभाग मजदूर साथियों के हितों, इनके अधिकारों के लिये ही कार्य करता है। जिसके चलते मजदूरों के हो रहे शोषण, भेदभाव और अत्याचारों पर अंकुश या रोक लगाने का काम इसी विभाग के जिम्मे है।

आवश्यक्ताएं और समस्याएं तो हमेशा मजदूर के साथ रहती ही हैं, जबकि यही मजदूर हमारे समाज का हमारी जिंदगी का एक बेहतरीन और खास जरूरी हिस्सा हैं, जिनके अस्थाई रूप से ही अलग होने पर हम सब पंगु बनकर रह जाते हैं। लेकिन हमारे ईश्वर चंद्र विद्यासागर की बात को भी हमें कभी दरकिनार नहीं करना चाहिये। अतः हमें - अपना काम स्वयं करो - जैसी आदतों को हमेशा अपने रोजमर्रा के जीवन में ढालने और उतारने की जरूरत है ही। और इसके साथ ही यह बात भी कभी नहीं भूलनी होगी कि हर मजदूर हर कामगार हर शिल्पकार को उसकी मेहनत का पैसा मतलब मेहनताना उसे समय रहते और उचित दर पर देना चाहिये। अगर निजी संस्थानों में यानि मजदूरी में आवश्यक बढ़ोतरी या उचित वृद्धि कर दी जाए तो आम मजदूर के रहन सहन के साथ ही उसके जीवन में स्तरीय बदलाव की संभावनाएं अवश्य ही प्रशस्त होंगी। लेकिन बड़ी हास्यास्पद और हैरान करती बात है कि जब एक भव्य इमारत मजदूर द्वारा तैयार खड़ी कर दी जाती है तो उसी इमारत के उदघाटन समारोह के वक्त वही मजदूर उसे एकटक निहारता अपनी बेबसी पर रोता नजर आता है, जिसकी नींव से लेकर उसकी छत तक के निर्माण में उसका खून पसीने का अंश छिपा रहता है।

ऐसी भव्य इमारतों के उदघाटन समारोह इन्हीं मजदूरों के हाथों करवाए जाने की परंपरा को स्थापित करने की आवश्यकता है। ऐसा करके भी शायद हम इन मजदूर साथियों और इनके मेहनताने के साथ न्याय कर सकेंगे।

स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करती 'आयुष' चिकित्सा प्रणाली

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 80 के दशक में अधिकतर, विशेष तौर पर विकासशील देशों के लोगों को आधुनिक चिकित्सा सेवा या चिकित्सक उपलब्ध नहीं थे। उन्हें इन स्वास्थ्य सेवाओं के लिए पारंपरिक तथा पुरानी पद्धति से इलाज करने वालों पर निर्भर रहना पड़ता था। इसके पश्चात आधुनिक चिकित्सा प्रणाली यानि एलोपैथी का तेजी से विकास हुआ। इस कारण से पारंपरिक एवं वैकल्पिक प्रणालियों से इलाज करवाने या करने वाले रोगियों की संख्या में निरंतर कमी होनी शुरू हो गई थी। परन्तु अच्छी बात यह रही कि भारत में ऐसा नहीं हुआ और एलोपैथी अपने पैर पूरी तरह नहीं पसार पाई। इसका मुख्य कारण भारत में वैकल्पिक चिकित्सा प्रणालियों को बढ़ावा देने के लिए 'आयुष' नामक एक अलग व्यवस्था का होना है और इसका अपना मंत्रालय भी है।

आयुष मंत्रालय की स्थापना 9 नवंबर, 2014 से केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की तर्ज पर की गयी। आयुष मंत्रालय वैकल्पिक चिकित्सा प्रणालियों के विकास और प्रसार के लिए नीति बनाता है तथा उसके अनुसार कार्य करता है।

बदलते परिवेश में बदल रहीं स्वास्थ्य प्राथमिकताओं, कुछ संक्रामक तथा गैर-संक्रामक रोगों और आर्थिक विकास को देखते हुए 'राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति -2017' की नींव रखी गयी थी। इसका मुख्य उद्देश्य स्वास्थ्य प्रणाली के सभी क्षेत्रों, जैसे कि मानव संसाधन विकास, प्रौद्योगिकी तक पहुंच, स्वास्थ्य हेतु ज्ञान आधार तैयार करना तथा विभिन्न चिकित्सा प्रणालियों को प्रोत्साहन बारे सरकार की भूमिका और प्राथमिकता को स्पष्ट करना है। यह नीति सुनिश्चित करती है कि लोगों को यह सुविधा जन-स्वास्थ्य केंद्रों पर ही मिले। अधिकतर लोग आयुष को सिर्फ आयुर्वेद ही समझते हैं, परंतु सच्चाई इसके विपरीत है, आयुष के अंतर्गत आयुर्वेद, +योग +यूनानी +सिद्धा तथा + होम्योपैथी पांच चिकित्सा प्रणालियां आती हैं। 1983 में भारत की पहली स्वास्थ्य नीति तैयार की गई। इसके अंतर्गत विभिन्न चिकित्सा प्रणालियों को एक साथ जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

आयुष के अंतर्गत आयुर्वेद + योग + यूनानी + सिद्धा + होम्योपैथी पांच चिकित्सा प्रणालियां आती हैं। 1983 में भारत की पहली स्वास्थ्य नीति तैयार की गई। इसके अंतर्गत विभिन्न चिकित्सा प्रणालियों को एक साथ जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

रूपेश कुमार

डबब्यू.एच.ओ. द्वारा तय मानकों के अनुसार एक हजार लोगों पर एक चिकित्सक जरूर होना चाहिए। स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा संसद में प्रस्तुत किए गए आंकड़ों के अनुसार 31 मार्च, 2019 तक देश में 1445 लोगों पर एक चिकित्सक था। यदि राज्यों पर नजर डालें तो उत्तराखंड में 1631, पंजाब में 778, हरियाणा में 6287, हिमाचल में 3015, जम्मू कश्मीर में 1143, एनसीआर में 1252 लोगों पर महज एक चिकित्सक उपलब्ध है। जबकि आयुष (आयुर्वेद, योग, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी) चिकित्सा प्रणालियों के चिकित्सकों को इसमें जोड़ दिया जाए, तो आंकड़ों की स्थिति और बेहतर हो जाती है। अगर दोनों प्रणालियों के चिकित्सकों को मिला दिया जाए, तो संख्या पर्याप्त है। मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार देश में 11.59 लाख एलोपैथिक चिकित्सक पंजीकृत हैं, लेकिन इनमें से केवल 9. 27 लाख चिकित्सक ही अस्पतालों या निजी क्लिनिकों में मरीजों का इलाज कर रहे हैं।

हिमाचल प्रदेश में भी आयुष चिकित्सक राज्य की स्वास्थ्य सेवाओं में अपनी अहम भूमिका निभा रहे हैं। इस समय हिमाचल में आयुर्वेद के लगभग 1500 केंद्र हैं, जबकि होम्योपैथी के मात्र 14 केंद्र हैं। हिमाचल में आयुर्वेद का एक कॉलेज सरकारी क्षेत्र में और दो कॉलेज निजी क्षेत्र में हैं। जबकि प्रदेश में होम्योपैथी का केवल एक ही कॉलेज है, वह भी निजी क्षेत्र में। लेकिन बात निजी और सरकारी क्षेत्र की नहीं है। निजी कॉलेज को भी मान्यता सरकार ही देती है, परन्तु वहां से शिक्षित चिकित्सक, सरकारी क्षेत्र में सेवा का कोई प्रावधान न होने की वजह से या तो अन्य राज्यों की ओर चल जाते हैं या अपनी सेवाएं निजी क्षेत्र में देते हैं।

मौजूदा सरकार द्वारा वर्ष 2019 में इन्वैस्टर्स मीट के समय 'स्टेट आयुष पॉलिसी' बनाई गई। इसमें कहा गया था कि प्रदेश सरकार आयुष की सभी पांच चिकित्सा प्रणालियों के वर्तमान स्थापित केंद्रों को अपग्रेड करने के साथ ही नए केंद्र खोलने के प्रयास भी करेगी। ऐसे में हिमाचल में होम्योपैथी एवं होम्योपैथिक चिकित्सकों को उम्मीद की किरण नजर आ रही है। परंतु यह प्रयास खरगोश की गति से किया जाना चाहिए, न कि कछुए की चाल से।

कृषक मित्र

व्यावसायिक डेयरी फार्मिंग में पूंजी प्रबंधन

डॉ. देवेश ठाकुर
डॉ. मनोज शर्मा
डॉ. मधुसूदन

व्यावसायिक डेयरी फार्मिंग में पूंजी प्रबंधन एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस पूंजी को दो भागों में बांटा जाता है। स्थायी पूंजी, जिससे स्थायी डेयरी परिसंपति खरीदी जाती है। स्थायी डेयरी परिसंपत्ति जिसमें पशुशाला के निर्माण, पशुओं की खरीद एवं पशुपालन संबंधित संयंत्र आते हैं। स्थायी पूंजी को जुटाने एवं खर्चने के लिए निर्णय काफी सोच समझकर लेने चाहिए क्योंकि इस पूंजी की रकम काफी अधिक होती है। इस पूंजी का निवेश लंबी अवधि के लिए इस्तेमाल होने वाले खर्च पर आता है।

लम्बे समय के दौरान डेयरी व्यवसाय में कितनी बढ़ोतरी होगी यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपने स्थायी पूंजी से किस तरह की डेयरी परिसंपत्ति इकट्ठी की है। उदाहरण के तौर पर यदि खराब नस्ल के पशु खरीदे जाते हैं तो वह लंबे समय तक फार्म की आर्थिकी को नुकसान पहुंचाएंगे और डेयरी व्यवसाय घाटे में ही रहेगा। इस तरह स्थायी पूंजी दीर्घ काल तक के डेयरी के व्यवसाय को प्रभावित करती है।

दूसरी तरह की पूंजी की आवश्यकता को वर्किंग कैपिटल या कार्यशील पूंजी कहा जाता है। यह किसी व्यवसाय में लगने वाली उस जरूरत को बताता है जो उस व्यवसाय के दैनिक कार्य के लिए जरूरी होता है। डेयरी फार्मिंग को बिना किसी रुकावट के लगातार चलाने के लिए जिस वर्किंग कैपिटल या कार्यशील पूंजी आवश्यक है। इसमें पशुओं की फीड, घास, बीज, दवाइयां, कामगारों का वेतन, बिल्डिंग या दुकान का किराया टैक्स इत्यादि आता है।

दस पशुओं की इकाई के लिए प्रति पशु 40 वर्गफीट की आवश्यकता के हिसाब से 400 वर्गफीट की आवश्यकता होगी। इस तरह समय के साथ-साथ नए पशु भी पैदा होंगे इसलिए 15 बछड़ियों को 30 वर्गफीट की आवश्यकता के हिसाब से 450 वर्गफीट जगह और आवश्यकता होगी। प्रति वर्गफीट 300 रुपये की लागत से 850 वर्गफीट के लिए लगभग दो लाख 55 हजार के करीब खर्च आएगा।

दस पशुओं में से 6 पशु दुधारू और चारा शुष्क गर्भित अवस्था में खरीदे जाएंगे ताकि पूरे वर्ष दूध मिलता रहे।

दस में से 6 दुधारू पशुओं (जो कि आठ लीटर दूध देते हों) की खरीद पर 40000 प्रति पशु के हिसाब से 2 लाख 40 हजार का खर्च आएगा। 4 शुष्क अवस्था वाले पशु खरीदने पर 30000 प्रति पशु के हिसाब से एक लाख 20 हजार का खर्च आएगा। पशु की अकाल मृत्यु के नुकसान से बचने के लिए पशुओं का बीमा करवाना जरूरी है। पशुओं के लिए चारा कुतरने की मशीन या चौफ कटर मिलकिंग मशीन रस्सी बर्तन इत्यादि पर 35 हजार का खर्च आएगा।

कुल स्थायी पूजीं

इस तरह स्थायी परिसंपत्ति के लिए लगभग 6 लाख 50 हजार की स्थायी पूंजी की आवश्यकता पड़ेगी।

स्थायी पूंजी जुटाने के माध्यम

भारत सरकार की डेयरी उद्यमिता परियोजना आती है इस परियोजना के तहत दोगली नस्ल या उन्नत स्वदेशी नस्ल के डेयरी पशुओं की इकाई स्थापित करने के लिए सरकार सब्सिडी के साथ ऋण उपलब्ध करवाती है। इसके लिए कम से कम दो पशु या अधिक से अधिक दस पशुओं के लिए वित्तीय सहायता का प्रावधान है। अधिकतम पांच लाख की राशि की मदद की जाती है। कुल ऋण का 25 प्रतिशत सामान्य वर्ग के लिए एवं अनुसुचित जाति एवं जनजाति के लिए 33.3 प्रतिशत बैंक और कैपिटल सब्सिडी के तौर पर दिया जाता है।

दस पशुओं के लिए सामान्य वर्ग के लिए 1.25 लाख और अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लिए 1.67 लाख अधिकतम राशि दी जाती है। इस तरह दो पशुओं की इकाई के लिए सामान्य वर्ग को अधिकतम छूट 25 हजार और अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लिए तैंतीस हजार मिलेगी। ऋणकर्ता को कुल ऋण का दस प्रतिशत राशि ब्याज के तौर पर जमा करनी पड़ती है।

डेयरी ऋण प्राप्त कर्ता को ऋण उसे सात वर्षों में वापिस करना पड़ता है पर यह कैश फलो पर भी निर्भर करेगा। ऋण की पहली किस्त जारी होने के नौ महीने के अन्दर अपनी इकाई को स्थापित करना होता है। हालांकि कुछ समय के लिए इस योजना को विराम दिया गया है।

कार्यशील पूंजी : इसमें सूखे चारे हरे चारे पशुओं की फीड श्रमिकों को देने वाला श्रम इत्यादि आता है।

सूखे चारे पर खर्चा

एक व्यस्क पशु को पांच किलो चारे की आवश्यकता पड़ती है। आठ रुपये प्रति किलो के हिसाब से प्रति पशु प्रति दिन 40 रुपये का खर्च आता है। दस पशुओं का कुल खर्च 400 रुपये आता है। इस तरह एक वर्ष दस पशुओं का सूखे चारे के कुल खर्च एक लाख 46 हजार रुपये आता है।

हरे चारे पर खर्चा

एक व्यस्क पशु को पच्चीस किलो हरे चारे की आवश्यकता पड़ती है। दो रुपये प्रति किलो के हिसाब से प्रति पशु प्रति दिन 50 रुपये का खर्च आता है। दस पशुओं का प्रतिदिन का कुल खर्च 500 रुपये आता है। इस तरह एक वर्ष दस पशुओं को हरे चारे का कुल खर्च एक लाख 82 हजार पांच सौ रुपये आता है ।

पशुओं की फीड पर खर्चा

दस लीटर दूध देने वाली गाय को चार किलो फीड की आवश्यकता पड़ेगी और दैनिक खर्च 20 किलो के हिसाब से 80 रुपये प्रतिदिन का खर्च आता है। दस पशुओं का कुल खर्च 800 रुपये आता है। इस तरह एक वर्ष दस पशुओं का फीड का कुल खर्च दो लाख 62 हजार रुपये आता है।

स्थायी पूंजी

पशु घर, पशुओं की खरीद एवं संयंत्र पर कुल खर्च के लिए बैंक से ऋण लिया जाएगा। उस ऋण का दस प्रतिशत यानि कि 65 हजार रुपये स्थायी लागत में जोड़ा जाएगा। इसके बाद पशुशाला पर 5 प्रतिशत के हिसाब से मूल्य और पशु संयंत्र पर 10 प्रतिशत मूल्य को जोड़कर इसकी कुल लागत प्रति वर्ष के हिसाब से 81250 के करीब आती है।

कार्यशील पूंजी

पशुओं के सूखे चारे का खर्च (14600) हरे चारे का खर्च (182500) और फीड का खर्च श्रमिकों का खर्च दवाइयों एवं अन्य खर्चा (12000) मिलाकर आठ लाख 66 रुपये की कार्यशील पूंजी की आवश्यकता पड़ेगी। यदि स्थायी और कार्यशील पूंजी को जोड़ दिया जाए तो नौ लाख 47250 की पूंजी की आवश्यकता पड़ेगी।

डेयरी फार्मिंग में पूंजी जुटाने के विभिन्न विकल्प

पशु किसान क्रेडिट योजना के तहत किसी भी बैंक से पशुपालक अपनी जरूरत के हिसाब से 1.60 लाख रुपये तक का लोन बिना किसी सिक्योरिटी के ले सकता है। जो पशुपालक को-ऑपरेटिव सोसाइटी से जुड़े हों उन्हें 3 लाख रुपये तक के लिए किसी भी सिक्योरिटी की जरूरत नहीं होगी। कार्ड पर सालाना 7 प्रतिशत का साधारण ब्याज लिया जाएगा और समय पर भुगतान करने पर 3 प्रतिशत ब्याज दर की छूट मिलेगी। इस तरह इस योजना के तहत धारक को केवल 4 प्रतिशत प्रति दर से लोन मिल सकता है। लोन पर सब्सिडी 3 लाख रुपये की लोन सीमा तक ही रहेगी।

प्रति पशु आठ लीटर दूध के हिसाब से एक वर्ष में 300 दिन तक दूध मिलने से प्रति पशु 2400 लीटर दूध का उत्पादन होगा। इस तरह पूरे वर्ष में दस गायों से 24000 लीटर दूध उत्पन्न होता है। दूध को 45 रुपये के हिसाब से बेचने पर दस लाख अस्सी हजार की आय होगी। तैयार चार बछड़ियों को 20000 प्रति बछड़ी के हिसाब से बेचकर 80000 रुपये कमाये जा सकते हैं। इस तरह कुल आय 11 लाख साठ हजार रुपये की होगी। अगर इसमें से वर्ष भर के खर्च यानि नौ लाख 47250 को निकाल दिया जाए तो कुल आय 212750 होगी।

दस गायों की इकाई से अच्छी आय मिल सकती है। शुरुआती दिनों में मुख्य खर्चा पशुशाला के निर्माण और पशुओं की खरीद पर आता है जोकि स्थायी लागत में आता है। उसके पश्चात प्रतिदिन चारे, फीड एवं श्रमिकों का खर्चा आएगा जो कार्यशील पूंजी में आता है। अन्य खर्चों में बिजली, पानी इत्यादि का खर्चा आता है। पशुओं का बीमा कराना एवं दवाइयों का खर्चा भी जरूरी है।

व्यावसायिक डेयरी फार्मिंग में पूंजी प्रबंधन एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस पूंजी को दो भागों में बांटा जाता है। स्थायी पूंजी, जिससे स्थायी डेयरी परिसंपत्ति खरीदी जाती है। स्थायी डेयरी परिसंपत्ति जिसमें पशुशाला के निर्माण, पशुओं की खरीद एवं पशुपालन संबंधित संयंत्र आते हैं। स्थायी पूंजी को जुटाने एवं खर्चने के लिए निर्णय काफी सोच समझकर लेने चाहिए क्योंकि इस पूंजी की रकम काफी अधिक होती है।

सूखे से निपटने के लिए जागरूकता शिविरों का सहारा

बागबानी विभाग द्वारा जिला कांगड़ा में सूखे से निपटने के लिए अनेक प्रबन्ध किए जा रहे हैं। विभागा द्वारा जिला के विभिन्न विकास खण्डों में पंचायत स्तर पर किसानों व बागबानों को सूखा प्रबन्ध हेतु जागरूकता शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इन शिविरों में बागबानों को सूखे से निपटने के लिए विभिन्न उपायों, तकनीकों व सरकार द्वारा जल प्रबन्धन हेतु चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी प्रदान की जा रही है। बागबान पौधों के तोलिया (बेसिन) में नमी बनाए रखने के लिए सूखे घास या भूसे की 15 सेंटीमीटर मोटी परत या पॉलिथीन/प्लास्टिक मल्च बिछाएं। यह भूमि से नमी के वाष्पीकरण को रोकेगी तथा भूमि में खरपतवार को भी नहीं उगने देगी।

फलदार पौधों की जड़े अनाज वाली फसलों तथा सब्जियों की अपेक्षा गहरी होती हैं इसलिए कुछ हद तक सूखे की स्थिति को झेल सकती हैं, लेकिन पिछले लगभग तीन-चार महीनों से पर्याप्त वर्षा नहीं होने पर सूखे जैसी परिस्थितियां पैदा हो गई हैं जिसका विपरीत प्रभाव फल-पौधों पर भी पड़ सकता है। आम, लीची व नीम्बू वर्गीय इत्यादि फल-पौधों में फलन हो रहा है इसलिए मिट्टी में पर्याप्त नमी होना अत्यंत आवश्यक है ताकि बागबान गुणवत्तायुक्त अच्छी उपज ले सकें।

सूक्ष्म सिंचाई (टपक/फब्बारा) पानी तथा खाद पौधों की जड़ों में पहुंचाने का उत्तम तरीका है। जिन किसानों के पास पानी का उचित स्त्रोत उपलब्ध है, वह बागीचे में टपक/फब्बारों सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली स्थापित करने हेतु 80 प्रतिशत अनुदान राशि पर प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के अंतर्गत आवेदन कर सकते है। टपक सिंचाई से जहां पानी की 50-60 प्रतिशत बचत होती है, वहां पानी सीधा पौधों की जड़ों को प्राप्त होता है।

किसानों व बागबानों की सुविधा के लिए प्लास्टिक जल भण्डारण टैंक 300 लीटर व पाइप अनुदान राशि पर विभाग के विकास खण्ड स्तर पर उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि अधिक जानकारी के लिए उप निदेशक, उद्यान या अपने नजदीकी उद्यान विभाग कार्यालय में सम्पर्क कर सकते हैं। उप निदेशक, बागबानी डॉ. कमलशील नेगी ने यह जानकारी दी।

तरडी की खेती मुनाफे का सौदा

डॉ. चिरंजीत परमार

बाजार में मिलने वाली सभी सब्जियां खेतों से नहीं आती। हमारे प्रदेश में कुछ सब्जियां ऐसी भी हैं जो खेतों के आस पास या वनों में अपने आप उगी होती हैं। जब इनका मौसम आता है, तब लोग इनको तोड़ कर ले आते हैं और घर में पकाते हैं। इनमें कुछ सब्जियां इतनी लोकप्रिय हैं कि वे बाजार में बिकने भी आती हैं और इनमें से कई तो काफी महंगे दामों पर बिकतीं हैं।

ऐसी ही एक सब्जी है तरडी। तरडी का पौधा एक पतली सी बेल होती है जो जंगल में झाड़ियों और पेड़ों के आस पास उग कर उन पर चढ़ जाती है। यह बेल डायोस्कोरिएसी (Dioscoreaceae) कुल का पौधा है। लगता है कि इस पर अभी तक पादप वर्गीकरण वैज्ञानिकों की नज़र नहीं पड़ी है और इसका सही वैज्ञानिक वर्गीकरण नहीं हो सका है। इसलिए इस पेड़ को न तो अभी तक कोई वानस्पतिक नाम दिया गया है और न ही भारतीय पौधों के किसी विश्वकोश, जैसे सीएसआईआर की वेल्थ ऑफ इंडिया में इसका उल्लेख मिलता है। अभी तक केवल इतना ही तय है कि यह डायोस्कोरिया जीनस का पौधा है। इस जीनस में और भी ऐसे कुछ पौधे हैं जिनके कंदों को लोग पका कर खाते हैं। इनका भी अभी तक सही वर्गीकरण नहीं हुआ है।

तरडी का पौधा एक पतली सी, लगभग 5 मिली मीटर व्यास की, पर्णपाती बेल होती है जो हिमाचल के यह मध्य ऊंचाई वाले वनों में 4000 फुट की ऊंचाई के आस-पास पाई जाती है। इसके बेल के पत्ते अक्तूबर के आस-पास झड़ जाते हैं और फिर मार्च-अप्रैल में मौसम गरमाने के साथ फिर से आ जाते हैं। यह घने जंगलों में पेड़ों के नीचे, जहां भूमि में अधिक मात्रा में सड़ी गली पत्तियां होती हैं और भूमि सख्त नहीं होती, उगना पसंद करती है। तरडी की जड़ जमीन में सीधी नीचे जाती है और यदि रास्ते में कोई रुकावट न आए तो सात आठ फुट गहरी चली जाती हैं।

तरडी की बेल

तरडी

तरडी की बेल पर भूरे रंग के छोटे आलू के आकार के फल लगते हैं जिन्हें स्थानीय भाषा में तरडोलू कहते हैं। इनको भूमि में रोप कर तरडी की नई बेलें तैयार की जा सकती हैं। बेल की जड़ कोई डेढ़ फुट तक पतली ही रहती है और फिर उसके बाद यह कन्द में परिवर्तित होनी शुरू हो जाती है। ये कन्द चपटे आकार के, लगभग 8 सें. मी. चौड़े और 5 सें.मी. मोटे होते हैं। ये बाहर से भूरे और अंदर से दूधिया, सफेद, चिपचिपे और फिसलाऊ होते हैं। पर यह चिपचिपाहट और फिसलाऊपन उबालने के बाद समाप्त हो जाता है। ये कन्द मामूली मोड़ने पर तड़ाक से टूट जाते हैं। इनको कच्चा भी खाया जा सकता है। पकाने के लिए इन्हें पहले उबाला जाता है और इनका भूरा छिलका उतार लेते हैं। फिर इन्हें छोटे टुकड़ों में काट लेते हैं और मसालों के साथ तेल में छौंक लेते हैं, जैसा कि आलू के साथ किया जाता है। पकने पर ये काफी स्वादिष्ट बनते हैं। यह शिवरात्रि और अन्य व्रत वाले त्योहारों में खाया जाने वाला लोकप्रिय फलाहार व्यंजन है।

प्रदेश में तरडी की खेती की संभावनाएं

तरडी एक लोकप्रिय मौसमी सब्जी है और लोग इसे चाव से खाते हैं। बाजार में इसके अच्छे दाम मिल जाते हैं। शहरों में इसका भाव 200 रुपये किलो तक पहुंच जाता है।

इसलिए यदि तरडी की बेलों को उगाया जाए तो इससे काफी लाभ कमाया जा सकता है। कई लोग तरडी की बेलों को मिट्टी के पुराने घड़ों में लगाते हैं और फिर 2-3 साल बाद घड़े को तोड़ कर तरडियां निकाल लेते हैं। पर इस विधि में घड़े का नुकसान हो जाता है। बेलें लोहे की पुरानी बाल्टियों या पुराने तारकोल के ड्रमों में भी लगाई जा सकती हैं। या फिर इसके लिए सीमेंट की चार फुट गहरी क्यारी भी बना सकते हैं। इस प्रकार तरडी को एक लाभदायक नई फसल के तौर पर विकसित किया जा सकता है।

रहस्य और रोमांच से भरपूर करोल टिब्बा

हिमालयी क्षेत्रों में यूं तो कंदराओं (गुफा) का होना आम बात है, क्योंकि कहीं न कहीं पहाड़ों में कंदराओं को देखा जा सकता है। ये कंदराएं सदियों से बनी हुई हैं और आज भी अपना ऐतिहासिक वर्चस्व बनाए हुए है। ऐसी ही गुफा सोलन शहर के साथ लगते ऊंचे करोल पर्वत में है जिसका संबंध पांडवों से जुड़ा हुआ है। पांडव काल की यह गुफा विश्व की सबसे पुरानी व हिमालयी क्षेत्र की सबसे प्राचीनतम व 28 किमी लंबी गुफा है। करोल की गुफा आज भी अपने अंदर इतिहास को छिपाए हुए हैं जो आज भी रहस्य बने हुए हैं। इसलिए इस गुफा को रहस्यमयी गुफा के नाम से भी जाना जाता है। करोल पर्वत दूर से देखने पर गड़वे (लोटा) की तरह नजर आता है।

जनश्रुतियों के अनुसार इस गुफा को पांडवों ने बनाया था। कहते हैं कि जब अज्ञातवास के दौरान पिंजौर में लाक्षागृह में पांडवों को जलाने का षड्यंत्र रचा गया था तो इसी गुफा (सुरंग) से होकर वे बच निकले थे। हालांकि पिंजौर में लाक्षागृह के कोई प्रमाण नहीं मिलते हैं। चंडीगढ़ शिमला हाइवे पर स्थित पिंजौर (हरियाणा) के पास विराट नगर था जहां पांडवों ने अज्ञातवास व्यतीत किया था और उसी दौरान एक वर्ष का अज्ञातवास इसी गुफा व करोल के घने जंगलों में बिताया था। इस गुफा को पार करने वाले पांडव अंतिम मानव थे। इसी कारण इस गुफा को पांडव गुफा के नाम से जाना जाता है।

किंवदंती के मुताबिक इस गुफा का संबंध जामवंत से भी रहा है। कहते हैं कि लंका युद्ध के बाद जब श्रीराम ने सबकी विदाई की तो जामवंत ने कहा था कि लंका में इतने बड़े योद्धाओं के साथ मलयुद्ध करके भी मेरी भुजाएं संतुष्ट नहीं हुई हैं तो श्रीराम ने जामवंत की यह इच्छा द्वापर युग में पूरी होने की बात कही थी। उसके बाद से जामवंत इसी गुफा में रहने लगे थे। द्वापर युग के अंत में श्रीकृष्ण के साथ जामवंत का युद्ध हुआ तो फिर श्रीकृष्ण ने उन्हें त्रेता युग में उनकी इच्छा के बारे में बताया। उसके बाद जामवंत को अपनी भूल का एहसास हुआ था। मान्यता है कि करोल गुफा ही जामवंत की गुफा है। संस्कृत के शब्दकोष में करोली शब्द का अर्थ 'रीछ की गुफा' है। गुफा के मुहाने पर प्राचीन ठाकुरद्वारा मंदिर व आषाढ़ माह के पहले रविवार को लगने वाला मेला सिद्ध बाबा करोल इस घटना से जुड़े हैं। बताते हैं कि आषाढ़ माह के पहले रविवार को ही श्रीकृष्ण का जामवंती से इसी गुफा में विवाह हुआ था।

मान्यता है कि हनुमान जी जब हिमालय से संजीवनी बूटी का पहाड़ उठा लेकर जा रहे थे तो उसमें से कुछ हिस्सा यहां भी गिरा था, जिससे आज भी यहां पर संजीवनी बूटी होने की बात कही जाती है। ग्रामीणों को पक्का यकीन है कि करोल पहाड़ पर संजीवनी बूटी है। बसाल गांव का एक उदाहरण देते हुए वे बताते हैं कि एक बार करोल पहाड़ पर घास काटने गई महिला की अंगुली कट गई। जब वह घास लेकर घर पहुंची तो उसकी अंगुली के घाव भर चुके थे। गांव के लोगों का कहना है कि करोल के पहाड़ पर दुर्लभ जड़ी बूटियां हैं।

सोलन की महि पंचायत के प्रधान नंद किशोर कहते हैं कि यह सिद्ध बाबा करोल गुफा है जिसे जामवंत की गुफा के नाम से भी जाना जाता है। किशोर कहते हैं कि बुजुर्गों से अक्सर सुना करते थे कि यहां पांडवों ने एक वर्ष के अज्ञातवास के दौरान कुछ समय यहां भी बिताया था, जिस कारण इसे पांडव गुफा भी कहते है।

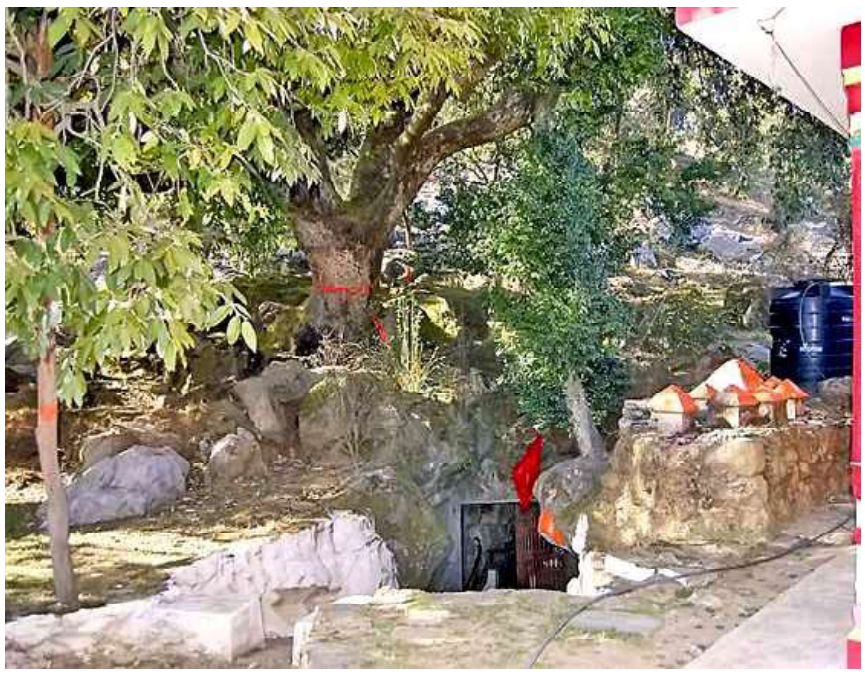

इस गुफा के हरियाणा के पिंजौर निकलने के भी प्रमाण हैं। गुफा से बहकर जाने वाले बान के पत्ते पिंजौर के मुहाने पर निकलते हैं। इसका अंदाजा स्वतः ही लगाया जा सकता है, क्योंकि बान के पेड़ करोल से आगे कहीं भी नहीं है। करोल गुफा के रहस्य को जानने के लिए पहले से ही खोज का कार्य चलता रहा है, लेकिन इससे पर्दा नहीं उठ सका है। बताते हैं कि 1982 में जर्मनी के कुछ खोजकर्ताओं ने जब इस गुफा के अंदर रंगीन पानी डाला तो यह पिंजौर गार्डन के पानी के प्राकृतिक चश्मों में निकला, जिससे एक बात तो साबित होती है कि गुफा पिंजौर में ही निकलती है। जानकारों का मानना है कि इस गुफा के अंदर बड़ी झील हो सकती है।

गुफा के अंदर प्रवेश करते ही शिवलिंग, शेषनाग जैसी आकृतियां दिखने लगती हैं। सोलन में इसे करोल टिब्बा के नाम से भी जाना जाता है। लोगों का मानना है कि गुफा के अंदर अलौकिक शक्तियां हैं जिनका रहस्य अभी तक वैज्ञानिक भी नहीं सुलझा पाए हैं। इस गुफा के अंदर 50 फीट तक ही जाया जा सकता है। गुफा के अंदर पानी के कारण काफी फिसलन है। अंधेरे में पत्थरों से सिर टकराने व सांप, बिच्छुओं जैसे जहरीले कीडों से भी सामना करना पड़ता है। इस गुफा में जिसने भी अंदर तक घुसने की हिम्मत की है उनके साथ अनहोनी घटनाएं जरूर हुई है।

करोल पर्वत जाने के लिए सोलन के चंबाघाट से भी रास्ता जाता है। सोलन शहर से आगे कालका शिमला एनएच पर डेड़घराट क्षेत्र के पास से पांडव गुफा के लिए रास्ता जाता है। इसमें करीब साढ़े पांच किलोमीटर की चढ़ाई बान व देवदार के घने जंगलों के बीच से तय करनी पड़ती है। अन्य राज्यों से आने वाले लोग सोलन तक रेलगाड़ी के माध्यम से भी आ सकते हैं। उसके आगे बस या गाड़ियों के माध्यम से भी जा सकते हैं।

✍ प्रवीण कुमार सहगल

अलौकिक शक्तियों के देव श्री नाग ढैशंरी

हिमाचल प्रदेश में जिला मण्डी के उपमण्डल करसोग से लगभग 42 किलोमीटर दूर रानीकोट के आँचल में समुद्र तल से करीब 5500 फुट की ऊंचाई पर बसा है, श्री नाग ढैशंरी जी का भव्य मंदिर। नाग ढैशंरी अनेक अलौकिक शक्तियों के स्वामी है।

नाग ढैशंरी जी को च्वासी क्षेत्र के प्राचीन देवों में से माना जाता है। नाग ढैशंरी जी के बारे में बुद्धिजीवियों तथा बुजुर्गों का मानना है कि किसी समय जैई गांव में दो परिवार रहते थे। उसमें एक व्यक्ति बोल नहीं पाता था (अर्थात वह गूंगा था)। वह वहां पर रोज पशुओं को जंगल चराने ले जाता था। उन पशुओं में एक गाय भी थी। वह गाय रोज दोपहर को जंगल से भाग जाती थी और ढैशंर धार में पहुंच जाती थी। जब वह व्यक्ति शाम को पशुओं को घर की ओर ले जाता था तो वह गाय भी घर की ओर आ जाती।

जब शाम को गाय से दूध निकाला तो वह दूध नहीं देती थी। तो उस समय परिवार के सदस्यों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया लेकिन जब यह घटना निरंतर होने लगी तो उन्होंने उस व्यक्ति को इशारे से समझाकर सांकेतिक क्रिया से अपनी बात रखी कि तुम हर रोज दूध कहां गायब कर रहे हो। वह बोल नहीं पाने के कारण चुप था तो दूसरे दिन जब पशुओं को जंगल ले गया तो उसने सोच लिया कि आज मैं गाय का पीछा करूंगा, तो जब गाय दोपहर के समय भागने लगी तो वह व्यक्ति उसके पीछे-पीछे गया उसने देखा कि गाय ढैशंर धार में झाड़ियों के बीच दूध दे रही है (गाय के थन से स्वतः दूध निकलने लगा) यह देखने के बाद उसने सबको बुलाकर इक्कठा किया। सब हैरान रह गए तो उन्होंने वहां खुदाई शुरू कर दी ताकि पता लगा सके कि यहां गाय दूध क्यों दे रही है। खुदाई करने में उन्हें सफलता नहीं मिली क्योंकि जब कुदाली से खुदाई करते तो वह जमीन में लगते ही उल्टी हो जाती। बहुत मेहनत करने पर उन्हें एक पत्थर मिला उसके निकालने के बाद वह खुदाई नहीं कर पाये तो वहां ढैशंरी नाग जी प्रकट हो गये। उन्होंने सभी को बताया कि मैं इस स्थान पर वास करना चाहता हूं। यह मेरा प्राकट्य स्थल होगा तो यह कहने पर वहां पर भव्य मंदिर का निर्माण किया गया और तब से अब तक फिर ढैशंरी नाग जी को पूजा जाने लगा। बाद में यह मंदिर क्षतिग्रस्त हो गया और अब वर्तमान समय में मंदिर कमेटी व गांव वालों के सहयोग से 142 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद 2019 में मात्र 6 महीने में फिर से भव्य नया मंदिर बनाया गया और ढैशंर नाग फिर से पूजे जाने लगे।

श्री ढैशंरी नाग जी शोर शराबा बिलकुल नहीं मानते हैं। उनके साथ यहां उनके अनेक गण विराजमान हैं जिनमें रकसेटा, जल देवता, सिद्ध बाबा, पांच वीर, भैरव बाबा आदि हैं।

मंदिर के भंडारी, महंत श्री संगत राम, श्री लाल चंद ठाकुर तथा मंदिर कमेटी के प्रधान श्री छ्याल सिंह वर्मा जी बताते है कि यहां श्री नाग ढैशंरी जी पिंडी रूप में विराजमान है। उनके साथ भैरव बाबा, पांच वीर विराजमान है। वह बताते हैं कि श्री ढैशंरी नाग जी शोर शराबा बिलकुल नहीं मानते हैं। उनके साथ यहां उनके अनेक गण विराजमान है जिनमें रकसेटा, जल देवता, सिद्ध बाबा, पांच वीर, भैरव बाबा, खडकिखड वीर अठारह वाण, अठारह ठूट, घोषमारी देवी, थना देवता, 64 जोगणी, कनालू वीर, पतालु वीर, नाग माता बूढ़ी नागिन है। वर्तमान समय में श्री नाग ढैशंरी जी च्वासी क्षेत्र के मुख्य पूज्य देवता के रूप में पूजे जाते हैं।

✍ टेकचंद ठाकुर

संस्कृति

सुनहरे युग से रू-ब-रू करवाती - प्राचीन धरोहरें

हर देश की अपनी एक सभ्यता व संस्कृति होती है, जो हमें पीढ़ी दर पीढ़ी विरासत के रूप में मिली होती है। यह धरोहरें उस देश का गौरव है, जो उस राष्ट्र के इतिहास, कला व संस्कृति का दर्पण होते हैं। किसी भी देश की सांस्कृतिक व पुरातात्विक धरोहरों से उसे एक अलग सी पहचान मिलती है। ये धरोहरें इतिहास के पन्नों को संजोए पर्यटक के मन में इतिहास जानने की उत्सुकता पैदा करती हैं। इसके अतिरिक्त देश विदेशों से आए हजारों पर्यटकों, शोधकर्ताओं को उस देश के समृद्ध रहन-सहन, पकवान, लोक परम्पराओं, कला व साहित्य से भी रू-ब-रू करवाते हैं जो उस राष्ट्र की वर्तमान व भविष्य की नींव होती है, जो अपने पीछे एक बड़ा इतिहास छिपाये हुए हैं।

विश्व धरोहर दिवस प्रत्येक वर्ष 18 अप्रैल को विश्व स्तर पर मनाया जाता है। प्रथम बार 18 अप्रैल 1982 को अफरीकी देश ट्यूनीशिया में पहला विश्व विरासत दिवस मनाया गया था। इस दिवस का प्रारम्भिक नाम विश्व स्मारक और पुरातत्व स्थल दिवस था। जिसे 1983 को यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र संघ का शैक्षिक वैज्ञानिक एव सांस्कृतिक संगठन) ने इसे प्रत्येक वर्ष 18 अप्रैल को विश्व धरोहर दिवस जिसे विश्व विरासत दिवस भी कहा जाता है, के रूप में मनाने की मान्यता प्रदान की। पूर्वजों की विरासत को अनमोल धरोहर मानते हुए और लोगों से इन्हें सुरक्षित और सम्भाल कर रखने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष विश्व धरोहर दिवस मानने का निर्णय लिया गया था।

किसी भी देश की सांस्कृतिक व पुरातात्विक धरोहरों से उसे एक अलग सी पहचान मिलती है। इतिहास संजोए ये धरोहरें पर्यटक के मन में इतिहास जानने की उत्सुकता पैदा करती हैं। इसके अतिरिक्त देश विदेशों से आए हजारों पर्यटकों, शोधकर्ताओं को उस देश के समृद्ध रहन-सहन, पकवान, लोक परम्पराओं, कला व साहित्य से भी रू-ब-रू करवाते हैं जो उस राष्ट्र की वर्तमान व भविष्य की नींव होती है।

विश्व विरासत स्थल जो विश्व विरासत समिति यूनस्को द्वारा चयनित किये गये होते हैं इन भव्य धरोहर ने कई युगों को आते जाते देखा, जो आज भी अपने इतिहास को संजोयें है। इन स्मारकों, प्राचीन भवनों व सांस्कृतिक धरोहरों को इस दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य लोगों को इन धरोहरों के प्रति जागरूक करना व सांस्कृतिक विरासत के प्रति संवेदनशीलता और इसके महत्त्व को समझना है। आज भी इनके स्थलों की भव्यता, भवन निर्माण शैली, कला वस्तुओं से पर्यटकों में छुपे इतिहास को जानने के लिए उत्सुकता को उत्पन्न करती है व उस देश का गौरव बढ़ाने का काम करती है।

✍ कपिल चटर्जी

विश्व विरासत स्थलों को विश्व विरासत स्थल समिति द्वारा इन स्थलों को तीन श्रेणियों में प्रथम प्राकृतिक धरोहर स्थल, द्वितीय सांस्कृतिक धरोहर स्थल व तृतीय मिश्रित धरोहर स्थल में बांटा है।

इन श्रेणियों में जुलाई 2019 तक विश्व विरासत स्थल समिति द्वारा 1121 विश्व धरोहर स्थल है। जिसमें 213 प्राकृतिक 869 सांस्कृतिक व 39 मिश्रित स्थलों को सूचिबद्ध किया गया है। इन स्थलों में विश्व के सर्वाधिक धरोहर स्थल इटली में स्थित है। वर्ष 1983 में पहली बार की सूची में चार ऐतिहासिक स्थलों जिसमें ताज महल, आगरा का किला, अंजता एवं एलोरा की गुफाऐं को यूनेस्को ने विश्व धरोहर माना था। आज पूरे भारत में कुल 38 धरोहर स्थल हैं जिनका सौंदर्य कई राज्यों में बिखरा पड़ा हैं। यह धरोहर स्थल जो इतिहास से रू-ब-रू तो कराते ही हैं, ये अपने समय के एक स्थापत्य कला के अद्भुत नमूना थे, जो आज के दौर में अपने भव्य इतिहास से साक्षात्कार कराते है। इन धरोहर स्थलों की संख्या के आधार पर भारत भी धरोहरों में आज शीर्ष देशों की पंक्ति में एक स्थान है।

विश्व धरोहर दिवस प्रत्येक वर्ष किसी किसी न थीम पर विश्व भर में मनाया जाता है, इसका मुख्य उद्देश्य विश्व भर में सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देना व कला एवं संस्कृति का संरक्षण करना है। हर वर्ष विश्व धरोहर दिवस अलग-अलग थीम से मनाया जाता है जहां वर्ष 2019 में 'ग्रामीण परिदृश्य' थीम पर आधारित था। इसके अतिरिक्त इस विषय पर संगोष्ठियों, हेरिटेज वाक, पेटिंग्स, फोटो प्रतियोगिताएं, भाषण व सेमिनारों का आयोजन जो सरकारी स्तर पर तो होते है पर कई संस्थाएं जो इस विषय से जुड़ी हैं अपने स्तर पर कई प्रकार के आयोजनों को करवाती है। वहीं वर्ष 2020 का विषय 'साझा संस्कृति विरासत, साझा विरासत और साझा जिम्मेदारी' को रखा गया थ। इन थीमों का मुख्य उद्देश्य लोगों में इन धरोहरों को आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित एवं संरक्षित करना है। पूर्वजों से प्राप्त यह धरोहरें कितनी भी समृद्ध क्यों न हो जब तक इनका संरक्षण ठीक ढंग से नहीं होगा तो यह अपनी प्रासंगिकता और लोकप्रियता को खो देगी।

किसी भी राष्ट्र की संस्कृति उस देश की विकास का दर्पण होती है। यूनेस्कों द्वारा सूचिबद्ध भारत के धरोहर स्थल आज विश्व धरोहर स्थलों में सबसे पुरानी सभ्यताओं में जो अपनी बहुरंगी विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासतों में एक है। जिन्हें अंतरराष्ट्रीय पर्यटन के मानचित्र पर पहचान तो मिली साथ ही पर्यटक गतिविधियों को बढ़ावा मिला है।

इतिहास

ऐतिहासिकता, आस्था और सौंदर्य की त्रिवेणी : कांगड़ा

पर्यटन के क्षेत्र में हिमाचल देश का सिरमौर बना हुआ है। कुल्लू-मनाली हो या पहाड़ों की रानी शिमला, मैदानी इलाकों में पारा चढ़ते ही सैलानियों को सबसे पहले हिमाचल याद आता है। समुद्र तल से प्रदेश की ऊंचाई 350 मीटर से लेकर 6975 मीटर तक जाती है।

इसी प्रदेश का कांगड़ा जनपद जनसंख्या के आधार पर सबसे बड़ा जिला होने का रुतबा रखता है। दर्शनीय स्थलों की विविधता इसे और भी विशेष बना देती है। भागसूनाग, मैक्लोडगंज, बैजनाथ धाम और मां ज्वाला, कांगड़ा में आस्था के केंद्र और आगंतुकों को अपनी ओर आकर्षित करने वाले प्रमुख स्थल है। यह आलेख मुख्य नगर सहित उसके आसपास अपेक्षाकृत कमतर प्रचलित स्थलों से आपका परिचय कराएगा।

इतिहास के पन्नों को पलटने पर महाभारत में त्रिगर्त प्रदेश का आख्यान पढ़ने को मिलता है। सुशर्म चंद्र ने धर्मयुद्ध में कौरवों की ओर से लड़ने का निर्णय किया था। यह त्रिगर्त रियासत का सबसे पुराना तार है जो आगे चलकर राजा हर्षवर्धन द्वारा इसे कांगड़ा में संलग्न करने से जुड़ता है और यही अखंड जालंधर पीठ के गठन की ऐतिहासिक दास्तान भी है।

इस स्थान का नाम कभी नगरकोट भी हुआ लेकिन अंतिम प्रसिद्धि वर्तमान में प्रचलित कांगड़ा नाम ने पाई। तीनों ओर से पहाड़ों के संरक्षण में बसे होने के कारण इसे त्रिगर्त नाम मिला था। परन्तु इसके कांगड़ा बन जाने की किवंदंती और भी रोचक है।

नगरकोट में बसे कुछ परिवारों को कान की बालियों के बोझ से फटे हुए कानों को गढ़ने अर्थात् सिलने की विशेष महारत हासिल थी। दूर-दूर से लोग यहां कान गढ़ाने आते थे। स्थानीय बोली जब अभिव्यक्ति पर रूढ़ हुई तो पहले कानगढ़ और कालांतर में कांगड़ा हो जाने की कथा आम प्रचलित है।

कांगड़ा रियासत का दबदबा कुल्लू से लेकर पंजाब के सीमांत प्रांतों तक था। कटोच वंश ने जब कांगड़ा का परचम थामा तो लंबे समय तक उनका बोलबाला रहा। रियासत की विशेष पहचान, कांगड़ा दुर्ग, एक समृद्ध इतिहास की गौरवशाली गाथा का अंतिम साक्ष्य है।

ई. 1785 में दो सौ साल के लंबे अकबरी शासन के बाद इस दुर्ग की कमान राजा संसार चंद कटोच के हाथ पहुंची। और कटोच वंशीय राजाओं के फलक पर यह राजा सबसे चमकदार सितारा सिद्ध हुआ। गुरखों को भी उन्होंने नाकों चने चबवा दिए थे। उनके व्यक्तिगत पराक्रम के साथ-साथ कुछ और भी था जो कांगड़ा को अजिंक्य बनाता था।

सामरिक दृष्टि से दुर्ग निर्माण के लिए बेहद सुरक्षित स्थान का चुनाव और दुर्ग की सावधान बनावट ने कांगड़ा को एक अभेद्य तथा नायब किला दिया था। विशालकाय दुर्ग-द्वार के साथ उसके आसपास भीमकाय प्राचीर, सुरक्षा का पुख्ता इंतजाम करती थी। और दुर्ग के ठीक नीचे दो-तीन सौ मीटर गहरी खाई तथा उसे (अर्धगोलाकार) घेरकर बहती गहरी बाणगंगा नदी, कांगड़ा किले को सभी ओर से अभेद्य बना देती थी।

प्राचीर पर खड़े होकर सुरक्षाबल किले के आसपास होने वाली प्रत्येक गतिविधि पर पैनी नजर रख सकते थे। ऊंचे टीले पर बने हुए दुर्ग में चढ़ाव दर चढ़ाव परकोटे बनाने के नेपथ्य में यही दूरदृष्टि थी कि दूर तक दृष्टि रखी जा सके। गजनी के सभी प्रयासों के बाद भी वह दुर्ग में सेंध नहीं लगा पाया था।

दुर्ग के झरोखे शांतिकाल में रमणीय कांगड़ा घाटी के मनोहर दृश्य की खूबसूरत कहानी बयान करते हैं। और परकोटों को लांघकर जब आप दुर्ग के शिखर पर पहुंचते हैं तो इस रियासत का समृद्ध इतिहास विहंगम दृश्य बनकर आपकी आंखों के सामने वर्तमान हो जाता है। कांगड़ा दुर्ग इस जनपद का सबसे महत्त्वपूर्ण तथा दर्शनीय स्थल है।

बात कांगड़ा की हो और नगरकोट धाम का जिक्र न आए तो देवभूमि का गौरवगान पूरा नहीं होता।

दक्ष यज्ञ में माता पार्वती के सती हो जाने के पश्चात् शिव उनकी जली हुई देह को उठाकर समस्त सृष्टि का परिभ्रमण करने लगे। उनके विषाद से सारा ब्रह्माण्ड अवसाद ग्रस्त हो गया। ऐसे में भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से सती की देह के अनेक भाग कर दिए। जहां जो अंग गिरा, वहीं शक्तिपीठों की स्थापना हुई।

कांगड़ा में माता का वक्षस्थल गिरा था, इसलिए यहां स्थापित शक्तिपीठ वज्रेश्वरी नाम से प्रसिद्ध हुआ। मान्यता है कि महाभारत काल में पांडवों ने इस शक्ति पीठ के स्थान पर भव्य मंदिर की स्थापना की थी। वर्ष 1905 में एक भीषण भूकंप ने कांगड़ा घाटी को दहला दिया। इस आपदा में पुरातन मंदिर की भी हानि हुई। तत्पश्चात राजकीय संरक्षण में पुनर्निर्माण से मंदिर के गौरव तथा लोक आस्था को भी पुनर्स्थापित किया गया।

कांगड़ा के बाजार से मंदिर के शीर्ष कलश का दर्शन भक्तों को आस्था और भक्ति से सरोबार कर देता है। नवरात्रों के दौरान कांगड़ा की गलियों का नजारा देखने लायक होता है। श्रद्धालु माता के जयकारे लगाते हुए दर्शनों को उमड़ पड़ते हैं। पीले वस्त्रों पर सुर्ख लाल रंग का पंजा बता देता है कि आराधना की आध्यात्मिक यात्रा शुरू हो चुकी है। सीमान्त राज्यों सहित देशभर के अनेक श्रद्धालु अपनी आराध्या के दर्शन हेतु कांगड़ा की सड़कों को श्रद्धा सुमनों से पुष्पित कर देते हैं।

माता वज्रेश्वरी के ठीक सामने, रेल्वे स्टेशन मार्ग पर, आस्था का एक अन्य स्थल गुप्त गंगा है। मान्यता है कि यहां स्नान करके अनेक प्रकार के दैहिक दोषों से मुक्ति मिलती है।

कला की विविधता कांगड़ा की विशेषता है। फिर बात चित्रकला के लिए विश्व प्रसिद्ध गुलेर कलम की हो या फिर प्राचीन प्रस्तर कला की बेजोड़ धरोहरों की, यह जनपद दोनों विधाओं का सिरमौर कहा जा सकता है। कांगड़ा नगर से लगभग 40 किलोमीटर दूर, लंज-नगरोटा सूरियां मार्ग पर स्थित मसरूर नामक स्थान पर शिल्प की एक पुरातन धरोहर कांगड़ा-सौंदर्य में चार-चांद लगा देती है। इसे मसरूर मंदिर भी कहा जाता है। एक सुदीर्घ चट्टान को तराश कर नौ मंदिरों का निर्माण किया गया है।

जनश्रुतियों की मानें तो ये मंदिर पांडवों द्वारा उनके अज्ञातवास के समय में बनाए गए थे। लेकिन शिखर शैली में निर्मित इन एकाश्म मंदिरों के बारे में आधुनिक कला-इतिहासविदों का अनुमान है कि इनका निर्माण छठी से आठवीं शताब्दी के बीच हुआ होगा। कयास जो भी हो, लेकिन इन मंदिरों की भव्यता उस अज्ञात तराशबीन के अभूतपूर्व प्रयास की बोलती तस्वीर है।

मंदिर की भित्तियों पर अनेक देवी-देवताओं के चित्र उकेरे गए हैं। भगवान विष्णु का एक भित्ति-चित्र इशारा करता है कि शिखर पर आसीन भगवान भी विपरीत परिस्थितियों में धरती पर आने को विवश हो जाते हैं। भाग्य की विडम्बना कहें या दीर्घकालिक अनदेखी का नतीजा, दीवारों पर जगह-जगह रिक्त स्थान और उन पर छैनी की चोटों के निशान देखकर महसूस होता है मानो धरोहर हमसे शिकायती लहजे में पूछ रही है कि पता तो करो कि कला के इन नायाब हीरों को कौन लूट ले गया!

मंदिर के गर्भगृह में श्री राम, लक्ष्मण और माता सीता विराजमान हैं, हालांकि यह अपेक्षाकृत नवीन स्थापना है। गर्भगृह के ठीक सामने एक सुन्दर झील का निर्माण किया गया है। इस झील में असंख्य मछलियां हैं। पर्यटकों द्वारा जल में फुलियां डालने पर झुंडों के झुंड एक साथ उन पर टूट पड़ते हैं। इस संघर्ष में छप-छप का जो मधुर संगीत उत्पन्न होता है उससे मन शांत तथा मछलियों को भोजन करते देख आत्मा संतृप्त हो जाती है।

उधर पश्चिम में पिघलता सूरज और इधर झील के शांत जल में ढलती एकाश्म मंदिरों की छाया, इस मिलन से मंत्रमुग्ध कर देने वाला एक मनोहारी दृश्य उभरता है। आप बैठ कर सोचते रहें कि ये सांझ कभी न ढले।

वर्तमान में मंदिर पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अंतर्गत संरक्षित राष्ट्रीय धरोहर है। उससे भी अधिक यह हिमाचल का गौरव और कांगड़ा जनपद की शान है।

कांगड़ा में गर्म पानी के चश्मे के बारे में लोग नहीं जानते। मुख्य नगर से लगभग 30 - 35 किलोमीटर दूर, लंज-तियारा मार्ग में सलोल से लगभग 6 या 7 किलोमीटर की दूरी पर गज खड्ड के किनारे प्रकृति की अनुपम छटा धारण किए एक उनींदा सा गांव। गांव के अंतिम छोर पर भगवान शिव का एक पुराना मंदिर जिसने वर्तमान का थोड़ा बहुत नव-कलेवर धारण कर लिया है। उसी मंदिर के दाहिनी ओर एक ऊंचा टीला है, इसे गांव की सीमा का प्रहरी कह सकते हैं। इस टीले के आधार पर सिंह-मुख से बहता गर्म पानी इसकी पुरातनता की तस्दीक करता है।

तत्वानी की विशेषता इसके जल की कोष्णता है। स्थानीय मान्यता है कि इस जल में शारीरिक रोगों की चिकित्सा का अलौकिक गुण विद्यमान है। लोग श्रद्धापूर्वक यहां स्नान करने आते हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के लिए यहां स्नान की अलग-अलग व्यवस्था है। टीले पर उगने वाली वनस्पतियों को देखकर जल में विद्यमान औषधीय तत्त्वों की विद्यमानता को नकारा नहीं जा सकता। उसपर आस्था में चमत्कार की विशेष शक्ति होती है। इसलिए पर्यटकों से अधिक श्रद्धालुओं की उपस्थिति ने इस स्थान की पवित्रता को सहेजे रखा है। साथ ही मंदिर और चश्मे की देखरेख करने वाले परिवार का भी इस कार्य में विशेष योगदान है।

गांव के शांत वातावरण में गज खड्ड की बहुधाराओं के टकराने से उत्पन्न होने वाली तुमुल ध्वनि, मंदिर के रास्ते में दोनों ओर लहलहाते हरे-भरे खेत और गर्म पानी का चश्मा, यहां पहुंच कर स्वर्ग जैसी अनुभूति करवाते हैं। चूंकि इस स्थान का अभी व्यवसायीकरण नहीं हुआ है, इसलिए पर्यटकों के ठहरने योग्य व्यवस्था अभी नदारद है। हालांकि रात रुकने के लिए एक छोटा सा होटल यहां मौजूद है। तत्वानी कांगड़ा घाटी का अतिशय मनोहर एवं रमणीय स्थल है।

कांगड़ा घाटी में ब्यास नदी पर वर्ष 1975 में एक बांध बनाया गया, इसे पौंग बांध कहा जाता है। हल्दून घाटी का अधिकांश भू-भाग बांध के कारण बनी झील में समाना तय था। यह कांगड़ा घाटी का सबसे उपजाऊ भू-भाग था। 24,529 हेक्टेयर में फैली झील का नाम है महाराणा प्रताप सागर। हालांकि इस झील में डूबे भू-भाग के कारण कांगड़ा को विस्थापन का गहरा घाव मिला जो विस्थापितों के लिए नासूर बनकर आज भी रिस रहा है। लेकिन इस झील का विहंगम दृश्य पर्यटकों को अवश्य मोहित करता है। और पर्यटकों में केवल मनुष्य ही नहीं बल्कि प्रवासी पक्षी भी इस वेट लैंड का जमकर लुत्फ उठाते हैं।

वर्तमान में पौंग झील विश्व प्रसिद्ध वन्य जीव अभयारण्य है। और यह विश्व में चिन्हित 25 अंतरराष्ट्रीय रामसर वेटलैंड में से एक है। सर्दियों के मौसम में साइबेरियन पक्षियों के झुंड इस झील में उतर कर अठखेलियां करते हुए देखे जा सकते हैं। पक्षी प्रेमियों के लिए यह नजारा स्वर्गिक आनंद प्रदान करता है। परन्तु इस झील का सर्वाधिक दर्शनीय स्थल इसी झील के पानी में समाया हुआ है।

हल्दून घाटी में बद्री विशाल नाथ का प्रसिद्ध प्राचीन मंदिर हुआ करता था। कहा जाता है कि यहां की उर्वरता भगवान बद्री विशाल का ही आशीर्वाद थी। फसल का पहला चढ़ावा भगवान को अर्पित करने की प्राचीन प्रथा थी। एक बड़ा उत्सव हुआ करता था। कोने-कोने से लोग यहां पहुंचते और एक बहुत बड़ा मेला लगता था। इसे बाथू की लड़ी कहने का तात्पर्य केवल इतना था कि यहां एक रेखा में अनेक मंदिर स्थापित थे स्थानीय भाषा में लड़ी का अर्थ रेखा होता है। प्रमुख मंदिर भगवान विष्णु के बद्री विशाल स्वरुप का था। झील बनने के बाद मंदिरों ने जल समाधि ले ली। केवल बद्री विशाल नाथ जी की ही पुनःस्थापना की जा सकी थी।

ग्रीष्म में झील का पानी उतरने पर मंदिर भी जल समाधि से बाहर आते हैं। सभी ओर फैले पानी के बीच इन प्राचीन मंदिरों की रेखा को देखकर अद्भुत आश्चर्य-मिश्रित भावनाओं का ज्वार उत्पन्न होता है। मंदिर के आधार को स्पर्श करके पीछे हटती लहरें देखकर प्रतीत होता है मानो आराध्य को डुबोने के अपराध के लिए बारंबार क्षमा याचना कर रही हों। भगवान शिव सहित अन्य देवी-देवताओं के मंदिरों की लड़ी साधक को मौन होने पर विवश कर देती है। मंद पवन के झोंके और ईश्वरीय सान्निध्य किसी देवलोक का आनंद प्रदान करते हैं।

एक किंवदंती के अनुसार पांडवों ने यहां स्वर्ग के लिए सीढ़ियों का निर्माण भी किया था, लेकिन दिन उगने के साथ ही उनका प्रकल्प अधूरा रह गया। सच क्या है, कौन जाने, लेकिन मंदिर के साथ लगती बुलंद इमारत के शीर्ष पर खड़े होकर ऐसा प्रतीत होता है कि स्वर्ग यहीं है।

कांगड़ा घाटी को प्रकृति ने असीम सौंदर्य प्रदान किया है। आस्था के साथ दर्शनीय स्थलों की फेहरिस्त लंबी है। लिखने लगें तो एक जीवन कम पड़ जाए, इसलिए कांगड़ा के सौंदर्य को आंखों में समा लेना व्यावहारिक विकल्प है। डिम्बकेश्वर महादेव से लेकर गुलेर कलम तक और खबरू से चलकर सरदार शोभा सिंह की कर्म स्थली - कलाग्राम अंद्रेटा तक, कांगड़ा सौंदर्य की अप्रतिम मिसाल है और इस सबके बीच पालमपुर के चाय बागान, कांगड़ा सचमुच हिमाचल का सरताज है।

ग्रीष्म में झील का पानी उतरने पर मंदिर भी जल समाधि से बाहर आते हैं। सभी ओर फैले पानी के बीच इन प्राचीन मंदिरों की रेखा को देखकर अद्भुत आश्चर्य-मिश्रित भावनाओं का ज्वार उत्पन्न होता है। मंदिर के आधार को स्पर्श करके पीछे हटती लहरें देखकर प्रतीत होता है मानो आराध्य को डुबोने के अपराध के लिए बारंबार क्षमा याचना कर रही हों।

✍ आशुतोष आशु 'निःशब्द'

पर्यटन संभावनाओं से परिपूर्ण महाभारत कालीन घड़सी

सोलन जिले के कसौली तहसील के अंतर्गत महलोग क्षेत्र में पर्यटन की अपार संभावनाएं है। जानकारों का कहना है कि ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे अनेक स्थल हैं जिन्हें विकसित कर इको -टूरिज्म को बढ़ावा दिया जा सकता है। इससे न केवल पर्यटन को ही बढ़ावा मिलेगा, बल्कि प्रकृति को संवारा भी जा सकता है। विदित हो कि मेहलोग में स्थित घड़सी नामक स्थल का संबंध महाभारत काल से जुड़ा है।

किंवदंतियों के अनुसार घड़सी गांव का नाम भीम पुत्र घटोत्कच के नाम पर रखा हुआ बताया जाता है। महाभारत काल के बड़े योद्धाओं में घटोत्कच का भी नाम आता है। भीम के पुत्र घटोत्कच ने महाभारत में पांडवों की ओर से युद्ध किया था और कौरवों की सेना को अपने पराक्रम व वीरता से अचंभित किया था। घटोत्कच ने जब कौरवों की सेना को अत्यधिक नुकसान पहुंचाना शुरू कर दिया तो दुर्योधन के कहने पर कर्ण ने दिव्यास्त्र का प्रयोग करते हुए घटोत्कच का वध कर दिया। इस दिव्यास्त्र के प्रभाव से घटोत्कच का विशालकाय धड़ इस गांव में गिरा और इसका नाम धड़सी पड़ गया। समय के साथ यह धड़सी से घड़सी हो गया। इसके यहां पर्याप्त साक्ष्य भी मौजूद हैं। इस गांव में घटोत्कच व उनकी माता हिडिंबा के भव्य मंदिर हैं तथा हिडिंबा के नाम पर यहां एक गांव बसा हुआ है जिसका नाम हिडिंब है। घड़सी से डेढ़ किलोमीटर दूर ग्राम दातला में 'पांडवों का जोहड़' नाम से एक बहुत बड़ा तालाब है। कहा जाता है कि पांडव अज्ञातवास के दौरान यहां आए थे और उसी दौरान उन्होंने इस तालाब का निर्माण किया। स्थानीय लोगों और एक किंवदंती के अनुसार पांडवों ने इस तालाब की पूरी रात खुदाई की और सुबह जब उन्हें किसी घर से मधानी चलने की आवाज सुनाई दी तो वहां से निकल पड़े। लम्बे समयान्तर तक इस तालाब की गहराई का पता भी नहीं चल पाया। आज भी इस तालाब के जल से सिंचाई होती है। इतिहासकार रविन्दर शर्मा ने बताया कि घड़सी महलोग रियासत की राजधानी भी रही है जिसे उस समय कोट घड़सी कहा जाता था। यहां पर महलोग के राजा वर्ष में एक या दो बार न्यायालय दरबार लगाया करते थे। अतः ऐतिहासिक स्थान होने के कारण इसे निश्चित रूप से पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाना चाहिए।

✍ गिरधारी लाल कश्यप

कोरोना वायरस से बचाव के लिए हाथों को सेनेटाइज करें

नाटक

नौकरी ही क्यों?

रामदीन एक पुरानी चारपाई पर बैठकर हुक्का पी रहे हैं। उन्हीं के समीप जमीन पर उनका नौकर कल्लू राम बैठा है। रामदीन ने परम्परागत पगड़ी, कमीज व पाजामा पहन रखा है। कल्लू ने रंगबिरंगी कमीज व जीन की हाफ निकर पहनी है।

तभी वहां पर कमल का प्रवेश होता है जोकि शहर में डॉक्टर है, कमल ने कमीज व पैंट पहनी है व आंखों में चश्मा लगा है।

कमलः राम राम काका।

रामदीन : राम-राम बेटे। शहर से कब आए ?

कमल : कल रात ही पहुंचा काका।

कल्लू : नाइट सर्विस में आए होंगे। क्यों कमल बाबू ?

✍ शशि भूषण मलेठा

कमल : हां, कल्लू मियां। और सुनाओ काका, क्या हाल है ? काफी कमजोर लग रहे हो।

रामदीन : बेटा, वृद्धावस्था में कमजोरी तो आएगी ही।

कल्लू : कमल बाबू, हमारे लम्बरदार जी (रामदीन) तो वृद्धावस्था पैंशन खा- खा कर भी कमजोर ही हो रहे हैं।

रामदीन : मेरे कल्लू, मजाक छोड़। इस पैंशन से तो मेरा तम्बाकू का खर्चा भी पूरा नहीं होता।

कमल : काका, आप ये तम्बाकू खाना छोड़ क्यों नहीं देते।

रामदीन : बेटे, इसी के सहारे तो अब जिंदगी कट रही है।

कल्लू : लम्बरदार जी जब तक सुबह उठ कर 250 ग्राम तम्बाकू न खा ले तब तक तो इनका मल-मूत्र भी बाहर नहीं निकलता।

रामदीन : तू चुप कर।

कमल : काका, आपको क्या जरूरत है तम्बाकू के सहारे की।

रामदीन : बेटा जब से मेरा बेटा बहू एक बस हादसे में गुजरे, तभी से यह लत पड़ी है।

कमल : तुम्हारे पोते बड़े-बड़े हो गए हैं। उन्हें सहारा बनाओ।

रामदीन : काहे का सहारा, उन्हें तो खुद सहारे की जरूरत है।

कमल : क्या कर रहे हैं आजकल प्रकाश और रमेश।

रामदीन : करना क्या ? गलियों की खाक छान रहे हैं।

कल्लू : क्यों, कबाड़ी का धंधा शुरु कर दिया क्या ?

रामदीन : मियां कल्लू, अब तो कबाड़ी का काम भी फायदेमंद नहीं रहा।

कल्लू : आपने करके देख लिया क्या ?

कमल : काका, आप काफी चिन्तित नजर आ रहे हैं। कोई विशेष बात।

रामदीन : बेटा, बच्चे बड़े हो गए हैं। पढ़े लिखे हैं लेकिन कहीं भी नौकरी नहीं मिल रही।

कमल : काका, आज यह हमारे देश की मुख्य समस्याओं में से एक है। शहरों में भी बच्चे बी.ए. एम.ए. करके बेरोजगारों की लाइन लम्बी करते जा रहे हैं।

रामदीन : बस, यही चिन्ता खाए जा रही है कि इनका भविष्य क्या होगा।

कल्लू : ये तो कोई ज्योतिषी ही बता सकता है। क्यों कमल बाबू

(तभी रामदीन का बड़ा पोता प्रकाश वहां आता है। हाथ में फाइल है जिसमें स्कूल व कॉलेज के सर्टिफिकेट हैं)।

प्रकाश : कमल भाई, नमस्कार।

कमल : नमस्कार। और क्या हाल चाल है, जनाब के।

प्रकाश : बस भाई जी, सड़क नाप रहे हैं, रोज।

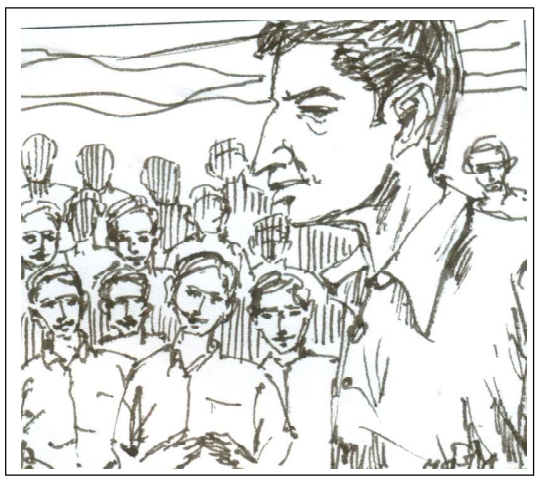

कल्लू : इंचटेप फट गया हो तो मेरे से ले लेना। लवी के मेले में खरीदा था मैंने।

रामदीन : तुझे तो हर वक्त मजाक ही सुझता है।

कल्लू : मैंने तो इसलिए कहा कि प्रकाश बाबू कह रहे हैं कि रोज सड़क नाप रहा हूं।

कमल : कल्लू मियां, तुम हर बात उल्टी ही क्यों सोचते हो।

कल्लू : मेरा कसूर नहीं है मैं उल्टा ही पैदा हुआ था।

प्रकाश : मेरा मतलब है कि नौकरी की तलाश में दर-दर भटकना।

कमल : भई प्रकाश, इंटरव्यू बगैरह भी दे रहे हो कहीं।

प्रकाश : थक गया हूं इंटरव्यू दे दे कर, एक पोस्ट के लिए 100-100 कैंडिडेट।

रामदीन : क्या हाल होगा इस मुल्क का।

कल्लू : वही होगा, जो मंजूरे खुदा होगा।

प्रकाश : आप तो डॉक्टर बन गए कमल भैया। कहीं हमारे लिए भी नौकरी देखो।

कल्लू : हां कमल बाबू इनके लिए नौकरी और मेरे लिए छोकरी।

कमल : जरूर कल्लू मियां। भई प्रकाश नौकरी देखने से तो नहीं मिलेगी।

रामदीन : इसका मतलब है, अब किसी को नौकरी नहीं मिलेगी।

कमल : नहीं, काका ऐसी कोई बात नहीं लेकिन देश की जनसंख्या इतनी बढ़ गई है कि सभी को नौकरी मिलनी संभव नहीं।

कल्लू : मुझे तो सरकारी नौकरी करने की जरूरत नहीं, मेरे तो बिना नौकरी के ठाठ है।

रामदीन : अरे कल्लू, नौकरी करने के लिए पढ़ना जरूरी है। तू तो है काला अक्षर भैंस बराबर।

कल्लू : बड़ी गलत कहावत है ये। काला अक्षर भैंस के बराबर हो ही नहीं सकता, काला अक्षर तो मच्छर के बराबर भी नहीं होता।

प्रकाश : तू बीच में अपनी चोंच बन्द रख। यहां बात भविष्य की चली है।

कमल : बेरोजगारी की सबसे प्रमुख वजह है जनसंख्या वृद्धि।

रामदीन : कमल बेटे, इस जनसंख्या बढ़ने का कारण क्या है ?

कल्लू : और जगह का कारण तो मुझे पता नहीं लेकिन इस गांव की बढ़ती आबादी का कारण मैं बता सकता हूं।

प्रकाश : क्या कारण है ?

कल्लू : वो कारण ये है कि हमारे गांव से रात को ठीक एक बजे ट्रेन जो गुजरती है।

रामदीन : तू टाइम देखकर बात नहीं करता।

कल्लू : टैम तो मैंने देखा था। बहुत बुरा है, बाप बेटे का नहीं, बेटा बाप का नहीं।

रामदीन : चुपकर, पाजी कहीं का।

कमल : जनसंख्या वृद्धि का मुख्य कारण है अशिक्षा।

(तभी वहां रामदीन का दूसरा पौत्र राकेश पहुंचता है जोकि कमल का अंतिम वाक्य सुन लेता है। राकेश स्वभाव का गुस्सैल युवक है)।

राकेश : कैसी अशिक्षा ? मैं एम. कॉम हूं लेकिन नौकरी तो दूर की बात कोई मेरे सर्टिफिकेट देखने को राजी नहीं। भाड़ में जाए ऐसी शिक्षा।

प्रकाश : राकेश की इस बात से तो मैं भी सहमत हूं। इससे तो अशिक्षित ही ठीक है जिन्हें नौकरी की चिन्ता नहीं।

कमल : देखो, इतना निराशावादी होना भी ठीक नहीं।

राकेश : निराश न हो चाचा तो करें क्या, खुशियां किस बात की मनाएं।

रामदीन (कमल से) : कह तो तुम ठीक रहे हो लेकिन यह समस्या विकराल होती जा रही है दिन प्रतिदिन।

कल्लू : क्यों न हम सभी बेरोजगारों की एक पार्टी बना लें व चुनाव लड़ कर मंत्री विधायक बन कर अपनी सभी समस्याओं से मुक्ति पा लें।

राकेश : अगर अब तुने बीच में अपनी टांग अड़ाई तो मुक्ति मैं तुझे दूंगा। (कल्लू सहम जाता है)।

कमल : हमें आपस में मिलकर इस समस्या के बारे में सोचना होगा।

कमल : जब तक देश की जनसंख्या इसी रफ्तार से बढ़ेगी, बेरोजगारी भी बढ़ती जाएगी।

राकेश : और पढ़े लिखे नौजवान गलत राह पर चल पड़ेंगे।

कल्लू : पापी पेट का सवाल जो ठहरा।

कमल : बेरोजगारी के जो मुख्य कारण है जैसे जनसंख्या वृद्धि, अशिक्षा, रिश्वतखोरी बगैरह इस पर तो एकदम अंकुश नहीं लग सकता।

रामदीन : लेकिन धीरे-धीरे तो यह समस्या कम हो सकती है।

कमल : सबसे पहले तो यह आंदोलन चलाना चाहिए कि बच्चा एक ही अच्छा, चाहे लड़की हो या लड़का।

प्रकाश : दूसरा साक्षरता अभियान कागजों पर पूरा न करके असलियत में पूरा करना होगा।

राकेश : क्या इससे हमें नौकरी मिल जाएगी ?

रामदीन : खैर। तुम्हें न मिले लेकिन आने वाले समय में तो नौकरी की गुंजाइश रहेगी।

राकेश : यहां अपनी पड़ी हुई और आपको आने वाले समय की ।

कल्लू : राकेश बाबू, जो फलदार पेड़ लगाता है वो खुद उसके फल नहीं खाता। आने वाली पीढ़ी खाती है।

प्रकाश : हमें पहले अपना रोजगार ढूंढना होगा तभी दूसरों के बारे में सोच पाएंगे।

(तभी रामदीन उठकर किसी काम से चला जाता है)।

राकेश : हमें नौकरी नहीं मिली तो हमारा क्या होगा ?

कमल : (थोड़ा चिड़ कर) नौकरी, नौकरी, नौकरी, क्या बिना नौकरी के तुम जीवित नहीं रह सकते।

प्रकाश : कैसे रहेंगे ? आप ही कहो।

कमल : जो और भी कई इतने बेरोजगार है क्या वे भूखे मर रहे हैं ।

राकेश : मर नहीं रहे हैं तो मर जाएंगे अगर रोजगार नहीं मिला।

कमल : तो रोजगार मतलब सिर्फ नौकरी करना होता है।

प्रकाश : तो रोजगार का और क्या साधन हो सकता है ?

कमल : अब असल में तुम काम की बात पर आए हो।

राकेश : वो कैसे ?

कल्लू : कमल बाबू जरा संक्षेप में समझाइए, क्योंकि मेरे पास समय की शोरटेज है।

कमल : जैसा हुक्म कल्लू आका। इतना तय है कि आज की तारीख में सभी को नौकरी मिलना संभव नहीं, यह बात सरकार भी जानती है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि नौकरी नहीं मिली तो आपके पास रोजगार नहीं।

प्रकाश : बात कुछ समझ में नहीं आ रही है।

कल्लू: कमल बाबू, बात को जलेबी की तरह क्यों घुमा रहे हो ?

राकेश : आप कहना क्या चाह रहे हो ?

कमल : बात यह है कि सरकार ने बेराजगारी हटाने के लिए कुछ योजनाएं आरम्भ की है। बेरोजगारों को काफी सुविधा दे रही है।

प्रकाश : बेराजगारी भत्ता आरम्भ कर दिया है क्या सरकार ने।

राकेश : तब तो खैर थोड़ी बात भी बन जाती।

कमल : भत्ता बगैरह तो कुछ नहीं है लेकिन आपको आसान शर्तों में व कम ब्याज में बैंक से ऋण लेने की सुविधा प्रदान की है।

प्रकाश : ऋण लेकर क्या करेंगे आप या हम ?

कमल : उससे आपका नौकरी का ख्वाब खत्म। अपना कोई भी काम शुरू कर सकते हैं।

(तभी रामदीन का प्रवेश)

रामदीन : हां, कुछ हल निकला क्या ?

कल्लू : हां, हल निकल गया बस बैल आने बाकी रहे।

रामदीन : तू चुप कर। पता सता लगता नहीं कुछ बस यूं ही बीच में टांग अड़ाता रहता है।

राकेश : हां, हमें सरकार आसान शर्तों में ऋण देगी उससे हम अपना कोई भी काम शुरू कर सकते हैं।

कमल : हां, जैसे डेयरी फार्म, मुर्गी पालन, किसी प्रकार की सहकारिता सभा व अन्य कई प्रकार के छोटे-मोटे उद्योग।

प्रकाश : हां, यह बात तो काम की हुई। अपना कोई भी व्यवसाय शुरू किया व धीरे-धीरे बैंक का ऋण भी चुकता कर दिया।

रामदीन : बेटे कमल, तुमने हमारी बहुत बड़ी समस्या हल कर दी।

प्रकाश : हां चाचा जी, आपकी सलाह से अब हम अपना ही कोई व्यवसाय आरम्भ करेंगे।

राकेश : हां, हमारे सिर से आपने नौकरी का भूत भगा दिया।

कल्लू : हां कमल बाबू नौकरी का भूत तो भगा दिया पर अब व्यवसाय का भूत इसके पीछे लगा दिया।

(सभी हंसते है)।

कविता

वैक्सीन चुनें, वायरस नहीं

जीवन रक्षा के इस अनुपम
सौभाग्य का उत्सव मनाएं।
वैक्सीन चुनें, वायरस नहीं
टीका लगवाने जरूर जाएं।।

प्राकृतिक ऑक्सीजन के
लिए पेड़ों को जरूर बचाएं।
जन्मदिन हो या कोई पर्व
एक पौधा जरूर लगाएं।।

कोरोना के शमन हेतु
जरा सावधानी अपनाएं।
घर में रहें, सुरक्षित रहें,
सोशल डिस्टैंस रखें,
मास्क जरूर लगाएं।।

अनमोल जीवन को बचाने हेतु
आज ही वैक्सीन जरूर
लगवाएं।
भीड़भाड़ से बचें, सावधानी रखें
टीका उत्सव सफल बनाएं।।

✍ गोपाल कौशल

सामान्य ज्ञान

क्रिप्टोकरेंसी क्या है?

क्रिप्टोकरेंसी एक आभासी मुद्रा है जिसे विधि ग्राह्य मुद्रा का दर्जा प्राप्त नहीं है। क्रिप्टोकरेंसी मूल्य का डिजिट स्वरूप है जिससे कारोबार किया जा सकता है और विनिमय का माध्यम है। इसे खाते की एक इकाई तथा भविष्य के लिए सम्पत्ति के भंडारण के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है, लेकिन किसी भी क्रिप्टोकरेंसी को कानूनी तौर पर उपयोग नहीं किया जा सकता। बिटकोइन सर्वाधिक लोकप्रिय एवं सर्वाधिक चलन वाली क्रिप्टोकरेंसी है। बिटकोइन के अलावा एथेरियम, रियल और कार्ड़ानो सहित 2116 से अधिक क्रिप्टोकरेंसी चलन में है जिनका सकल बाजार पंजीकरण USD 120 बिलियन के समतुल्य है। जनवरी, 2021 में भारतीय रिजर्व बैंक ने अपनी स्वयं की डिजिटल करेंसी जारी करने की योजना प्रस्तुत की है।

1 देश की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण होने के अवसर को उल्लासपूर्ण तरीके से मनाने के लिए 75 सप्ताह के 'अमृत महोत्सव' का शुभारम्भ कब किया गया है ?
2 हाल ही में आरम्भ किया गया 'कैच द रेन' अभियान किससे सम्बन्धित है ?
3 केन-बेतवा लिंक परियोजना के तहत दौधन बांध का निर्माण किस राज्य में किया जाएगा ?
4 उत्तराखंड के नए मुख्यमंत्री का क्या नाम है ?
5 वर्ष 2020 का गांधी शांति पुरस्कार किन्हें प्रदान दिया गया है ?
6 2020-21 की विजय हजारे ट्रॉफी की विजेता टीम कौन सी है ?
7 हाल ही में किस राज्य ने निजी कम्पनियों में राज्य के स्थायी निवासियों को नौकरियों में 75 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करने का निर्णय लिया है ?
8 गुप्त साम्राज्य के अन्तिम महत्त्वपूर्ण शासक का क्या नाम था ?
9. स्वतंत्र पार्टी के संस्थापक कौन थे ?
10. छान्दोग्य उपनिषद का सम्बन्ध किस वेद शाखा से है ?
11. जाद जनजाति हिमाचल प्रदेश के किस क्षेत्र में पाई जाती है ?
12. घंटा पर्वत किस सुप्रसिद्ध स्थल के नजदीक स्थित है ?
13. हाम्टा दर्रा हिमाचल प्रदेश के किस जिला में स्थित है ?
14. चन्द्रभागा घाटी के लोगों द्वारा कौन सी भाषा बोली जाती है ?
15. चीन की सीमाएं हिमाचल के किन जिलों को छूती है ?

प्रस्तुति : चन्द्रशेखर वर्मा

उत्तर- 1. 12 मार्च, 2021 को, 2. जल संरक्षण से, 3. मध्य प्रदेश, 4. तीरथ सिंह रावत, 5. बंगबधु शेख मुजीब उर रहमान, 6. मुम्बई, 7. हरियाणा, 8. स्कंदगुप्त, 9. चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, 10. सामवेद, 11. पांगी में, 12. तांदी, 13. कुल्लू, 14. मनचेत, 15. किन्नौर और लाहौल स्पीति ।

स्वास्थ्य

जीवन के लिए वरदान : स्वस्थ जीवन शैली

'है जन्म उसी का सफल यहां जिसका तन मन है स्वस्थ सदां'

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निवास होता है हम अपना शरीर स्वस्थ रखे, फलस्वरूप हमारा मन भी सदा स्वस्थ रहेगा।

सुखद, स्वस्थ और प्रसन्न जीवन जीने के तीन उपाय है कि भूत को याद मत करो भविष्य की फरियाद मत करो वर्तमान को बर्बाद मत करो प्रसन्न रहने का सूत्र भी यही है क्योंकि भूत को लौटाया नहीं जा सकता है भविष्य को लाया नहीं जा सकता है और इसी कारण वर्तमान में जीने वाला ही प्रसन्न रहता है।

वेदों में विनम्रता और विनय शीलता को मानव जीवन का आधार स्तंभ कहा गया है। ऋग्वेद में कहा गया है कि छोटे-बड़े, युवाओं और वृद्धों सबके प्रति विनम्र रहे। मनुस्मृति में कहा गया है, अहंकार से मुक्त विनम्र जीवन आयु, विद्या, यश और बल में वृद्धि करता है। और यही हमारी प्रसन्नता व खुशहाली को बढ़ाते हैं।

प्रसन्न व स्वस्थ रहने का अंतिम महत्त्वपूर्ण सूत्र जीवन एक गणित है-

'जिसमें मित्रों को जोड़ो, दुश्मनों को घटाओं, सुखों को गुणा करो व दुखों का विभाजन करो।'

स्वास्थ्य जीवन के लिए स्वस्थ आदतें : प्रातः एक गिलास गुनगुना पानी शरीर को ऊर्जावान बनाए रखता है और आप अपने दिन की शुरूआत एक गिलास गुन-गुने पानी से करें। गुनगुना पानी पीने से शरीर का मेटाबालिक रेट बढ़ जाता है जिसकी सहायता से शरीर में पूरा दिन ताजगी बनी रहती है। इससे शरीर स्वस्थ रहता है, बीमारियां दूर भागती है। हाल ही में कोरोना वायरस में भी गुनगुना पानी पीने का ही परामर्श दिया गया है। प्रतिदिन 2 लीटर शुद्ध पानी पीएं।

प्रातःकाल घूमना : प्रातःकाल जागने एवं टहलने के समय हमें शुद्ध वायु मिलती है। स्वेट मार्डेन ने कहा है यदि आप चाहते हैं कि आपकी आयु अधिक हो, बुढ़ापा दूर रहे, शरीर पूर्ण स्वस्थ रहे तो प्रातःकाल जल्दी उठा कीजिए। प्रातः घूमने के अनेक लाभ हैं। इससे शुद्ध वायु मिलती है, पाचन प्रणाली ठीक रहती है, वजन कम होता है, रक्तचाप, मधुमेह, बवासीर एवं हृदय रोगियों को लाभ मिलता है। हाथों पैरो एवं जांघों की चर्बी कम होती है। मोटापा कम होता है।

सुखद, स्वस्थ और प्रसन्न जीवन जीने के तीन उपाय है कि भूत को याद मत करो भविष्य की फरियाद मत करो वर्तमान को बर्बाद मत करो प्रसन्न रहने का सूत्र भी यही है क्योंकि भूत को लौटाया नहीं जा सकता है भविष्य को लाया नहीं जा सकता है और इसी कारण वर्तमान में जीने वाला ही प्रसन्न रहता है।

मालिश : जाड़े के दिनों मे धूप में बैठकर मालिश करें।

● अभय कुमार जैन

योग ध्यान प्राणायाम : योग का प्राचीन काल से भारत में विशेष महत्त्व रहा है। ऋषि मुनि इसके द्वारा दीर्घ जीवी होते थे। योग शरीर एवं मन के ताल-मेल को बनाये रखने में सहायक होता है और इसलिए भारतीयों के लिए यह शरीर को निरोगी रखने के लिए सर्वाधिक अनुकूल एवं उपयोगी है। सामान्यतः योगासनों के साथ-साथ ध्यान व प्राणायाम भी किया जाता है।

ग्रीन टी : ग्रीन टी में मौजूद एंटी आक्सीडेन्ट आपके शरीर के विषाक्त तत्त्वों को बाहर करते हैं और शरीर के विषाक्त तत्त्वों को ग्रीन टी न सिर्फ वजन कम करने में सहायक है बल्कि इससे सिर दर्द की समस्या से भी छुटकारा मिलता है।

जर्नल ऑफ दी अमेरिकन कॉलेज ऑफ न्यूट्रीशन के मुताबिक ताजा अध्ययन के मुताबिक ग्रीन टी में मौजूद अमीनों अम्ल सर्दी जुकाम से सुरक्षा देता है। जापान के वैज्ञानिकों ने अध्ययन में पाया कि ग्रीन टी दांतों को मजबूती देने में सक्षम है। वैज्ञानिको के अनुसार इसमें मौजूद एंटी माइक्रो बियल एंटी आक्सीडेंट दांतों की सड़न के लिए जिम्मेदार बेक्टीरिया का सफाया करते हैं।

धूप का सेवन : धूप न सिर्फ हड्डियां मजबूत बनाती है बल्कि यह कैंसर, पाइल्स, टी.बी, आर्थराइटिस, एजिंग, मोटापा घटाते हुए रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मददगार है। सूर्य की किरणों में स्वास्थ्य संवर्धन और रोगों को नाश की अद्भुत शक्ति होती है। जिस तरह पौधों के विकास में फलने-फूलने हेतु सूर्य प्रकाश की नितांत आवश्यकता होती है। यह सर्वविदित है कि सूर्य विटामिन-डी का सबसे सहज, सरल, सुलभ बेहतरीन स्रोत है।

पर्याप्त नींद : कई रिसर्च अध्ययनों से यह बात सामने आई है कि जो लोग 7 घंटे से कम नींद लेते हैं वह अस्वस्थ रहते हैं। अच्छी पर्याप्त नींद अच्छी सेहत के लिए बहुत जरूरी है। अनिद्रा के कारण अनेक प्रकार के रोग हो सकते हैं। जिन लोगों की रात में नींद पूरी न हो उन्हें दिन में कुछ देर आराम करना चाहिए।

पौष्टिक व स्वादिष्ट आहार (हरी सब्जियां व फल) : फल और हरी सब्जियां खाने से जहां कैंसर से बचाव होता है वहीं दिल से जुड़ी बीमारियों का खतरा भी कम होता है। पालक, टमाटर का सूप लें, सलाद जरूर खायें।

धूम्रपान मद्यपान व नशीली दवाओं से दूरी : आज के प्रचलित नशों में धूम्रपान, मद्यपान, पान, पाउच, जर्दा यह सभी नशे असमय मृत्यु व जानलेवा बीमारियों के कारण है। धूम्रपान का धुंआ न सिर्फ धूम्रपान करने वाले को अपितु आसपास के विशैले तत्त्वों के कारण त्वचा में झुर्रियां होने लगती है। व्यक्ति समय से पहले बूढ़ा लगने लगता हैं।

एकांत में रहे एवं आध्यात्मिक बने : मनुष्य को कुछ समय एकांत में भी व्यतीत करना चाहिये। इससे हमें सोचने, समझने व सही निर्णय लेने में सहायता मिलती है। कुछ देर संगीत सुनें।

वेगों को न रोके : मल, मूत्र, आंसु, शुक्र, प्यास, भूख, अधोवायु, वमन, छींक, डकार, उबासी किसी भी शारीरिक वेग को रोकने का प्रयास न करे अन्यथा आप कई बीमारियों के शिकार हो सकते हैं।

कविता

डरो न, दूर भगाओ कोरोना

शांति रखो धीरज धरो, निर्देशों का पालन करो।
मानो प्रधानमंत्री जी का कहना, घर से बाहर नहीं निकलना।
अति जरूरी पड़े निकलना, मास्क लगा कर घर से चलना।
करो नमस्ते रख कर दूरी, हाथ मिलाना नहीं जरूरी।
घर आ कर आलस्य करोना, अनजाने आ सके कोरोना।
सबसे पहले धोना हाथ साबुन मल-मल करना साफ।
मल सकते हो सैनीटाईजर, फिर ना रहे कोरोना का डर।
टीका सब लगवाना भाई, न हो इसमें कोई ढिलाई।
सावधानी और साफ, सफाई, बचने की बस एही दवाई।

सावधान

हो जुकाम खांसी और ज्वर, श्वास कष्ट हो दर्द गले का,
सूचित करो डॉक्टर को झट, घर उपचार नहीं चलेगा।
लक्षण ये हो सकते घातक, कोरोना ग्रसित हो सकता जातक।
अस्पताल में रहना होगा, तब होगा इसका उपचार,
अनुशासन का पालन करके, स्वस्थ बनो रोको विस्तार।
डरो ना, डरो ना, दूर भागेगा कोरोना, जरूर भागेगा कोरोना।

● जगदीश कपूर

प्रेरक प्रसंग

आइसोलेशन

रवि कोरोना से ग्रसित होने के बाद उपचार के लिए हॉस्पिटल में दाखिल था। वहां 15 दिन के लिए आइसोलेशन में रहा। इस दौरान बिताए गए समय में उसे कचोट रहा था वह छोटा सा कमरा जिसमें नाम मात्र की सुविधाएं थी। ना किसी से मिलना जुलना। न ही किसी से बातचीत करना। इन 15 दिनों में उसे अपनी मां की याद आई जिसे वह अपनी पत्नी की जिद्द पर वृद्धाश्रम में छोड़ कर आया था।

अकेलेपन के दर्द को रवि अब गहराई से महसूस कर रहा था। रवि की पत्नी रेखा और उसकी मां में आए दिन किसी ना किसी बात को लेकर नोक-झोंक होती रहती थी। इसी के चलते रेखा ने रवि पर अपनी मां को वृद्धाश्रम में छोड़ने का दबाव बनाया था।

आज रवि कोरोना से ठीक होकर अस्पताल से बाहर निकला तो वह सबसे पहले वृद्धाश्रम में अपनी मां से मिलने पहुंचा। रवि को देखते ही मां की आंखें छल-छला गई।

रवि मां से लिपटकर बोला, 'मां मैं आपके वृद्धाश्रम में रहने के अकेलेपन के दर्द को समझ गया हूं। आज मैं आपको अपने साथ घर वापस ले जाने आया हूं।'

रेखा घर पर, अस्पताल से रवि के वापिस आने का इंतजार कर रही थी। जब उसने रवि के साथ मां को भी देखा तो वह अचंभित रह गई।

रवि ने अपनी मां का हाथ पकड़ रखा था। मां की ओर देखते हुए रवि ने रेखा से कहा, 'आज मेरे साथ मां के आइसोलेशन पीरियड का भी अंत हो गया है। आज से मां भी अपने परिवार के साथ रहेंगी।'

✍ विजय लक्ष्मी

लेख

दादा जी कैसे होते हैं

✍ डॉ. महेश परिमल

इस कोरोना काल में हमने जान लिया, क्या होता है घर में बुजुर्गों का होना। घर में बार-बार याद किया जाता रहा दादा-दादी को, नाना-नानी को। बच्चों को इसीलिए आश्चर्य होता है कि कैसे दिखते होंगे दादाजी या दादीजी। शायद इसी जिज्ञासा को शांत करने के लिए बच्चे ने दोस्त से पूछ लिया .....

यह बात कोरोना काल के पहले की है। क्लास में जब टीचर ने पूछा कि कौन-कौन अपने दादा-दादी या नाना-नानी के साथ रहता है। तो केवल एक स्टूडेंट ने हाथ उठाया। सभी अपने उस साथी को आश्चर्य से देखने लगे। जब उस स्टूडेंट से कहा गया कि दादा-दादी के साथ रहने का अनुभव सुनाए, तो बच्चे ने कई किस्से सुनाए, जिन्हें सुन सभी खुश हो गए।

जब छात्र अपनी सीट पर बैठा, तो उसके बगल में बैठने वाले साथी ने पूछा-दादाजी कैसे होते हैं? तब उसने जवाब दिया -दादाजी बिलकुल पापा की तरह ही होते हैं, परन्तु कुछ मामलों में उनसे भी अच्छे होते हैं। मुझे बहुत प्यार करते हैं। हां, तब बुरा लगता है, जब वे पापा को भी कभी-कभी डांट देते हैं। यह सुनकर साथी को बहुत आश्चर्य हुआ।

क्या पापा भी गलती करते हैं? उन्हें भी कोई डांट सकता है? सचमुच दादा यानी बहुत बड़ी शख्सियत का नाम होगा।

तो यह किस्सा है हमारी सिमटती हुई जिंदगी का। पहले जिंदगी दोनों हाथों के दायरे से भी बड़ी हुआ करती थी। उसमें विस्तार था। जिसमें पूरा परिवार समा जाता था। एक ही घर में सारे रिश्ते-नाते जुड़े होते थे। धीरे-धीरे जिंदगी सिमटती गई। लोग कम होते गए। परिवार के सदस्यों की संख्या कम होने लगी। अधिकतम दो संतानों वाले परिवार बढ़ते चले गए। किसी-किसी घर में एक ही संतान होने लगी। इधर लोग कम होने लगे, उधर लोगों की जरूरतें बढ़ने लगीं। सारे रिश्ते अंकल-आंटी तक सिमट गए। गांव से यदि बाबूजी अपने बेटे के पास कुछ दिनों के लिए आ गए, तो बेटे को बताना पड़ता है कि कजिन आए हुए हैं। पिता को पिता कहने में शर्म जो आती है।

पर जब बच्चों का सामना अपने दादा-दादी से होता है, तो वे उन्हें बहुत अच्छे लगते हैं। उनका दुलारना बच्चों को खूब भाता है। जब अपने पोपले मुंह से बच्चों से प्यार से बातें करते, तो बच्चों को अच्छा लगता है। उनकी बातें भी बहुत प्यारी और भली होती हैं। वात्सल्य उनकी बातों में झलकता था। डांटना तो उनके शब्दकोश में होता ही नहीं था। बड़ी से बड़ी शरारतों के बाद भी उसे अनदेखा करते हुए कुछ ऐसा कहते कि बच्चों को अपनी शरारतों पर शर्म आती, जिसे बाद में वे न दोहराने का संकल्प ले लेते थे।

दादा-दादी कुछ दिनों के लिए ही आते, तब बच्चों के दिन बहुत ही अच्छे से गुजरते। उनके जाने के बाद फिर वही उदासी। पापा-मम्मी की नौकरी, दोनों शाम को थके-हारे लौटते, तब उनमें इतनी भी ऊर्जा नहीं होती कि बच्चों के साथ प्यार से बातें करते हुए उनके साथ खेलें। बच्चों का समय भी अपने होमवर्क, ट्यूशन और कोचिंग में कट जाता।

इन हालात में वे बच्चे दूसरे बच्चों के लिए विशेष होते हैं, जो अपने दादा-दादी के साथ रहते हैं। इन बच्चों में एक अनदेखा अनुशासन होता है, जिसे वे अपने बुजुर्गों से अनायास ही प्राप्त कर लेते हैं। इन बच्चों में जो प्रतिभा निखरकर सामने आती है, वह भी अपने-आप में बेजोड़ होती है। ये बच्चे पूरी क्लास में कुछ अलग ही रुचियों के साथ सामने आते हैं।

चूंकि इन बच्चों का काफी वक्त अपने बुजुर्गों के साथ गुजरता है, इसलिए कुछ बेबाक भी होते हैं। उनकी जो फरमाइश माता-पिता पूरी नहीं करते, वे दादा-दादी से पूरी हो जाती है। ये बच्चे सभी के साथ रहते हुए कुछ विशेष बातों में अपना अलग ही प्रभाव छोड़ते हैं। इसलिए अपने दादा-दादी से वंचित बच्चे का यह पूछना स्वाभाविक है कि दादाजी कैसे होते हैं?

इस प्रश्न का उत्तर सहज नहीं है। बच्चे द्वारा पूछा गया इस सवाल का जवाब बहुत ही कठिन है। कठिन इसलिए कि यह सहजता से पूछा गया है। वास्तव में सरल होना ही बहुत कठिन काम है। आज के हालात में घर में दादा-दादी का होना आश्चर्य की बात है। पर यदि वे हैं, तो समझो, घर का हृदय धड़क रहा है। सभी की सांसों का स्पंदन बड़े-बुजुर्गों में समा जाता है। उनका होना ही घर को बहुत बड़ी राहत देता है।

बच्चों के जन्म दिन पर बुजुर्ग ही सबसे बड़े सलाहकार होते हैं। घर में दादी होने का मतलब ही है कि रसोई में स्वादिष्ट व्यंजन का बनना। अचार-बड़ी-पापड़ का होना। बच्चों की सेहत को देखते हुए घर में ठंड के लड्डुओं का बनना। किस बच्चे को क्या पसंद है, यह बच्चों की मां से ज्यादा दादी को पता होता है। बच्चों की छोटी-छोटी बीमारियों में दादी मां के नुस्खे ही काम आते हैं। इसीलिए बच्चों के लिए पहले दादा-दादी होते हैं, मम्मी-पापा बाद में।

कई बच्चों के लिए उनके दादा-दादी या तो गांवों में हैं, या फिर तस्वीरों में, रही-सही कसर वृद्धाश्रमों ने पूरी कर दी है। पर अब यह सुनकर अच्छा लग रहा है कि दो अनाथ युवक-युवती ने शादी के बाद वृद्धाश्रम जाकर वहां से अपने लिए माता-पिता ले आए। एक अच्छी परंपरा की शुरुआत हुई। इधर दो अनाथ, उधर दो बेसहारा, ये सभी मिलकर बने एक परिवार का हिस्सा। जहां सभी अपने बन जाते हैं, एक-दूसरे का सहारा। इन सभी के अपने छोटे-छोटे दुःख, जो आगे जाकर सभी की खुशियों में तब्दील हो गए। बेसहारों को मिला सहारा। पराए बन गए अपने। बस गया छोटा-सा आशियाना। जहां खुशियां एक-दूसरे का इंतजार करती रहती हैं।

इस कोरोना काल में हमने जान लिया, क्या होता है घर में बुजुर्गों का होना। घर में बार-बार याद किया जाता रहा दादा-दादी को, नाना-नानी को। कई बार उन सबकी कमी बेहद खली। कभी जन्म दिन पर, तो कभी त्योहार पर। कई संस्कार मम्मी भूल गई और कई पापा को याद नहीं रहे। आखिर कितने साल हो गए, घर और घरवालों से दूर हुए। कहां तक याद रखा जाए। इसलिए बड़े परिवार में सबके साथ रहना आज की पीढ़ी के लिए बहुत मुश्किल होता जा रहा है।

बच्चों को इसीलिए आश्चर्य होता है कि कैसे दिखते होंगे दादाजी या दादीजी। बच्चों के लिए ये पोपले मुंह वाले लोग एक तरह से अनजाने ही हैं। शायद इसी जिज्ञासा को शांत करने के लिए बच्चे ने दोस्त से पूछ लिया-कैसे होते हैं दादाजी...?

पहाड़ी भाषा कनै साहित्य लोक मंच

गिरिराज साप्ताहिक, शिमला, 28 मार्च, 2021

परेरणा री गल्ल

मां रे तिन गैहने

● रमेश कुमार वर्मा

ठकुर दास नामक वयोवृद पत्नी तथा बच्चे साथी कलकता छोड़ी रो मोदीनगर जिले रे एकी गांवा में रोने लगे। दो रुपये री नौकरी सई परिवार रा निर्वाह तीनों प्राणी बड़ी कठिनाई से कर पाते थे। कुछ अर्से बाद बाद ठाकुर दास पत्नी ओर इकलौता बच्चे छोड़ी रो संसारा दे चल बसे। पत्नी रे कांधा पांदे परिवार रा बोझ आई गौआ। एकी दिना बेटा राती रे समय बैठी रो मां रे पैर दबादें इनो सई बातें कर रहा था,

''मां। बड़ा ओई रो मैं पढ़ी लिखी रो विद्वान बनूंगा ओर तारी बहुत सेवा करुंगा।

मां बोली, ''कशी सेवा करनी मेरी ?'' बहुत कष्ट सहन करी रो तुम मुझे पढ़ा रही हो मां मैं कमाने लगूंगा तब तुमो खौ अच्छा-अच्छा खाना खिलाऊंगा और हां, तुमो खै अच्छे कपड़े-गहने भी लाऊंगा।''

मां बोली पर मेरे गहने मेरी पसंदा रे ओने चाहिए। आऊं चाऊ आए की गांव में एक अच्छा स्कूल हो, दवाखाना हो ओर तीसरा गहना असो कै निर्धन, असहाय बालकों को खाने-पीने और पहनने री सुविधा ओ।'' बालके जब यह सुना तो सै भाव-विभोर ओई गौआ। उसी दिना दे मां री खातिर तीन गहनों (आभूषणों) खै बनवाने री धुन मैंय राती-दिना परिश्रम किया। पढ़ाई समाप्त करी रो उच्च पदा पांए आसीन ओआ। मां खै दिए वचन उसने निभाया। आपने पुत्र द्वारा दिए तीन आभूषणों सई मां बहुत खुश ही नहीं, बल्कि गौरावान्वित भी ओई। ये महापुरुष ओर कोई नहीं ईश्वरचन्द विद्यासागर थें।

रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद' दी दो कबतां

अलख जगाई

पौऐ न कुसी पर, औक्खी-भारी।
धोण धोंदी, मुकद्दमा-बीमारी।।
इन्हां ते बची के रैहणा।
मन्ना तुसां, मेरा कहणा।।
भाऊ। दब्बी के कमाणा।
कनें तुसां, रजी के खाणा।।
सियाणियां री मनणी सिख।
मंगणी नीं कदीं भी भिख।।
खून-पसीने री कमाई।
खरी हुन्दी, मेरे भाई।।
बेहले ते तां बेगार भली।
फिरना नीं तुसां गली-गली।।
रुक्ख लगाणे, दुःख मिटाणे।
बोलदे हन लोक सियाणे।।
घर-बाहर रखणी साफ़-सफाई।
बोले 'प्रसाद' अलख जगाई।।

चिट्ठियां

लैटरबक्स मंझ
पेईयां चिट्ठियां
बेअंत सुख-दुःख वाली
अणमुक चिट्ठियां
पर कोई
कुसी कन्नें
गल्ल नीं करदी
सब्बो किल्लियां-किल्लियां
अपणी मंजिल पर
पुजणे रा इंतजार
करदिया हन
कदेया ऐ
ऐह इकट्ठ
दूजे कन्नें
न हस्सणा न रोणा
क्या असां भी
लैटरबक्स रीयां
चिट्ठियां
बणी गए हन ?

गीतो-गजलो रा प्रसंग छिड़ा तो कार्यक्रम संचालके पहाड़ी रे पोईलके गजलकार 'पहाड़ी मृणाल' आचार्य चन्द्र मणि वशिष्ठ री सोहणी गजल 'आखी मूले जु गेरे ओसो/तेरी यादो रे डेरे ओसो/ खाई ना शैं लाई ना बातोध हामें जाणै तुमे जेरे ओसो' शणाणे दी बाद आपणी कविता 'केरखे होटे सेजड़े दिन केरखी हुटी रातो...' भिटका सिमटदी लोक संस्कृति पांदे चिंता प्रकट कोरी। प्रताप पराशरो री ऊक रेकी कविता 'जोबे-जोबे पोड़ो बाटो दी रातो/चिते आव तैबे बाबा री बातो' बी खूब पसंद की गोय।

कुणे पुरखे बाणी रे बेटी पराय धोनो

● आचार्य ओमप्रकाश 'राही'

हिमाचल कला संस्कृति रो भाषा अकादमी पाछले सालो दा उबा आपणा online फेसबुक कार्यक्रम कोरांवदी लाग रेय जिंदे भाँति भाँति रे कार्यक्रम होंदे लागी रे। इयों शृंखला री 285 वीं कड़ी दा अकादमीए पाछले दिनो सिरमौरी कवि सम्मेलन रा आयोजन कराया जिंदा बेहतरीन कविता रा पाठ होआ रो शुणणु वाले खूब दाद दिती। कार्यक्रमो री खास बात ए बे थी जे सवा घंटे रा सारा प्रोग्राम ठेठ सिरमौरी दा चाला रो कवि लोके जू कविता या गीत शुणाए तिंदा समाजो के किये न किये आछा संदेश बी छुपा होंदा थिया ।

सोभी दे पोयले शिलाई रे प्रताप पराशरे 'खेऊड़ो फूको एशी पढ़ाय/जोबे न झुरला भाई के भाय' शानदार कविता शोणाय रो बेगी सोहणा संदेश दिता। तहसील नौहरा रे लाणाचेता दे जुड़े नरेन्द्र चौहाने 'खोरा थिया आं तोबे/ब्याव न थिये मेरा जोबे। एबे होय गिया मेरा ब्याव/धेई ला तुमे मूं बे शाव' हास्य रसो री कविता शणायो खूब दाद पाय।

पेशे शी वकील शिलाई री ही उषा देसाईके जोबे आपणे मिठड़े सुरो दी गीते लाई 'कूणे पुरखे बाणी ए बेटी पराय धोनो' शानदार कविता शणाय तो संचालको बोलणो पोड़ो जे 'तेरी बांठिया कविता ए जीती पाया म्हारा मोनो'। 'दोहा' विधा दी आपणी पछाण बणाय चुके अनन्त आलोके बाँठिये दो-चार दोहे शणाणे दे बाद 'जेये बोणे रोआ बोड़ा मोकान/कोठी बोणी रैय आलीशान/भोऊते देसो री बातो नी एथी/ऊथे थी मेरे बाबा री छान' शणायो सोभी रा दिल जीती पाया ।

भाषा अकादमीए कोराया सिरमौरी कवि सम्मेलन

राजगढ़ो शी जुड़ी स्नेहा शर्मा ए 'खोरा थिया बाँठिया दाड़िये से म्हारा निफिकरा बचपनो' आपणी शानदार कविता भिटका जू गजब रा वर्णन कोरे राखा था तिंदे आपणे मिठड़े सुरे चार चाँद लाय दिये। तेईदे आगड़े फागू (शाया) दे जुड़े शिरगुलो रे आगू शेरजंग चौहाने 'बैदा बोलो सूरतसिंहा तेरी लाणी म्हारे बातो रे/देशो री ताँई रूलदा फिरा दिन देखे ना रातो रे' आपणी कविता भिटका पझौता आन्दोलनो रे कर्णधार वैद सूरतसिंहो रे त्याग रो बलिदानों रा सोहणा वर्णन किया। आपणे पहाड़ी गीतो के मशहूरी हासिल कोर चुके दिलीप वशिष्ठे आपणे गीतो 'शुणो मेरे गीताँगी भाईयो नैशे रे गीत गाओ ना/शुणो मेरे म्हाटड़े छोरूआ आदती बुरी तुमे लाओ ना' भिटका सोहणा संदेश बी दिता।

गीतो-गजलो रा प्रसंग छिड़ा तो कार्यक्रम संचालके पहाड़ी रे पोईलके गजलकार 'पहाड़ी मृणाल' आचार्य चन्द्र मणि वशिष्ठ री सोहणी गजल 'आखी मूले जु गेरे ओसो/तेरी यादो रे डेरे ओसो/ खाई ना शैं लाई ना बातो/ हामें जाणै तुमे जेरे ओसो' शणाणे दी बाद आपणी कविता 'केरखे होटे सेजड़े दिन केरखी हुटी रातो...' भिटका सिमटदी लोक संस्कृति पांदे चिंता प्रकट कोरी। प्रताप पराशरो री ऊक रेकी कविता 'जोबे-जोबे पोड़ो बाटो दी रातो/चिते आव तैबे बाबा री बातो' बी खूब पसंद की गोय। अकादमी रे सचिव डा.कर्मसिंहे आपणे संदेशै भिटकी आजो रे एसी सिरमौरी कवि सम्मेलनो री खूब तारीफ की। कार्यक्रमो री सफलता रा अंदाजा एनीए ब लागो जे एथी देखणी/शुणणी वाले पचाशो लोके आपणे कमेंट देय रो खूब तारीफ की। हिमाचल ही नहीं पर श्रीनगर यूनिवर्सिटी दी प्रोफेसर उषा त्रिपाठी रो कनाडा दे जुड़े दर्शक/श्रोता योगेश ममगाई होरीए भी एनी रा खूब आनंद लोआ। कुल मलायो ए आयोजन शानदार रोहा जेनीके आपणी रचना पोढणो वाले रचनाकारो के भोत-भोत बधाय।

कबता

सिरे सज्जियो सरताज है कबता

● रमेश चन्द्र 'मस्ताना'

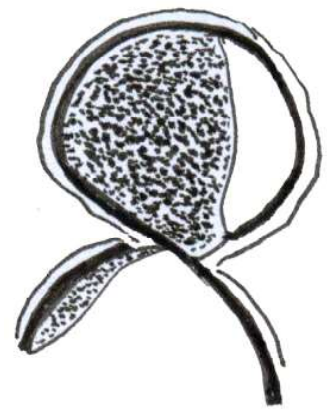

कबियां दी छैल खुराक है कबता,
जादू-दी कलम-दुआत है कबता
ठण्डी तां मिट्ठी खाबां भरिइयो,
बांकी सौह्णी सौगात है कबता।

चीलां दी सां-सां छलैं-छल पांणी,
कुदरता दी करामात है कबता।
रिड़ियां-रिड़ियां डंगरे जे चुगदे,
सप्पड़ सीण्डी सौगात है कबता।

बसन्त बहारां दी खुशबू-रौणक,
सौंणी-भ्हादों बरसात है कबता।
बसाख तां जेठे दी गर्म लुआ-च,
ठण्डा-मिट्ठा जज्बात है कबता।

दिनैं दपैहरां संझा तरकालां,
कम्मां दी काईनात है कबता।
कदीं न्हेर-मन्हेरियां ओआंसीं,
कदीं तां चांनणी रात है कबता

चुल्हा तां चौंका लकड़ू छड़ोऊ,
घह्रे-च रसोई खास है कबता।
कड़छी तां चम्मचा थाली गलास,
चकला बेलणा परात है कबता।

सुहाग भ्हयागड़े घोड़ियां गालीं,
शगणां भरिइयो परात है कबता।
बैंड बाजे बरासूई पटारी,
बांकी सज्जियो बरात है कबता।

हत्थां-च मैंहन्दी पैरां झांझर,
छणमण करदी छगराट है कबता।
सुहागणा दे-न सोलहा शिंगार,
संजोगी सुहागरात है कबता।

कांगड़ा भौण चण्ड-मुण्ड चमुण्डा।
जगै जोत ज्वाला मात है कबता।
कुनाले-च बैठी कुनाल पत्थरी,
शिव माह्राज बैजनाथ है कबता।

शेर-ओ-शायरी छन्दी बछन्दी,
बाह-ओ-बाह दी दाद है कबता।
प्हाड़ी बोलियां दी शान नराली,
सिरैं सज्जियो सरताज है कबता।

घरत अम्बर दे कुदरती नजारे,
सुख-चैनां दी सौगात है कबता ।
'मस्ताना' इह-दे कितणे गुण गणां,
नायाब आबेहयात है कबता।

कबता

करोने दी गल

● सोनू अवस्थी

सारयां लोकां च हुन इको ही गल
इस करोने दा नी कोई हल....

कनक भू ग्ये चकोई ,
फोनां दे रिचार्ज गे होइ ,
मित्रां रिस्तेदारां ने कर दे गल ,
काल्लू निकलगा इस करोने दा हल..

सरकारी साहबा भी लाइ तेया जोर ,
खराब न हो हिमाचल च माहौल ,
हाली घर बैठी की है इदा उपचार ,
एहि ग्लान्दी हाँदी सरकार....

दो गजां दी दुरी, है बड़ी जरुरी ,
जाल्लु बाहर जाना मास्क जरूर लाना,
कने हाथ कुसी ने नई मिलाना..

पुलिस, डॉक्टरां भी जिमेदारी निभाई,
इस कर्जे दी नी होनी उम्र भर भरपाई
हांदे भी हेन कुछ अपने संस्कार,
इना जो हांदा दिल ते नमस्कार ...!!

निक्की कथा (कुल्लुवी बोली)

नाउली

● डॉ. देव कन्या ठाकुर

टीकम राम थी आउतरा, घौणे ग्रां मौझे केला रौहा थी। रिश्तेदार ता बोहु थी, पर सेब थी लालची। एंदे रौहा थी आशी न कि खापरा किछ ता देला। पर बोला सी कि 'आउतरे री बैंइठ, कोइही री केंइठ' टीकम राम री कंजूसी री गला रे चर्चे घौरा-घौरा न होआ थी। आपणे खून पसीने सेंही छेता खौला न नाज़े रे ढेर लाये धे थी तेईये। लोका वे देणे वे औणख होआ थी। एक वॉक्त एंडा थी कि पूरे ग्रां न कौणक काटिया न बाद शाढ़ा रे महीने न हर घौरा न नाउली होआ थी। एबे ग्रां रा ता शहर बणु। लोका एबे दुकाना न आणा सी पीठे री बोरी, होर

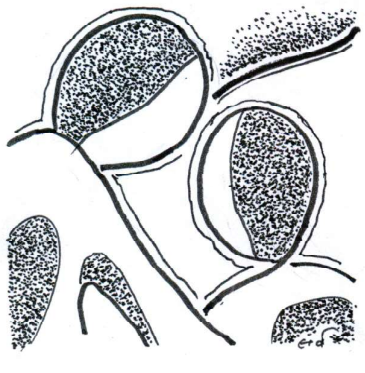

आपणे-आपणे परिवार रज़ेया सी। एबे ग्रां न एकी घौरा न होआ थी नाउली, जो वोर्शा न एकी रोज पूरा ग्रां रजेया थी। सौ थी टीकम राम रा घौरा । औज भी सारे ग्रांई नाउली खांदे आये दे थी। भटुरु होर पॉन्ज चौकणा संगे खीर भी बणी दी थी।

'आगू देईये'
'आगू देईये'

टीकमू सामणे लोका खांदे लागी रे थी होर पीठ फेरिये बोलदे भी लागी रे थी 'आउत्तरे री बैंईठ, कोइही री केंइठ'।

बद्री सिंह भाटिया के निधन पर शोक

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने राज्य के प्रसिद्ध लेखक और साहित्यकार बद्री सिंह भाटिया के निधन पर शोक व्यक्त किया। बद्री सिंह भाटिया का गत दिनों दिल्ली में निधन हो गया।

बद्री सिंह भाटिया सोलन जिले के अर्की क्षेत्र के निवासी थे। उन्होंने कविता, उपन्यास और लघु कथाओं पर सोलह से अधिक पुस्तकें लिखी हैं। वह वर्ष 2005 में सूचना एवं जन संपर्क विभाग के प्रकाशन, हिमप्रस्थ संपादक के पद से सेवानिवृत्त हुए थे।

मुख्यमंत्री ने ईश्वर से दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करने और परिवार के सदस्यों को इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की। निदेशक सूचना एवं जन सम्पर्क हरबंस सिंह ब्रसकोन और विभाग के अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों ने भी बद्री सिंह भाटिया के निधन पर शोक व्यक्त किया।

पत्रकार चंचल पाल चौहान के निधन पर शोक व्यक्त

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने वरिष्ठ पत्रकार और इकोनोमिक टाइम्स, नई दिल्ली के डिप्टी एडिटर (फीचर) चंचल पाल चौहान के निधन पर शोक व्यक्त किया है। वह हिन्दुस्तान टाइम्स के राष्ट्रीय संपादक चेतन चौहान के भाई थे। चंचल पाल चौहान जिला शिमला के कोटखाई क्षेत्र के निवासी थे।

चंचल पाल चौहान ने हिन्दुस्तान टाइम्स और द इंडियन एक्सप्रेस के लिए शिमला और चंडीगढ़ में अपनी सेवाएं देने के उपरांत दिल्ली में भी विभिन्न मीडिया संगठनों के साथ कार्य किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि चंचल पाल चौहान के निधन से राज्य ने एक अनुभवी और उत्कृष्ट पत्रकार खोया है। उन्होंने परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति और शोक संतप्त परिजनों को इस अपूर्णीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

सर्दी के मौसम में कम वर्षा के कारण प्रदेश में 10820.5 लाख रुपये का नुकसान

मुख्य सचिव अनिल खाची ने प्रदेश में सूखे जैसी स्थिति की सम्भावना से निपटने के लिए विभिन्न जिलों की तैयारियों की समीक्षा के लिए गत दिनों शिमला से वीडियो कान्फ्रेंस के माध्यम से उपायुक्तों से बातचीत करते हुए कृषि, बागबानी और संबद्ध विभागों को निर्देश दिए कि स्थिति से निपटने के लिए जिला स्तर पर कार्य योजना तैयार की जाए।

उन्होंने कहा कि वर्तमान में प्रदेश में पेयजल आपूर्ति सामान्य है लेकिन इस वर्ष कम वर्षा होने के कारण कृषि क्षेत्र को नुकसान पहुंचा है। उन्होंने कहा कि मौसम की परिस्थितियों पर नजर बनाए रखने के लिए समूहों का गठन किया जाए और कृषि विभाग को मौसम व फसल की स्थिति पर डेटा एकत्र करना चाहिए ताकि राज्य आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण को सहायता प्रदान की जा सके।

स्थिति से निपटने के लिए कृषि व बागबानी विभागों को कार्य योजना तैयार करने के निर्देश

मुख्य सचिव ने जानकारी दी कि जिलों से प्राप्त जानकारी के अनुसार कम वर्षा के कारण प्रदेश के कुल 413134 हेक्टेयर फसल क्षेत्र में से 146508 हेक्टेयर क्षेत्र प्रभावित हुआ है जिससे 10820.57 लाख रुपये का नुकसान हुआ है। प्राप्त जानकारी के अनुसार सर्वाधिक नुकसान बिलासपुर जिले में हुआ है जहां कुल 28020 हेक्टेयर फसल क्षेत्र में से 20280 हेक्टेयर क्षेत्र को नुकसान पहुंचा है।

इस प्रकार जिले में 3259.37 लाख रुपये का नुकसान हो चुका है। चम्बा जिले में 3571 हेक्टेयर फसल भूमि को नुकसान हुआ है जिससे 815.58 लाख रुपये का नुकसान पहुंचा है। इसी प्रकार अन्य जिलों में भी फसल क्षेत्र को नुकसान होने की जानकारी प्राप्त हुई है।

श्री अनिल खाची ने कहा कि कम वर्षा होने से जल शक्ति विभाग की भी विभिन्न योजनाएं प्रभावित हुई हैं। विभाग की कुल 9526 योजनाओं में से 401 योजनाओं को 25 प्रतिशत तक, 197 योजनाओं को 25 से 50 प्रतिशत तक, 87 योजनाओं को 50 से 75 प्रतिशत तक जबकि 28 योजनाओं को 75 प्रतिशत से अधिक क्षति हुई है। उन्होंने कहा कि इस समस्या के समाधान के लिए जल शक्ति विभाग को सम्बन्धित क्षेत्रों में जल आपूर्तिकर्ता चिन्हित कर परिवहन की दरें निर्धारित करनी चाहिए ताकि आवश्यकता होने पर प्रभावित क्षेत्रों में पेयजल की आपूर्ति की जा सके।

उन्होंने हैंड पम्पों से जल निष्कासन को रोकने के लिए इनकी मुरम्मत करने और सभी पारम्परिक व निजी जल स्रोतों के उचित रख-रखाव के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक जल स्रतों की समुचित सफाई की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि इस कार्य में पंचायती राज संस्थाओं के प्रतिनिधियों की सहभागिता भी सुनिश्चित बनाई जाए। उन्होंने कहा कि पंचायती राज संस्थाओं के प्रतिनिधियों को जल संरक्षण के तरीकों के बारे में शिक्षित किया जाना चाहिए।

मुख्य सचिव ने कहा कि वर्तमान में किसी भी जिले में पशु चारे की कमी नहीं है लेकिन पशुपालन विभाग को अभी से लेकर सभी प्रकार की तैयारियां कर लेनी चाहिए ताकि किसानों को किसी असुविधा का सामना न करना पड़े। पशु रोगों की रोकथाम के लिए उन्होंने कार्यशील मोबाइल वैटेनेरी यूनिट तैयार रखने के निर्देश देते हुए कहा कि मृत पशुओं को दबाने के लिए उचित स्थल निर्धारित किए जाएं। उन्होंने मुख्य चिकित्सा अधिकारियों को प्राथमिक चिकित्सा केन्द्रों के स्तर पर आपातकालीन मेडिकल टीमें गठित करने के निर्देश दिए ताकि जल जनित रोगों के कारण किसी भी प्रकार की महामारी होने की स्थिति से निपटा जा सके। श्री अनिल खाची ने वन विभाग को निर्देश दिए कि उन क्षेत्रों की सूची तैयार की जाए जहां जंगलों में आग लगने की अधिक सम्भावना रहती है ताकि ऐसे क्षेत्रों की निगरानी के लिए श्रमशक्ति तैनात की जा सके। अतिरिक्त मुख्य सचिव निशा सिंह एवं जेसी शर्मा, कृषि निदेशक नरेश ठाकुर, बागबानी निदेशक जेपी शर्मा सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित थे।

कोविड सैंपल जांच बढ़ाने के निर्देश

(पृष्ठ एक का शेष) रूप से कोविड मरीजों से बात करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि दुकानों, कार्यालयों, होटलों और आम जनता को कवर करने के लिए तथा राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों का कड़ाई से पालन करने के लिए लोगों को जागरूक करने के लिए नो मास्क-नो सर्विस विषय पर बड़े पैमाने पर सूचना शिक्षा और प्रचार अभियान शुरू किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि जिले में धार्मिक स्थलों और तीर्थों पर जाने वाले तीर्थयात्रियों को कोविड मापदण्डों के बारे में जागरूक करने के लिए निरंतर अपील और जागरूकता अभियान चलाया जाना चाहिए। श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि मेडिकल कॉलेज हमीरपुर में ऑक्सीजन प्लांट को जल्द से जल्द स्थापित किया जाना चाहिए और किसी भी आपातकाल स्थिति से निपटने के लिए बिस्तरों की क्षमता बढ़ाई जानी चाहिए। लोगों को विभिन्न सामाजिक समारोहों जैसे विवाह, मुंडन और कथा आदि के दौरान अधिक भीड़ वाले स्थानों में न जाने से बचने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। कोविड रोगियों के लिए बिस्तरों की क्षमता बढ़ाने के प्रयास किए जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि विशेष रूप से इनडोर कार्यक्रमों का आयोजन इस वायरस के तीव्र प्रसार का कारण बन रहा है। जिला प्रशासन को इस तरह के आयोजन करने से बचने के लिए लोगों को प्रेरित करना चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि होम क्वारंटीन में रह रहे वृद्धजनों और गम्भीर बीमारी से ग्रस्त कोविड रोगियों के स्वास्थ्य मापदंडों की नियमित निगरानी सुनिश्चित की जानी चाहिए।

जिले में संभावित सूखे से निपटने के लिए तैयार की गई योजनाओं की समीक्षा करते हुए, मुख्यमंत्री ने कहा कि जिले में वर्षा की कमी के कारण उत्पन्न स्थिति से निपटने के लिए सभी संभव उपाय किए जाने चाहिए। जल स्रोतों के जीर्णोद्धार पर विशेष बल देने और लोगों को पानी का अनुकूल उपयोग सुनिश्चित करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने जिला प्रशासन द्वारा विकसित हिम रेड क्रॉस मोबाइल ऐप का भी शुभारम्भ किया।

कोरोना के खिलाफ सरकार ने अपनाई...

(पृष्ठ एक का शेष) सकते हैं जब हम सामान्य बुखार, खांसी, सांस लेने में असुविधा होने या कोई अन्य लक्षण दिखे तो तत्काल चिकित्सक से संपर्क करें। लोगों की सुविधा के लिए ई-संजीवनी सुविधा शुरू की गई है। लोग ई-संजीवनी के माध्यम से डॉक्टरों से परामर्श ले सकते हैं। प्रदेश सरकार राज्य में कोविड-19 मरीजों की टेस्टिंग और उपचार का कड़ाई से पालन कर रही है। कोविड मरीजों के बेहतर उपचार के लिए अस्पतालों में आवश्यक दवाओं, ऑक्सीजन की सुविधा जैसी सामग्री के पर्याप्त भंडार सुनिश्चित कर रही है। कोविड-19 के मरीजों और उनके परिजनों के साथ समन्वय स्थापित कर उन्हें आवश्यक दवाओं के साथ पल्स ऑक्सीमीटर, हैंड सैनिटाइजर जैसी सुविधाएं उपलब्ध करवाई जा रही हैं। सरकार ने शहरी निकायों के प्रतिनिधियों से इस संकट में इस समय में कोरोना मरीजों के परिवारों के साथ निरंतर संपर्क स्थापित करने का आग्रह किया है ताकि समय पर जरूरतमंदों को सहायता प्रदान की जाए और लोगों को कोरोना वैक्सीन लगवाने के लिए प्रेरित किया जाए। होम आइसोलेशन में रह रहे कोविड-19 के रोगियों को बेहतर उपचार सुविधा के लिए खंड स्तर पर मोबाइल टीमें गठित करने का निर्णय लिया गया है। गंभीर रूप से बीमार रोगियों को बड़े अस्पतालों में स्थानांतरित करने के लिए विशेष वाहन उपलब्ध करवाया जाएगा। कोविड मामलों की निगरानी के लिए प्रत्येक मेडिकल कॉलेज में वरिष्ठ चिकित्सक की अगुवाई में समर्पित टीम तैनात की जाएगी। होम आइसोलेशन में रह रहे लोगों को बेहतर सुविधा प्रदान करने के साथ सरकार उन्हें न्यूट्रीशन किट भी प्रदान करेगी।

इसके अतिरिक्त कोरोना संक्रमित मरीजों की देखभाल में निरंतर सेवारत प्रदेश के फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं जैसे कि वार्ड सिस्टर्ज, स्टाफ नर्सों, वार्ड ब्यॉज, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों और आशा कार्यकर्ताओं आदि ऐसे तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी के लिए 1500 रुपये प्रति माह की दर से अनुग्रह अनुदान प्रदान किया जाएगा। इसके साथ जो आउटसोर्स कर्मचारी इस महामारी के दौरान अपनी सेवाएं दे रहे हैं, उन्हें प्रति शिफ्ट 200 रुपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाएगी। प्रदेश द्वारा कोविड-19 के प्रबंधन के प्रभावी प्रयासों के कारण हिमाचल की अन्य राज्यों की तुलना में स्थिति बेहतर है। परन्तु फिर भी इस महामारी पर अंकुश लगाने के लिए आम जनता को भी सतर्क रहना होगा क्योंकि इलाज से परहेज भला है।

एकांतवास मरीजों की सुविधा के लिए जन प्रतिनिधि करें सहयोग

(पृष्ठ एक का शेष) करने के लिए उचित कदम उठाने चाहिए कि प्रवासी मजदूरों को किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े और उन्हें प्रदेश में ही रुकने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

श्री जय राम ठाकुर ने जन प्रतिनिधियों से लोगों को टीकाकरण के लिए आगे आने के लिए प्रेरित करने को कहा। उन्होंने कहा कि वृद्धजन और दिव्यांगों को टीकाकरण केन्द्रों तक पहुंचने में सहायता प्रदान की जानी चाहिए ताकि उन्हें कोविड-19 की खुराक समय पर दी जा सके। चयनित प्रतिनिधियों को सम्बन्धित क्षेत्र के लोगों को टीकाकरण से जुड़ी भ्रांतियों के बारे में शिक्षित करना चाहिए और गरीब और जरूरतमंदों को फेस मास्क, हैंड सेनिटाइजर और फूड किट्स वितरित करने के लिए आगे आना चाहिए। उन्होंने कहा कि संक्रमण से सफाई कर्मचारियों का बचाव सुनिश्चित करने के लिए उचित सुरक्षा उपकरण उपलब्ध करवाने जाने चाहिए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य के औद्योगिक क्षेत्रों में बेहतर निगरानी सुनिश्चित करने के लिए उचित कदम उठाए जाने चाहिए ताकि प्रवासी मजदूरों को संक्रमण से बचाया जा सके। शहरों और नगर निगमों की नियमित सेनिटाइजेशन करने के अलावा यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए सामाजिक कार्यक्रमों में 50 से अधिक लोग शामिल न हों। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग को कोविड-19 संक्रमित मरीजों की जानकारी पार्षदों को उपलब्ध करवाने को कहा ताकि वे संक्रमितों के परिवारों से सम्पर्क कर सकें और अपने स्तर पर सम्बन्धित क्षेत्रों के कोविड-19 मरीजों पर निगरानी रख सकें।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि सभी चयनित प्रतिनिधियों का कर्त्तव्य है कि वे अपने क्षेत्र के लोगों की भलाई और स्वास्थ्य सम्बन्धी आवश्यकताओं पर ध्यान दें। इस बार कोरोना महामारी न केवल अधिक तीव्र गति से फैल रही है बल्कि और अधिक जानलेवा बन गई है। उन्होंने कहा कि पिछले दो महीनों में कोविड के मामलों और मृत्यु दर में तीव्र वृद्धि हुई है। केवल पिछले दो महीनों में ही 250 लोगों की मृत्यु दर्ज की गई है। प्रदेश सरकार ने इस संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए कुछ कठोर निर्णय भी लिए हैं। उन्होंने कहा कि सरकार ने प्रदेश के सभी बड़े मंदिरों में श्रद्धालुओं के आने पर रोक लगा दी है और आज से इन मंदिरों में केवल पूजा-अर्चना की अनुमति होगी। उन्होंने कहा कि सरकार ने शनिवार को सभी कार्यालयों के कर्मचारियों को घर से कार्य करने के निर्देश दिए हैं। बसें 50 प्रतिशत क्षमता के साथ चलेंगी और सभी धार्मिक, सामाजिक और अन्य समारोहों में केवल 50 लोगों की उपस्थिति की अनुमति होगी। उन्होंने कहा कि सभी चयनित प्रतिनिधियों का कर्त्तव्य है कि वे सरकार द्वारा समय-समय पर जारी की गई मानक संचालन प्रक्रियाओं और दिशा-निर्देशों का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार नगर निगमों को सूचना, शिक्षा और प्रचार सामग्री उपलब्ध करवाएगी ताकि इस सामग्री को लोगों को वायरस को रोकने के लिए शिक्षित करने और साथ ही लोगों को टीकाकरण के प्रति जागरूक करने में उपयोग किया जा सके।

उन्होंने कहा कि शहरी स्थानीय निकायों के प्रतिनिधियों को कोविड-19 पॉजीटिव मरीजों को काढ़ा, च्यवनप्राश, फल और अन्य आवश्यक सामग्री उपलब्ध करवानी चाहिए। यह न केवल उनकी सहायता करेगा, बल्कि इस वायरस से प्रभावशाली तरीके से लड़ने के लिए उनके भीतर आत्मविश्वास भी पैदा करेगा।

शहरी विकास मंत्री श्री सुरेश भारद्वाज ने कहा कि सभी शहरी स्थानीय निकायों के प्रतिनिधि होम आइसोलेशन में रखे गए लोगों की सहायता करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

उन्होंने कहा कि नगर निगम के सामुदायिक केन्द्रों को टीकाकरण के

दवाइयों व ऑक्सीजनयुक्त बिस्तरों

(पृष्ठ एक का शेष) प्रतिनिधियों की सहभागिता बढ़ाना बहुत आवश्यक है और जन जागरूकता से ही वायरस की चेन को तोड़ा जा सकता है। श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि होम आइसोलेशन में कोविड मरीजों के लिए समर्पित हेल्पलाइन के साथ-साथ ई-संजीवनी और दूरभाष नम्बर 104 के इस्तेमाल को प्रोत्साहित किया जा रहा है। उन्होंने होम आइसोलेशन में कोविड मरीजों की सहायता और परामर्श के लिए चिकित्सकों को उनसे सम्पर्क करने के निर्देश भी दिए।

सचिव स्वास्थ्य अमिताभ अवस्थी ने प्रदेश में कोविड-19 की स्थिति तथा टीकाकरण अभियान की प्रगति के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

मुख्य सचिव अनिल खाची, पुलिस महानिदेशक संजय कुंडू, अतिरिक्त मुख्य सचिव आर.डी. धीमान एवं जे.सी. शर्मा, मुख्यमंत्री के सलाहकार एवं प्रधान निजी सचिव डॉ. आर. एन. बत्ता, मिशन निदेशक एनएचएम डॉ. निपुण जिंदल तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित थे।

BEFORE THE COURT OF THE DR. (MAJ.) AVININDER KUMAR, HPAS, MARRIAGE OFFICER-CIM-SUB-DIVISIONAL MAGISTRATE KALPA AT R/PEO H.P.

NOTICE UNDER SECTION 15 OF THE SPECIAL MARRIAGE ACT.

Whereas Sh. Devinder Singh son of Sh. Megh Singh aged 36 years (D.O.B.28.10.1985) R/o V&PO Kothi, Tehsil Kalpa, Distt. Kinnaur, H.P and Prem Kumari D/0 Sh. Prem Singh aged 32 years (DOB 20.09.1989) R/o Village & PO Kothi, Tehsil Kalpa, Distt. Shimla, H.P. have filed an application for registration of their marriage which was solemnized on 12.11.2017 at Village Kothi, Tehsil Kalpa Distt. Kinnaur H.P. and they have been living as husband and wife ever since then. Notice is hereby given to all concerned and General Public to this effect that if anybody has got any objection regarding the registration of this marriage, they should file their written objection and should appear personally or through their authorized agents before this Court within a period on 30 days from the date of issue of this notice. After expiry of the said period, the order for registration of said marriage shall be issued by this Court and later on, no objection shall be heard.

Issued under my hand and seal of this Court on this 8th day of April, 2021.

Sd/- Dr. (Maj.) Avaninder Kumar, HPAS,
Marriage Officer-cum-SDM Kalpa at
Reckong Peo, Distt. Kinnaur.H.P

डाक पंजीकरण संख्या : एच.पी./42/एस.एम.एल. 2021-2023 साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर जिला ऊना के बचत भवन में कोविड-19 और सूखे से उत्पन्न स्थिति की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए।

सरकार द्वारा जारी मानक संचालन प्रक्रियाओं का सख्ती से पालन करें : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों जिला ऊना के बचत भवन में कोविड-19 और सूखे जैसी स्थिति की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की। उन्होंने मुख्यमंत्री की घोषणाओं के कार्यान्वयन की प्रगति की भी समीक्षा की। उन्होंने पंचायती राज संस्थाओं और शहरी स्थानीय निकायों के चुने हुए प्रतिनिधियों से लोगों को फेस मास्क, सामाजिक दूरी बनाए रखने और प्रदेश सरकार द्वारा जारी की गई मानक संचालन प्रक्रियाओं और सामाजिक एवं धार्मिक समारोहों के दौरान अनुमति से अधिक संख्या में एकत्रित न होने के दिशा-निर्देशों का सख्ती से पालन करने को कहा। उन्होंने कहा कि वे राज्य के स्वास्थ्य विभाग और कोविड की पॉजिटिव रिपोर्ट के कारण होम आइसोलेशन में रह रहे लोगों के मध्य एक सेतु के रूप में कार्य करके महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। उन्होंने नागरिक संगठनों से भी आग्रह किया कि वे कोविड-19 के लिए स्वयं की जांच करवाने के लिए लोगों को आगे आने के लिए प्रेरित करें।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि इन प्रतिनिधियों को लोगों को टीकाकरण के लिए भी प्रेरित करना चाहिए क्योंकि

ऊना में कोविड और सूखे से उत्पन्न स्थिति की समीक्षा बैठक

यह उनकी भलाई और सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने धार्मिक संगठन के प्रतिनिधियों से भी आग्रह किया कि वे विभिन्न सामाजिक समारोहों जैसे विवाह आदि में बड़ी संख्या में सभाओं में शामिल न होने के लिए लोगों को प्रेरित करें।

उन्होंने जिले में सूखे से उत्पन्न स्थिति की समीक्षा करते हुए कहा कि विभिन्न जल आपूर्ति योजनाओं को जोड़ने के प्रयास के अलावा विभिन्न गांवों में पानी की आपूर्ति और पानी की कमी वाले क्षेत्रों की बस्तियों को जलापूर्ति की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि पूरे राज्य में सर्दियों के मौसम में बहुत कम बारिश और बर्फ पड़ी है, जिससे जल स्रोतों पर प्रभाव पड़ा है और पानी की आपूर्ति बाधित हुई है।

मुख्यमंत्री की घोषणाओं में प्रगति की समीक्षा करते हुए, उन्होंने अधिकारियों को जिले के विभिन्न निर्वाचन क्षेत्रों में उनके द्वारा की गई सभी घोषणाओं को निर्धारित समय पर पूरा करना सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

ग्रामीण विकास और पंचायती राज मंत्री श्री वीरेंद्र कंवर ने कहा कि जिले में सूखे की स्थिति के कारण यहां के कृषि और अन्य कार्यों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने मुख्यमंत्री से जिले में कार्यान्वित की जा रही परियोजनाओं को जल्द पूरा करने के लिए पर्याप्त धनराशि प्रदान करने का भी आग्रह किया।

उपायुक्त ऊना श्री राघव शर्मा ने मुख्यमंत्री और अन्य उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि सीमावर्ती राज्य होने के कारण यहां के लोगों का प्रतिदिन पंजाब आना-जाना लगा रहता है जो चिन्ता का विषय है।

मुख्य चिकित्सा अधिकारी ऊना ने जिले में कोविड की स्थिति पर विस्तार में प्रस्तुति दी।

राज्य वित्तायोग के अध्यक्ष सत्तपाल सिंह सत्ती, विधायक राजेश ठाकुर सहित कई वरिष्ठ अधिकारियों ने बैठक में भाग लिया।

पक्षियों पर संकलित पुस्तक की सराहना

राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने गत दिनों राजभवन में प्रदेश के महानिदेशक कारावास सोमेश गोयल द्वारा संकलित कॉफी टेबल बुक 'हिमाचल बर्ड्सः अ विजुअल ट्रीट' का विमोचन किया।

राज्यपाल ने हिमाचल प्रदेश के पक्षियों पर कॉफी टेबल बुक के लिए सोमेश गोयल के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि पुलिस विभाग में कार्य करते हुए इतनी अच्छी तस्वीरें लेना आसान नहीं हैं तथा उनका फोटोग्राफी का जुनून प्रशंसनीय है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस कॉफी टेबल बुक से स्थानीय समुदाय, नीति निर्माता और प्रशासक हिमाचल प्रदेश के समृद्ध और विविधतापूर्ण पक्षियों को संरक्षित करने की दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित होंगे। उन्होंने कहा कि यह आश्चर्यजनक है कि भारत में देखे जाने वाली पक्षियों की सभी प्रजातियों में से 50 प्रतिशत से अधिक अब हिमाचल प्रदेश में भी देखे जा चुके हैं। उन्होंने कहा कि हिमालयी क्षेत्र तीतर प्रजाति के केन्द्र है और हिमाचल प्रदेश कई फिजेन्ट प्रजातियों की संरक्षण के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने हिमालयन मोनाल जैसी विभिन्न तीतर प्रजातियों की कुछ दुर्लभ तस्वीरों की प्रशंसा की। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सोमेश गोयल भविष्य में भी पर्यावरण के क्षेत्र में कार्य जारी रखेंगे।

राज्यपाल ने किया सोमेश गोयल की कॉफी टेबल बुक का विमोचन

श्री गोयल ने कॉफी-टेबल बुक जारी करने के लिए राज्यपाल का धन्यवाद करते हुए कहा कि कठिन परिश्रम के बाद हमने हिमाचल प्रदेश में 672 पक्षियों और 31 महत्वपूर्ण पक्षी क्षेत्रों की एक विश्वसनीय सूची तैयार की है। हिमाचल प्रदेश में देखे जाने वाले पक्षियों की संख्या भारत में पाई जाने वाली प्रजातियों से आधी है। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश के स्वर्ण जयंती वर्ष में इस पुस्तक का संकलन, लेखन और संपादन उनके लिए एक विशेष अनुभव रहा है और उन्हें आशा है कि यह पुस्तक सभी को पसंद आएगी।

राज्यपाल के सचिव राकेश कंवर भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने किया थानाकलां में गौ अभयारण्य का दौरा

मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों ऊना के थानाकलां में गौ अभयारण्य का दौरा किया। यह अभयारण्य 7.06 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित किया गया है। कुल 300 बेसहारा पशुओं को रखने की क्षमता वाले इस अभयारण्य में वर्तमान में 279 बेसहारा पशुओं को आश्रय दिया जा रहा है। ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज और पशुपालन मंत्री श्री वीरेन्द्र कंवर, स्वास्थ्य सचिव अमिताभ अवस्थी, उपायुक्त ऊना राघव शर्मा, पुलिस अधीक्षक ऊना अर्चित सेन इस अवसर पर उपस्थित थे।

कोविड से उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने में सरकार सक्षम

कोरोना वायरस के संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए प्रदेश सरकार लोगों को शिक्षित करने के लिए भरसक प्रयास कर रही है ताकि वे फेस मास्क पहनने और उचित पारस्परिक दूरी बनाए रखने जैसे सुरक्षा उपायों को नियमित रूप से अपनाएं। मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने गत दिनों सोलन जिले के ट्रेड सेंटर बद्दी में हितधारकों के साथ एक समीक्षा बैठक को संबोधित करते हुए यह बात कही।

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि जब राज्य में वायरस के पहले मामले का पता चला था तब यहां केवल 50 वेंटिलेटर थे, लेकिन आज 600 से अधिक वेंटिलेटर उपलब्ध हैं। राज्य के पास पर्याप्त संख्या में पीपीई किट्स, फेस मास्क और हैंड सैनिटाइजर उपलब्ध हैं और हम आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए बेहतर तरीके से तैयार हैं। उन्होंने कहा कि सभी हितधारकों जैसे कि गैर सरकारी संगठनों, औद्योगिक संघों, पंचायती राज संस्थाओं और शहरी स्थानीय निकायों के प्रतिनिधियों, महिला मंडलों, युवक मंडलों ने इस महामारी से लड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह समय की जरूरत है कि सभी हितधारक एक बार फिर इस महामारी से लड़ने के लिए उसी समर्पण और प्रतिबद्धता के साथ काम करें। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार लॉकडाउन के पक्ष में नहीं है क्योंकि इससे अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और जनता के बीच भी तनाव पैदा होता है।

मुख्यमंत्री ने बद्दी में हितधारकों के साथ कोविड-19 की स्थिति की समीक्षा की

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर पंचायती राज संस्थाओं के निर्वाचित प्रतिनिधियों, शहरी स्थानीय निकायों और उद्योगों के प्रतिनिधियों के साथ भी बातचीत की और उनसे स्वास्थ्य देखभाल कर्मियों और होम आइसोलेशन के रोगियों के साथ बेहतर समन्वय रखने का आग्रह किया।

इससे पहले मुख्यमंत्री ने नालागढ़ में प्री-फैब्रिकेटेड मेकशिफ्ट कोविड-19 अस्पताल का दौरा भी किया।

स्वास्थ्य मंत्री डा. राजीव सैजल ने कहा कि इस महामारी ने हम सभी को सामूहिक रूप से लड़ने के लिए मजबूर किया है। स्वास्थ्य सचिव श्री अमिताभ अवस्थी ने कहा कि राज्य आज एक कठिन दौर से गुजर रहा है, जिसका हमने मिलकर सामना करना है।

उपायुक्त सोलन के.सी. चमन ने जिले में कोविड-19 स्थिति पर विस्तृत प्रस्तुति दी। उन्होंने कहा कि जिले में लोगों को लगभग 82,027 खुराकें दी जा चुकी हैं। औद्योगिक इकाइयों के कर्मचारियों और श्रमिकों के टीकाकरण के लिए विशेष अभियान शुरू किया गया है। होम आइसोलेशन में मरीजों की उचित देखभाल की जा रही है। उन्होंने कहा कि होम आइसोलेशन में मरीजों पर नजर रखने के लिए टीमों का गठन किया गया है। सांसद और राज्य भाजपा अध्यक्ष सुरेश कश्यप सहित अन्य गणमान्य लोग भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

होम आइसोलेशन में मरीजों की स्वास्थ्य मापदण्डों के अनुसार हो निगरानी

राज्य में होम आइसोलेशन तंत्र को सुदृढ़ करने के अलावा कोविड-19 मरीजों का पता लगाने के लिए परीक्षण संख्या बढ़ाने पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर ने यह बात गत दिनों सोलन जिला के नालागढ़ में सिरमौर जिला की कोविड-19 की वर्चुअली समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए कही।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में 90 प्रतिशत से अधिक कोविड-19 मरीज होम आइसोलेशन में हैं। इसलिए होम आइसोलेशन तंत्र को सुदृढ़ करने पर बल दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि इसी प्रकार चिकित्सकों को भी होम आइसोलेशन में रह रहे मरीजों का उचित उपचार और नियमित निगरानी सुनिश्चित करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि होम आइसोलेशन के अन्तर्गत घरों में रहने वाले मरीजों की स्वास्थ्य विभाग को स्वास्थ्य मापदण्ड के अनुसार नियमित निगरानी करनी चाहिए। पंचायती राज संस्थाओं के निर्वाचित प्रतिनिधियों को भी होम आइसोलेशन के अन्तर्गत रहने वाले मरीजों की स्वास्थ्य स्थिति पर नजर रखनी चाहिए।

जिला सिरमौर की कोविड-19 की वर्चुअल समीक्षा बैठक

श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि काला अम्ब और पांवटा साहिब क्षेत्रों के उद्योगपत्तियों को उनकी इकाइयों में कोरोना वायरस के प्रसार को रोकने के लिए राज्य सरकार द्वारा जारी की गई मानक संचालन प्रक्रिया और दिशा-निर्देशों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि कोविड-19 पॉजीटिव मरीजों के सम्पर्कों का पता लगाने पर ध्यान दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि इससे राज्य में कोविड-19 मरीजों का समय पर पता लगाने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि जिले में ऑक्सीजनयुक्त बिस्तरों की क्षमता को भी बढ़ाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि दुकानदारों को कोरोना वायरस को फैलने से रोकने के लिए नो मास्क, नो सर्विस नीति का कड़ाई से पालन करना चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि जिला प्रशासन को विवाह समारोह जैसे सामाजिक कार्यों के लिए निर्धारित अधिकतम सीमा का सख्ती से पालन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। मन्दिरों और अन्य धार्मिक स्थानों पर भी श्रद्धालुओं के लिए मानक संचालन प्रक्रिया का प्रभावी कार्यान्यवन सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

जय राम ठाकुर ने कहा कि अस्पतालों में भर्ती कोविड-19 मरीजों की स्वास्थ्य मापदण्डों के अनुसार जाँच के लिए वरिष्ठ चिकित्सकों को भी नियमित रूप से जाँच करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि मरीजों को उनकी बीमारी और दवा के बारे में उचित परामर्श दिया जाना चाहिए। पुलिस को भी यह सुनिश्चित करना चाहिए कि लोग सामाजिक दूरी और मास्क का प्रयोग करें।

उपायुक्त सिरमौर डॉ. आर.के. परूथी ने नाहन से वर्चुअली बैठक में भाग लिया। उन्होंने कहा कि महामारी के प्रसार को रोकने के लिए अपनाई जाने वाली सावधानियों के बारे में लोगों को जागरूक व शिक्षित करने के लिए जिला में प्रभावी आईईसी अभियान शुरू किया गया है।

प्रकाशक एवं प्रधान सम्पादकः हरबंस सिंह ब्रसकोन, निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हि.प्र. शिमला-171002, मुद्रकः रीमा कश्यप, नियंत्रक, मुद्रण तथा लेखन सामग्री विभाग, शिमला-171005, फोनः 2830381—PBX.A29,वरिष्ठ सम्पादकः वेद प्रकाश, सम्पादकः नर्बदा कंवर
कार्यालयः हि.प्र. मुद्रणालय परिसर, शिमला-171005, फोनः 2633145 व फैक्सः 2830374, ई-मेलः girirajhp@gmail.com. OR girirajweekly 1978 @yahoo.co. in प्राप्ति स्थानः गिरिराज कार्यालय। (गिरिराज साप्ताहिक में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचारों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं)